B, MISHRA GAPSHAP VIVEK (HINDI) IGNCA

गपशाप विवेक

श्री बलदेव मिश्र

गपशप विवेक

लेखक

पं० श्री बलदेवमिश्र

ज्यौतिषाचार्य

प्रकाशक

हिन्दी भवन

इलाहाबाद

१९५४]　　प्रथम संस्करण　　[मूल्य १॥)

प्रकाशक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
हिन्दी-भवन
३१२ रानी मंडी,
इलाहाबाद ३

मुद्रक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
कमल मुद्रणालय
३१२ रानी मंडी,
इलाहाबाद ३

प्राक्कथन

आधुनिक युगमें जखन नवयुवकलोकनि लोकाचार एवं शिष्टाचारक महत्त्व बिसरि रहल छथि प्रयोजन छलैक एक एहि प्रकारक शिक्षाप्रद एवं मनोरञ्जक लेखक जाहि द्वारा उपनिषद्क प्राचीन सूक्ति 'तमसोमा ज्योतिर्गमय'क भाव लघुक्षेत्रमें चरितार्थ भए सकए ।

पण्डित श्रीबलदेवमिश्रक 'गपशप विवेक' स्थालीपुलाकन्यायेन हम पढ़लहुँ । हम बुझैछी जे ई पुस्तिका उक्त प्रयोजनक बहुत अंशमें पूर्ति करत । वचनक विन्यास, परिस्थिति तथा श्रोता एवं वक्ताक अवस्थानुसार कोन प्रकारेँ होएबाक चाही एकर सविस्तर दिग्दर्शन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करैत एहि पुस्तिकामें कराओल गेल अछि । लेखक महोदय अपन प्रचुर पाण्डित्य विस्तृत एवं प्रभूत अनुभूतिक सुचारुरूपें सरल, सरस तथा मधुर भाषामें अनायास प्रयोग कए पाठक लोकनिक महान् उपकार कएलन्हि अछि ।

उपनिषद्क उक्त सूक्तिक प्रयोग हम जानिबूझिक कएल अछि कारण जे आब ओहि त्रिकालदर्शी द्रष्टा लोकनिक अभाव किछु अंशमें आधुनिक कालक अनुभवशील विद्वाने लोकनि पूर्ण करताह । 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' भारविक ई कथन ककरा ज्ञात नहिं अछि ।

आशा अछि पाठक लोकनिक मध्य ई पुस्तिका रुचिकर एवं हितकर अवश्य सिद्ध होएत । साहित्यमें एही प्रकारक लेखकें हम सत्साहित्यमें गणना करैछी, ओनात 'भिन्नरुचिर्हि लोकः' ।

सुधाकरझा शास्त्री
मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय

भूमिका

गपशपक अर्थ थिक जे कोनप्रकार सँ भद्रलोकक संग आलाप कैल जाय। गपशपक अर्थ थिक परस्पर आलाप। ई आलाप सुखद, दुःखद, उपकारक, अपकारक, मैत्री करौनिहार तथा विवाद करौनिहार, उत्साहप्रद तथा अनुत्साह करौनिहार सब भैसकैत अछि, किन्तु सभ्यतोचित सुन्दर 'गपशप' वैह थिक जाहिसँ लाभ हो हानि नहिं, प्रीति हो अप्रीति नहिं, मित्रता बढ़ै, विराग तँ कदाचित् नहिं हो, यैह संक्षेपमें सभ्यतोचित सुन्दर गपशप थिक। एही विषय सबकैं भिन्न-भिन्न परिस्थितिमें भिन्न-भिन्न लोकक संग कोना कैं रखबाक थिक तकरा विस्तारपूर्वक उदाहरणक संग बुझाएब एहि पुस्तकक उद्देश्य थिक। लोक गपशप करैत छथि और नियमहुकैं नहिं पुस्तकसँ तँ प्रकृतिसँ तथा अनुभवसँ जनितहि छथि। ताही नियम और दृष्टान्त सबकैं स्वबुद्ध्यनुसार एकत्रित कैल गेल अछि। संभव थिक जे लोक एहि पुस्तककैं पढ़लासँ अपन किछु अनुभवकै एकत्रित कैल पाबथि और जँ ककरहु हेतु ई सब विषय नवीन होइन्हि तँ ताहिसँ शिक्षाग्रहण करथि। किछु लोककै इहो प्रमोद भेटतन्हि जे एहनो साधारण विषय सब पर पुस्तक बनै लागल अछि। युरोपमें तँ एहेन कोनो विषय नहिं जाहि पर पुस्तक नहिं होइक।

ई विषय एक प्रकार सँ अत्यन्त उपयोगी एहि निमित्त थिक जे एहिसँ मनुष्य मात्रकैं सम्बन्ध छन्हि, एहेन केओ मनुष्य नहिं छथि जे गपशप नहिं करैत होथि।

द्वितीय लाभ ई छैक जे एकर अनुसार चललासँ गपशपक सफलता प्राप्त भै सकैत छैक।

ई बात स्मरणीय थिक जे गपशपक सभ्यताक रत्ता वैह कै सकैत छथि जे स्वयं सभ्य होथि तैंहेतु एहि सब नियमक अनुसार आचरण कैलासँ लोक स्वयं सभ्य भै सकैत छथि। केवल आलापमें नहिं हृदयसँ सभ्य भैसकैत छथि। गपशपमें सभ्यताक पाठ एक प्रकारैं अहिंसाक पाठ थिक। मनुष्यमें अहिंसावृत्तिक विना पूर्ण सभ्यता आबिए नहिं सकैत अछि तैंहेतु ई पुस्तक एक शिक्षाक कार्य कै सकैत अछि। एहि लाभ सबहिक अतिरिक्त एहि पुस्तकक द्वारा लोकक मनोरञ्जनो भैसकैत ~~छन्हि~~ कारण जे अनेक देशक अनेक लोकक तथा अनेक ग्रन्थक विषय एहिमें संगृहीत अछि। प्रमाणक संनिवेश एहि हेतु कैल गेल अछि जे वर्णित विषयमें लोकक विश्वास होइन्हि संगहि लोककैं एहि सुभाषित सबहिक मूलरूपैं अभ्यास भै जाइन्हि। यद्यपि सभ्यता सब देशमें सब लोकसँ मान्य थिक तथापि दृष्टि यैह राखल गेल जे भारतक सभ्यताक संस्कार पढ़निहारक मन पर पड़ैन्हि तैं हेतु अधिकतर प्रमाण संस्कृत-साहित्यक मान्य पुस्तकसँ लेल गेल अछि।

ई विषय एहेन विशद और लोकप्रिय अछि जे एहि विषयमें बहुत किछु लिखल जा सकैत अछि तथापि संक्षेप में लेखकक विद्या और अनुभवक सार यैह थिक।

हमर निवेदन कैला पर पटना विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक प्रधानाध्यापक डा० श्री सुधाकरझा महोदय एहि पुस्तकक प्राक्कथन लिखि जे हमर उत्साह बढ़ौने छथि तदर्थ हम हुनका हृदयसँ धन्यवाद दैत छिअन्हि। वास्तवमें ई पुस्तक ओतेक प्रशंसाक योग्य नहिं अछि। ई हुनक महत्ता थिकन्हि जे तादृश भाव व्यक्त कैने छथि।

२३-८-'५४ श्रीबलदेवमिश्र

सूची

गपशप विवेक

गपशप

दूइ व्यक्ति वा अनेक व्यक्ति एकठाम बैसिकै परस्पर आलाप सँ जे आनन्दानुभव करैत छथि ओ आलाप गपशप कहबैत अछि, ई गपशप जाहिसँ अरुचिकर नहिंहो तथा एहिसँ कोनो विशेष कार्यक साधन भैसकै तदर्थ किछु नियमक अनुवर्तन करब आवश्यक छैक तैंहेतु एहि गपशप में पालनीय किछु नियमक वर्णन विस्तारक संग कैल जाएत।

हुनके लोकनिक गपशप रुचिकर होएतैन्हि जे स्वयं सभ्य होएताह। सभ्य लोकक ई प्रथम कर्त्तव्य होइत छन्हि जे हुनक वाणी हुनक कार्य तथा हुनक व्यवहार सँ ककरहु कनेको कष्ट नहिं पहुँचन्हि। जँ दैवदोषैं कदाचित् हुनक द्वारा ककरहु कोनो कष्ट पहुँचि जाइत छन्हि तँ ओहि कष्ट पौनिहार व्यक्ति सँ विशेष कष्ट क अनुभव ओ स्वयं करैत छथि, ओ स्वयं कष्ट सहन करबाले सन्नद्ध रहैत छथि परञ्च एहि विषय दिशि सूक्ष्मदृष्टि रखैत छथिजे हुनक द्वारा दोसराकैं नहिं कोनो दुःख होइन्हि।

हुनक विश्वास रहैत छन्हि जे संसारमें सौमें पाँच एहने आकस्मिक दुःख लोककैं प्राप्त होइत छन्हि जाहिमें ककरो साध्य नहिं छैक ओ दैवेच्छासँ संप्राप्त होइत छैक और तकर सहन करवे विधेय होइत छैक परञ्च सौमें पञ्चानवे दुःख एहिप्रकारक होइत छैक जकर निवारण परस्परक

सद्व्यवहारसँ भै सकैत छैक तैंहेतु सभ्यलोक एहि दिशि दृष्टि रखैत छथि जाहिसँ हुनक व्यवहारसँ लोकक क्लेश दूर होइन्हि।

ओ सर्वदा सत्य बजैत छथि किन्तु यदि ओ सत्य अप्रिय होइक तँ ताहूसँ अपनाकैं बचबैत छथि, मानि लिअ जे क्यो कनाह छथि तँ तनिकाँ कनहा कहब तँ असत्य नहिं थिक किन्तु से कहलासँ ताहि व्यक्तिक मनमें खेद होइत छन्हि तैं हेतु हुनका कनहा नहिं कहि हुनका नामान्तरसँ संबोधन करैत छथीन्ह। हुनक स्मृतिपथमें सर्वदा निम्न-लिखित मनुक श्लोक जाग्रते रहैत छन्हिः—

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः॥

ओ कोखन एहनो सत्य कहवामें आगाँ-पाछाँ नहिं करैत छथि जकरा सुनिकै श्रोता वक्ताक विषय में संकोचक बोध करथि। छान्दोग्य उपनिषत्-में जाबाला सत्यकामक एक कथा छैक। सत्यकाम नामक एक नेना ब्रह्म-चारी बनवाक हेतु गौतमक आश्रममें गेलाह। गौतम हुनका पुछलथीन्ह जे अहाँ कोन गोत्रक थिकहुँ। बालक उत्तर देलथीन्ह जे हमरा बुझल नहिं अछि, हम मायसँ बूझिकै काल्हि अपनेकैं उत्तर देव। घर आबि मायकैं अपन जिज्ञासा कहलन्हि। माय उत्तर देलथिन्ह जे हमर युवा-वस्थामें जखन अहाँक जन्म भेल तखन हम कार्य में एतेक संलग्न रहैत छलहुँ जे अहाँक गोत्र जानि लेवाक ध्यान नहिं रहल। हमर नाम जाबाला थिक तैं अहाँ अपना कैं जाबाला-सत्यकाम कहाएव। प्रातःकाल जखन सत्यकाम पुनः ऋषिक आश्रम में अयलाह तँ ऋषिकैं अपन माइक उत्तर यथावत् कहलथीन्ह। ऋषि प्रसन्न भै हुनका ब्रह्मचारी बनौलन्हि। गौतम हुनका एतावन्मात्र उत्तर देलथीन्हः

"अवश्यं त्वं ब्राह्मणोऽसि नाब्राह्मण एवं वक्तुमर्हति" जँ सत्यकाम शुद्ध, सत्य मुनिसँ नहिं कहितथि तँ ऋषि हुनका ब्रह्मचारी नहिं बनबितथि। तँहेतु सभ्य व्यक्ति स्पष्ट सत्य कहबामें आगाँ-पाछाँ नहिं करैत छथि।

सत्यासत्य विवेक

सत्यासत्य-विवेक एक कठिन विषय थिक। यद्यपि अप्रिय सत्य कहब निषिद्ध कैल गेल अछि जैंरूपैं प्रियो असत्य हेय थिक तथापि अनेक समयमें एहि-संबन्धक निर्णय कठिन प्रतीत होइछ। पुराणमें कथा अछि जे एक मुनि जङ्गलमें तपस्या करैत छलाह। व्याधासँ त्रस्त एक हरिण मुनिक समीपहि दै पड़ाएल जाइत छल ताही समयमें व्याधा मुनिक लग उपस्थितभै पुछलकन्हि जे मृग कोन दिशि पड़ाएल अछि? मुनि उत्तर देबामें बड़ कष्ट बोध कैलन्हि, जँ सत्य कथा कहथीन्ह तँ हरिणक हत्या हेतैक नहिं कहैत छथीन्ह तँ असत्य कहल जाइत छन्हि तैं व्याधाकै उत्तर देलथीन्ह जे—जे इन्द्रिय देखैत अछि तकरा वाक्शक्ति नहिं छैक, और जे बजैत अछि से देखैत नहिं अछि तखन एकर उत्तर अहाँकैं के देत। सारांश ई भेल जे एहेन सत्य जाहिसँ दोसराक हानिक संभावना छैक नहिंऐ कहब उचित होइत छैक। सीता देवी जखन लङ्कामें हनुमान्‌जीसँ अशोकवाटिकामें वार्त्तालाप कैलन्हि तदुत्तर राक्षसी सब हुनका पुछलकन्हि जे हे सीते अहाँक सङ्ग लालमुँहवाला वानर जे वार्त्तालाप कैलक से के छल? तकर उत्तर सीता देवी देलथीन्ह जे कामरूप राक्षसक विषय में हमरा कोन ज्ञान अछि, अहीं लोकनि जनैतछी जे ई के थिक अथवा की करत सर्पक पैरक ज्ञान सर्पहिकैं

होइत छैक। इहो उत्तर हनुमानक परित्राणकैं दृष्टि में राखिए कें कैल-गेल अछि।

राम जखन अयोध्यासँ वनगमनक हेतु चललाह, रथक घोड़ा दौड़ल चल जाइत छल तखन दशरथ सुमन्तकैं कहल जे रथ कैं रोकू और रामजी सारथी सुमन्तकैं कहल जे खूबजोर सँ रथकैं हाँकू। राजा पुछताह जे हम अहाँ कैं रथ रोकै कहल से किऐक नहिं कैल तँ अहाँ उत्तर देवन्हि जे हम नहिं सुनल, रामक सुमन्तकैं एतादृश उपदेश एहिहेतु थिकन्हि जे एहि सँ राजा दशरथ और व्यामोहमें पड़ितथि और रथक रोकलासँ कुफले घटित होइतैक।

महाभारतक युद्धमें ई आवश्यक छलैक जे द्रोणक मृत्युक हेतु द्रोणक कानमें ई संवाद पहुँचन्हि जे अश्वत्थामा हुनक पुत्र मारल गेलाह और एतादृश संवादमें युधिष्ठिरक वाक्य श्रद्धेय छलन्हि तैं हेतु भगवान् कृष्णचन्द्र युधिष्ठिरकैं कहलथिन्ह जे अहाँ कहिऔक जे 'अश्वत्थामा-हतः' कारण जे ताही समयमें एक अश्वत्थामा नामक हाथीक मृत्यु भेल छलैक। युद्धिष्ठिर श्रीकृष्णक विचारानुसार 'अश्वत्थामा हतः' नरो वा कुञ्जरः' कहलथीन्ह। 'नरो वा कुञ्जरः' अपना दिशिसँ लगाय देलथीन्ह तैं असत्यभाषीक दोष लगलन्हि, कारणजे ओ जनैत छलाह जे अश्वत्थामा कुञ्जर मुइलछल, नर नहिं। केवल 'अश्वत्थामा हतः' कहने पापभागी नहिं होइतथि किन्तु 'नरो वा कुञ्जरः' लगौने दोषी भेलाह। पुराणमें लिखल गेल अछि 'गोब्राह्मणानां रक्षार्थमसत्यं वा वदेत्क्वचित्' गाय-ब्राह्मणक रक्षार्थ जे असत्य कहल जाइत अछि ओ देववाणी थिक।

राजसभामें 'अब्रुवन्विब्रुवन्वापि नरो भवति किल्विषी' एहिसँ असत्य

बजनिहार पापी तथा दण्डाई होइतछथि तैंहेतु सत्यासत्यनिर्णय एक बड़ कठिन विषय अछि। सारांश पर्यवसित ई होइत अछि जे सत्य ककरहु एहि निमित्त हठ नहिं करैत छन्हि जे हमरा कहिए दिय 'तैंहेतु यदि सत्यक ख्यापनसँ ककरो हानि संभावित होइक तादृश सत्य-ख्यापन नहिंऐ करब समुचित। हँ, यदि एतादृश अवस्था उपस्थित होइक जे विना सत्यक कहने उपाय नहिं छैक। यथा—न्यायालयमें जिरह भेला पर ताहि अवस्थामें सत्यक अपलापो करब दोष थिक। सारांश ई भेल जे हितसत्य वक्तव्य थिक। कहलो अछि "हितं मनोहारि च दुर्लभ वचः"। ठोस गपशपक प्रथम परीक्षा ई थिक जे ओ आलाप सत्यमूलक हो। असत्य गपशप उखड़ि जाइत अछि, श्रोता ताहि पर अश्रद्धा करैत छथि, और पुनः यदि ओ सत्यो बात कहैत छथि तथापि ताहिपर हुनक विश्वास नहिं होइत छन्हि। सत्यमें ई गुण छैक जे यदि क्षण भरिक हेतु ओ प्रीतिकर नहिंओ हो तथापि ओ अपन सौरभक त्याग नहिं करैत अछि। श्रोताकैं विशेष कारणवश गपशप अप्रिय भेनहु वक्तापर अश्रद्धा नहिं होइत छन्हि प्रत्युत श्रद्धा बढ़ि जाइत छन्हि।

असत्य सव दृष्टिसँ त्याज्य थिक। असत्य बजलासँ अधर्म, सुननिहारक मनमें अश्रद्धा और व्यवहार-क्षेत्र में काजक नाश कैनिहार होइतअछि तैंहेतु गपशप में सेह विषयकैं अनवाक थिक जे सत्य हो। हमरा लोकनिक शास्त्रकारो कहनेछथि 'सत्यपूतां वदेद्वाचम्', संसारमें सव अनर्थक जड़ि असत्ये थिक। सत्य व्यवहारमें दोषक संभावना नहिं रहैत अछि। एहन सुनल जाइत अछि जे यूनान देशक विख्यात विद्वान् अरिस्टोटलकैं कियो पुछलकन्हि जे असत्य बजलासँ की लाभ होइतछैक? ओ उत्तर देलथीन्ह जे लाभ तँ किछु नहिं होइत-

छैक किन्तु सत्य विषयहुपर लोकक अटल श्रद्धा नहिं रहैत छैक।

अनेक देशक लोक व्यवहार नहिं बिगड़ै एतदर्थ सत्यक रक्षा करैत छथि किन्तु भारतवर्षमें केवल व्यावहारिक दृष्टिअहिसँ नहिं प्रत्युत धार्मिक दृष्टिसँ सत्य सब अवस्थामें रक्षणीय थिक।

रामायणमें रामक विषयमें सीताजी बजैत छथि

दद्यान्न प्रतिगृह्णीयात् सत्यं ब्रूयान्नचानृतम्।
अपि जीवितहेतोर्हि रामः सत्यपराक्रमः॥

~~आयुक~~ हेतु सत्यपराक्रम राम मिथ्या नहिं बजैत छथि किन्तु सत्य बजैत छथि। भीष्म अपन प्रतिज्ञा रक्षाक हेतु गरजिकै बाजल छलाह—

परित्यजेयं त्रैलोक्यं राज्यं देवेषु वा पुनः।
यद्वाप्यधिकमेताभ्यां नतु सत्यं कथंचन॥

हम तीनू लोकक त्याग कै सकैतछी, देव लोकक राज्य त्याग कै सकैतछी अथवा एहि दूनूसँ अधिक सौख्यक त्याग कै सकैतछी किन्तु सत्यक त्याग नहिं कै सकैतछी एहि वाक्यसँ ई स्पष्ट अछि जे सत्यक रक्षा सर्वदा कर्त्तव्य थिक। अनेक लोक एहेन चतुर होइत छथि जे असत्य विषयहु कै खूब सुन्दर जकाँ अलंकृत कै ताहिरूपै उपपादन करैत छथि जाहिसँ ककरहु असत्यक भ्रम नहिं होइन्हि और सुनवामें बड़ सुहावन होइन्हि तथा एहि कलाक द्वारा ओ श्रोताकैं अपन दिशि आकर्षितो करैत छथि किन्तु ई छलक कार्य स्थायी नहिं होइत अछि और जखन श्रोताकैं असत्यक ज्ञान भै जाइत छन्हि तखन हुनका बड़ अश्रद्धा होइतछन्हि। लिखल अछि—'अहेरिवानृताद्भीतः' असत्यसँ ताही प्रकारैं डरी जेना सर्पसँ, जै रूपैं क्यो सर्पक लग नहिं जाइत छथि सर्वदा तकर संपर्क सँ दूर रहैत छथि ताहीरूपैं असत्यक संपर्क सँ दूर

रहबाक थिक। असत्य सर्वदा असत्ये थिक और सत्य सर्वदा जययुक्त थिक 'सत्यं जयति नानृतम्'। अतएव गपशप क कसौटी सत्य थिक। एहि विषयकैं सतत मनमें रखबाक थिक।

गपशपक भाषा

गपशपक भाषा मधुर होएबा क थिक। बिगड़लो स्वरूप में यदि शृङ्गारादि कै देल जाइत छैक तँ ओ देखबाक योग्य भै जाइत अछि। सुन्दर स्वरूप में जँ अलंकरण देल जाइक तखन तँ ओ चमकि उठैत अछि। एही प्रकारैं गपशपक विषय चाहै जे हो जँ मधुरताक संगैं ओ कहल जाइत अछि तँ ओ काव्य भै जाइत अछि। श्रीगोवर्धनाचार्य अपन आर्यासप्तशती में एहि मधुर वचनक सत्काव्यक संग तुलना कैकै बड़ प्रशंसा कैने छथि :—

'सत्पात्रोपनयोचित - सत्प्रतिबिम्बाभिनववस्तु।
कस्य न जनयति हर्षं सत्काव्यं मधुरवचनं च॥'

अर्थात् मधुरवचन सत्काव्य जकाँ योग्य व्यक्तिक ओतै उपस्थित करबाक योग्य तथा ताहिमें सुन्दर प्रतिबिम्ब होएबाक कारणैं एक नवीन वस्तु भैकै ककरा हर्ष नहिं दैत अछि अर्थात् सबकैं हर्षप्रद होइत अछि।

उत्तररामचरितमें भवभूति मधुरवाणी कैं अमृत कहलन्हि अछि:—

म्लानस्य जीवकुसुमस्य विकाशनानि,
संतर्पणानि सकलेन्द्रियमोहनानि।
आनन्दनानि हृदयैकरसायनानि,
दिष्टया मयाप्यधिगतानि वचोऽमृतानि॥

अर्थात् वाणीरूप अमृत मुरझाएल जीवरूप फूलक विकाश कैनिहार, तृप्त कैनिहार, समस्त इन्द्रियकैं मोहित कैनिहार, आनन्द-देनिहार और हृदयक हेतु एकमात्र रसायन थिक।

भाषा मधुर होएवाक अर्थ थिक जे ओकर स्वर हृदयग्राही होइक। कोइलीक भाषा मधुर कहवैत छैक और कौआक भाषा क्रूर। कोइलीक भाषा क्यो नहिं बुझैत छैक जे ओकी कहि रहल अछि परन्तु ओ सुनवामें एहेन मधुर होइतछैक जे कोइलीक भाषाकैं सब सुनै चाहैत ~~अछि~~ तैंहेतु जाहि आलापक स्वर सुनैक इच्छा सवकैं होइक सैह मधुर वचन थिक। मानव-भाषा बुझवाक योग्य होएवाक कारणैं तकर अर्थो मधुर होएवाक चाही। वाल्मीकिक विषयमें जे ई कथन अछिः—

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविता-शाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥

से केवल रामायणक छन्दे बड़ सुन्दर तथा बड़ सुन्दर शब्द-विन्यासहिक कारण नहिं किन्तु रामायण-पद्यक अर्थो तादृशे मधुर छैक तैंहेतु आलापक भाषा मधुर होएवाक थिक।

रामायण में श्रीरामजीक विषयमें लिखल अछिः—

"स च नित्यं प्रसन्नात्मा मृदुपूर्वं च भाषते।
उच्यमानोऽपि परुषं नोत्तरं प्रतिपद्यते॥"

रामजी सर्वदा प्रसन्न रहैत छथि, कोमलतापूर्वक बजैत छथि, कठोर वाक्य कहलो गेलापर कठोर उत्तर नहिं दैत छथि। कोमलतापूर्वक बजवाक हेतु ई आवश्यक छैक जे मन प्रसन्न रहै। अप्रसन्न लोक कोमलतापूर्वक बाजिए नहिं सकैत छथि। मनक प्रभाव वाणीपर पड़ितहि छैक। तैंहेतु अप्रसन्न मनक लोकक वाणी कठोर होएव स्वाभाविक

थिकैक। अतएव श्रीरामजीक विशेषण छन्हि 'स च नित्यं प्रसन्नात्मा' कोमलतापूर्वक बाजल कथाकैं सुनिकैं श्रोता प्रसन्न भै जाइत छथि और हुनका बड़ आश्वासन भेटैत छन्हि तैं हेतु सभ्य लोकक वाणी कौखन अप्रिय नहिं होइत छन्हि, रघुवंशमें दशरथक विषयमें लिखल अछि :—

न कृपणा प्रभवत्यपि वासवे न वितथा परिहासकथास्वपि।
न च सपत्नजनेष्वपि तेन वागपरुषा परुषाक्षरमीरिता॥

राजा दशरथ शत्रुअहुकैं कठोरकथासँ संबोधित नहिं करैत छलाह। मनुस्मृतिमें कहलगेल अछि :—

यस्य वाङ्मनसे शुद्धे सम्यग्गुप्ते च सर्वदा।
स वै सर्वं समाप्नोति वेदान्तोपगतं फलम्॥

जनिक वाणी और मन शुद्ध छन्हि जे विचारिकैं बजैत छथि हुनका वेदान्त सम्बन्धी सब फल भेटि जाइत छन्हि अर्थात् ओ व्यक्ति ऋषि-स्वरूप थिकाह तैंहेतु मृदुताक संग बाजब एक सुन्दर अभ्यास थिक यदर्थ यत्न करब आवश्यक थिक।

कोमलताक संग बजबाक अभ्यास अल्पे लोकमें प्राकृतिक रहैत छन्हि, बहुत लोक अभ्याससँ मृदुभाषी होइत छथि। अभ्यासक द्वारा अनेक गुण मनुष्यमें स्वाभाविक भैजाइत छन्हि अतएव गपशपमें मृदुभाषी होएब आवश्यक थिक।

इहो विषय ध्यानमें रखबाक थिक जे सब अवस्थामें मृदुतापूर्वक बजनहि काज नहिं चलैत छैक। कोनोप्रकारक दुष्टाचरणमें प्रवृत्त लोकक हेतु कठोरभाषण द्वारा तकर विरोध करब समुचित थिक किन्तु जहाँधरि शिष्टाचरणक सम्बन्ध छैक कोमलतापूर्वक बाजबे सभ्यता थिक।

कोमलतापूर्वक बाजब ई प्रमाणित करैत अछि जे वक्ता आवेशमें नहिं छथि प्रत्युत शान्त छथि किऐक तँ क्रोधक भाषा पारुष्ययुक्त होइत अछि तैंहेतु स्मितपूर्वक बाजब वक्ताकैं प्रकृतिस्थ देखबैत अछि। मृदुतापूर्वक बाजब वक्ताक आभिजात्य सिद्ध करैत अछि अर्थात् एहिसँ ई प्रमाणित होइत छैक जे वक्ता सत्कुलप्रसूत थिकाह किऐक जे उत्तमकुल-संभूत लोकक स्वभावतः ई गुण होइत छन्हि जे ओ शान्त तथा मृदुभाषी होइत छथि। कोनो विशिष्ट कारणवश हुनका लोकनिक स्वभावमें परिवर्त्तन होएब भिन्न विषय थिक।

वाणीमें कोमलता तैखन आबि सकैत अछि यदि वक्ता विनयी होथि हुनकामें नम्रता गुण होइन्हि। 'विद्या ददाति विनयम्' विद्यासँ विनय अर्थात् नम्रता प्राप्त होइत अछि। लोकक ई साधारण धारणा छन्हि जे विद्वान् लोक नम्र होइत छथि। 'नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः' वृक्षमें जखन तकर संपत्ति फल अबैत छैक तखन ओ नम्र भैजाइत अछि अर्थात् ओकर डारि सब ऊर्ध्वमुखसँ अधोमुख भैजाइत छैक। ताही प्रकारें मनुष्यमें जखन गुण अबैत छन्हि तखन ओहो नम्र भैजाइत छथि। नम्रता एहि बातकैं प्रकाशित करैत अछि जे नम्र व्यक्ति विद्वान् और गुणवान् होइत छथि। नम्र होएब बड़ पैघ गुण थिक। रघु क वर्णनमें कवि कालिदास लिखैत छथि-यद्यपि रघु शरीरक उत्कर्षसँ अपन पिता दिलीपसँ सब प्रकारैं बढ़ि गेल छलाह तथापि नम्रताक कारणैं हुनकासँ नीच बोध होइत छलाह :—

'युवा युगव्यायतबाहुरंसलः कपाटवक्षाः परिणद्धकन्धरः।
वपुः प्रकर्षादजयद्गुरुं रघुस्तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत ॥'

जाम्बवान् अङ्गदकैं कहलथीन्ह जे अहाँक नम्रता अहाँक भविष्यक सुन्दर

योग्यताक सूचक थिक अर्थात् भविष्यमें अहाँ पैघ भेनिहार छी :—

'सन्नतिर्हि तवाख्याति भविष्यच्छुभयोग्यताम् ।'

भरतक विनयसँ मुग्धभै श्रीरामजी भरतकैं कहलथिन्ह :—

'आगता त्वामियं बुद्धिः स्वजा वैनयिकी च या ।
भृशमुत्सहसे तात रक्षितुं पृथिवीमपि ॥'

अर्थात् अहाँक जे स्वाभाविक नम्रता अछि ताहिसँ अहाँ समस्त पृथिवीक रक्षक होएवाक योग्यछी । उच्चपद पर जयवाक हेतु ई एक उत्तमगुण थिक तैं हेतु गपशपमें विनयप्रदर्शन आवश्यक थिक ।

अनेक व्यक्ति कार्यसाधनक हेतु किछु समय तक बड़ विनयी प्रतीत होइतछथि परन्तु यदि ई गुण हुनकामें स्वाभाविक नहिं रहैत छन्हि तँ शीघ्रे हुनक अविनयो प्रदर्शित भै जाइत अछि । यथार्थमें विनयी पुरुष सब समयमें एकरूप रहैत छथि हुनक स्वरूप कौखन नहिं बदलैत छन्हि ।

किछु लोक विनयकैं अति दुर्बलताक चिह्न बुझैतछथि, वास्तवमें ओजस्वी पुरुषमें जतेक विनयक मात्रा होइन्हि हुनक और शोभा बढ़ैतछन्हि । चन्द्रकान्तमणिक तेज ओकर ठण्ढापनक कारणैं हीन नहिं बुझल जाइत छैक । विनययुक्त बातचीत कौखन अप्रिय नहिं भैसकैत अछि । यदि श्रोता अशान्त होथि अथवा विरुद्ध मतिक होथि तथापि विनययुक्त वाणीकैं सुनिकैं ओहो अपन अशान्ति और विरुद्ध-भावकैं नहिं प्रदर्शित कै सकैत छथि कारण जे से करवाक हुनका अवसरे नहिं प्राप्त होइत छन्हि ।

यथार्थमें विचार कैलजाय तँ विनये सभ्यता थिक किऐक तँ सभ्योचित व्यवहार विनयी पुरुषहिमें देखल जाइतअछि । विनयी

लोक अपन मनक उद्रेककैं रोकवामें, दोसराक आक्रमणकैं सहवामें, हुनक भावकैं बुझवामें तथा अपन कथनीय विषयकैं ठीक रूपसँ रखवामें समर्थ होइत छथि। यद्यपि विनयी लोकक स्वरूपसँ ई बोध होइत अछि जे हुनका ओतै जे कोनो प्रस्ताव राखल जाय तकरा ओ स्वीकार कै लेताह। वास्तवमें से विषय नहिं होइत अछि। विनयी लोक सुनैत छथि सबकिछु किन्तु स्वीकार ताहि विषयक करैत छथि जाहि विषयकैं हुनक हृदय स्वीकार करैतछन्हि परन्तु कोनो विषयक निराकरणमें ओ औद्धत्य नहि देखबैत छथि। श्रीगांधीजी एक पैघ पदस्थ अङ्गरेजक विषयमें लिखने छथि जे ओ व्यक्ति एतेक नम्र छथि जे सब बातकैं बड़े ध्यान और संयतभाव सँ सुनैत छथि परन्तु अपन निश्चयसँ एको तिलभरि एम्हर-ओम्हर नहिं होइत छथि। विनयी लोकक स्वरूप एहीप्रकारक होइत छन्हि। तैंहेतु गपशपक पूर्णतामें विनयक प्रदर्शन बड़ आवश्यक वस्तु अछि।

सत् हृदय

गपशपमें विनययुक्त मधुरभाषा प्रयोगक हेतु ई आवश्यक छैक जे वक्ताक हृदय पवित्र और निश्छल हो कारणजे जँ लोक विशेष सावधान भैकै नहिं बाजथि तँ हुनक वाणीमें हुनक हृदयक भाव संनिविष्ट रहितहि छन्हि। बहुतकिछु सावधानता रखलहु पर हृदयगत भाव व्यक्त भैए जाइत छैक जकरा बुद्धिमान् श्रोता बुझिए जाइतछथि तैं हेतु जखन वक्ताक हृदय पवित्र ओ निश्छल रहतन्हि ताही अवस्थामें हुनक वाणी सभ्य और प्रियकर होएतैन्हि ई श्लोक सर्वजनकैं विदित अछि :—

'शुभं वा यदि वा पापं यन्नृणां हृदि संस्थितम् ।
सुगूढ़मपि तज्ज्ञेयं स्वप्नवाक्यात्तथा मदात् ॥

अर्थात् मनुष्य उत्तम वा बेजाय भावकैं अपन हृदयमें कतबोक नुकायकैं राखथु तथापि दूइ अवस्थामें ओ भाव व्यक्त भैए जाइत छन्हि—एक स्वप्नावस्थामें दोसर जखन ओ अभिमानपूर्वक बजैत छथि, अर्थात् स्वप्नावस्था तथा मदावस्थामें हुनका ई परिज्ञान नहिं रहैत छन्हि जे ओ अपन भावकैं नुकायकै राखथि । वास्तवमें एहि दुनू अवस्थाक अतिरिक्तो लोकक हृदयक भाव व्यक्त भैए जाइतछन्हि । यद्यपि वाणीसँ ओ अपन भावकैं प्रकाशित नहिं करैत छथि कारणजे स्वरूप, चेष्टा, गति, आँखि मुखक विकारसँ मनक अन्तर्गत विषय ज्ञात भैए जाइतछैक

'आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषणेन च ।
नेत्र-वक्त्रविकाराभ्यां ज्ञायतेऽन्तर्गतं मनः ॥'

यद्यपि बुद्धिमान् लोक अपन बाह्य चेष्टहुकैं ततेक संयत रूपसँ रखैत छथि जाहि सँ लोक हुनक हृदयगत भावकैं बूझि नहिं सकन्हि । हुनक भावकैं लोक तैखन बूझि सकन्हि जखन हुनक विचारक फल लोकक संमुख होइक, रघुवंशमें राजा दिलीपक बुद्धिमत्ताक विषयमें लिखल-अछि :—

'तस्य संवृतमंत्रस्य गूढ़ाकारेङ्गितस्य च ।
फलानुमेयाः प्रारंभाः संस्काराः प्राक्तना इव ॥

एहि प्रकारक प्रकाण्ड बुद्धिमत्ता रहलहुपर बुद्धिमान् श्रोता वक्ताक हृद्गत भावकैं बुझिए जाइतछथि किन्तु यदि वक्ताक हृदय पवित्र रहन्हि तखन हुनक वाणीक द्वारा कोनो अशुद्ध भाव प्रदर्शित नहिं भै सकैछ फलतः हुनक भाषण, हुनक चेष्टा, हुनक आकार, हुनक

स्वप्न और हुनक मद सब हुनक उत्तम भावकैं व्यक्त करत। अतएव हुनक आलाप सभ्यतापूर्ण होएतैन्हि। अतएव गपशपक सफलतामें वक्ताक हृदयक शुद्धि आवश्यक विषय थिक।

यद्यपि गपशपक प्रसङ्गमें परिधान, मुखभङ्गी आदि विषयहुक भाव श्रोतापर पड़ैत छन्हि तथापि महान् पुरुष एहि सब बाह्य विषयकैं गौण स्थान दैत छथि, मुख्य स्थान वक्ताक कथनक सारांशकैं दैतछथि अर्थात् ओ वक्ताक कथनक द्वारा वक्ताक हृदयकैं देखैत छथि। श्रीगांधी-जीक आत्मकथामें एक प्रकरण अछि जे लंडनमें जखन ओ छलाह तखन एक भारतीय सज्जन जे अङ्गरेजी नहिं जनैत छलाह एक पैघ अङ्गरेजसँ भेंट करबाक इच्छुक भेलाह और एहि हेतु श्री गांधीजीसँ ओ कहलथीन्ह जे ओ दुइभाषिआक कार्य कैकें हुनक सहायता करथि। गांधीजी हुनक एहि प्रस्ताव सँ संमत भेलाह। निश्चित समयपर जखन दुनू व्यक्ति जयबालै उद्यत भेलाह तखन भेंट कैनिहार व्यक्तिक विचित्र वेष-भूषा देखिकै गान्धीजी आश्चर्यचकित भैगेलाह और हुनका कहलथीन्ह जे की ओ ताही स्वरूपैं ओतेकटा पैघ लोकसँ मिलताह। भेंट कैनिहार सज्जन उत्तर देलथीन्ह गान्धी, पैघ लोक ककरो पहिनावा वा कोनो बाह्य आडम्बर पर ध्यान नहि दैत छथि ओ तँ केवल वक्ताक कथनक सारांशकैं देखैत छथि, चलू अही स्वरूपमें हुनकासँ भेंट करब, और यथार्थ में ताही स्वरूपैं भेंटकै अपन अभीष्टार्थ सिद्ध केलन्हि। तैं हेतु हृदयक स्वच्छते आलापक विशिष्ट गुण थिक। हमरहु लोकनिक शास्त्रमें लिखल अछि—'बालादपि सुभाषितम्', उत्तम विषय नेनहु लोकनिसँ ग्रहण करबाक थिक 'ननु वक्तृविशेषनिष्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः, विद्वान् लोक गुणाक ग्रहण करैतछथि हुनक विचार में

ई विषय स्थान नहिं लैतअछि जे एकर बजनिहार के थिक। चाहै जे कियो बाजथि, जाहिमें तत्त्व रहैत छैक तकरे ग्रहण विद्वान् लोक करैत छथि।

एहि प्रकार क पवित्र हृदयक सत्य-पूत हित-प्रिय भाषा कैं कहैत वक्ता निर्भय भै कै आलाप करैत छथि, भयक संशय तँ ताहि अवस्थामें रहैतअछि जखन कथन असत्य, अप्रिय और परमर्मच्छिद हो जाहिसँ श्रोता विरोधी भै जाय सकैतछथि। किन्तु यथार्थ और मनकैं लुब्ध कैनिहारि भाषाकैं सुनिकै के नहि आकष्ट भै सकैत अछि। एहेन वाणी मुँहसँ तैखन बाहर होइत अछि जखन अन्तरात्माकैं ई संशय नहिं रहैतछन्हि जे एहि कथनमें कोनो शङ्काक स्थान छैक। एहि प्रकारक वाणीके बजनिहार लोकक बड़ प्रशंसा मनुस्मृति में अछि :—

'यस्य विद्वान् हि वदतः क्षेत्रज्ञो नाभिशङ्कते।
तस्मान्न देवाः श्रेयांसं लोकेऽन्यं पुरुषं विदुः॥'

तैं हेतु जे विषय सत्य हो, जकरासँ हित छाड़ि अहितक संभावना नहिं हो एहने जगद्धितमयी वाणीकैं निर्भयपूर्वक कहब गपशपक विशेषता थिक। जे किछु मनमें आबै तकरा निर्भीक भै कै कहब गपशपक विशेषता नहिं थिक किन्तु जकरा कहलासँ आत्मा सशङ्कित नहिं होथि एहेन उपकारक विषयकैं कहब विशेषता थिक।

व्यापक दृष्टि

गपशपक प्रसङ्गमें कौखन एहेन परिस्थिति भैसकैत अछि जे जनिका संग आलाप भैरहल अछि ताहि ठाम आनो लोक उपस्थित होथि जनिक कर्णकुहरमें ताहि आलापक सारांश पहुँचैत होइन्हि।

एहिमें संशय नहिं जे जनिक संग आलापं भैरहल अछि ताहि ठाम ओ एक विशिष्ट लोक छथि अन्यथा हुनक वार्तालापकैं आन लोक किऐक सुनिरहल छन्हि, तेहेन स्थितिमें वक्ताकै व्यापक दृष्टि राखब उचित अर्थात् ताहि आलापक एहेन स्वरूप बनाएब उचित जाहिसँ ताहि ठाम उपस्थित सब सज्जनक अनुकूल ओ वार्त्तालाप हो, कारण जे इहो संभावना कैल जासकैत अछि जे जनिक संग आलाप भैरहल अछि हुनकहुसँ विद्वान् बुद्धिमान् श्रोता ततै उपस्थित होथि जनिक मनमें वक्ताक प्रति नीक संस्कार भैसकन्हि, एकर अतिरिक्त जनिक संग आलाप भैरहल अछि हुनकहु विषयक नीक संस्कार होइन्हि तैं हेतु खूब सावधानतासँ सब दिशि व्यापक दृष्टि रखैत आलापक परंपरा रखवाक थिक।

व्यापक दृष्टिक दोसर अर्थ ई थिक जे वार्त्तालाप चाहै जाहि दृष्टिसँ आरंभ कैल जाय ताहि आलापक प्रयोजन केवल अर्थसिद्धि तक सीमित नहिं कै पैघ अर्थसिद्धिक हेतु मानवाक थिक। अर्थात् श्रोताक मनपर एहेन संस्कार देवाक थिक जाहिसँ श्रोता वक्ताक गुणक प्रशंसक होथि। एतादृश गपशप विशेष अर्थसिद्धिक साधक भैसकैछ।

मर्यादाक ध्यान

कौखन एहेन परिस्थिति उपस्थित भैसकैत अछि जे वक्ता बड़ उत्साह ओर उमङ्गसँ गपशप करवाक हेतु उपस्थित तँ होइत छथि किन्तु जनिक संग आलाप करै जाइत छथि ओ प्रेमपूर्वक आलाप करवाक स्थानमें अपन विरक्ति देखबैत छथीन्ह ताहि स्थितिमें आगन्तुककैं ई उचित नहिं थिकन्हि जे ओहो विरक्ति देखौनिहार

व्यक्तिक संग विवाद करे लागथि, उचिततँ आगन्तुककैं ई थिकन्हि जे ओ बड़े धैर्य और संतोषसँ अपन परिस्थिति कै बुझावथि जे कोन अभिप्रायसँ ओ तते आएल छथि, यदि से बुझैवहुमें ओ और बिगड़ि-जाथि तँ ताहि स्थानसँ शान्तिपूर्वक घूरि आवथि सैह उचित, श्रोतासँ विवाद करब उचित नहिं। यदि विवाद कैलजाय तँ वक्ता श्रोतामें की अन्तर रहलन्हि, दुनू गोटै एके स्वभावक भेलाह। एहि स्थिति में आगन्तुक वक्ताकैं विचार करबाक थिकन्हि जे श्रोता एहेन आचरण कियैक देखौलन्हि। प्रायः एहेन परिस्थिति तखनहि भै सकैत छैक जखन श्रोता शान्तिमय स्थितिमें नहिं होथि, हुनक चित्त चञ्चल अशान्त होइन्हि वा ओ क्रोधावस्थामें होथि, वा आगन्तुकक गुणसँ व्यक्तित्वसँ अपरिचित होथि अथवा ओ मूर्ख होथि जनिकाँ आलापक सभ्यताक ज्ञाने नहिं होइन्हि।

एहेन स्थितिमें वक्ताकैं यैह जानिकै यैह कर्त्तव्य थिकन्हि जे ओ असमयमें उपस्थित भेलाह। श्रोताक मूर्खताक स्थितिमें खेद करवाक कारण नहिं छैक।

यूनान (ग्रीस) देशक विख्यात दार्शनिक सुकरात (Socretes) एक समय कतहु जाइत छलाह तँ रास्तामें किछु एहेन लोक भेटल-थीन्ह जे हुनका जनैत छलथीन्ह और जनिकासँ ओ अभिवादन प्राप्त करबाक योग्य छलाह परन्तु ओलोकनि हुनक अभिवादन नहिं कैल-थीन्ह ताहि पर सुकरातक शिष्यवर्ग एतादृश व्यवहारपर उत्तेजितभै पथिकसँ झगड़ा करवालै सन्नद्ध भै गेलाह, ई परिस्थिति देखि सुकरात अपन शिष्यवर्गकैं ई कहि वारण कैल जे मलिन लोक यदि मार्गमें जाइत होथि तँ हुनक मलिनताक हेतु हुनकासँ विवाद नहिं कै रास्ताक किनार

दै जयवे समुचित थिक, एही प्रकारैं यदि क्यो शिष्टाचारक पालन नहिं करथि तँ तैं हेतु हुनकासँ विवाद करब उचित नहिं अपितु बात दै चल जयवे समुचित थिक। तैं हेतु गपशपक सभ्यताक रक्षाक हेतु मर्यादाक रक्षा करब विधेय थिक।

आत्मश्लाघाक त्याग

गपशपक प्रक्रममें एहि विषय दिशि ध्यान देब उचित थिक जे आत्म-प्रशंसाक विषय एहिमें नहिं आबै। अपन प्रशंसा स्वयं कैने ई विषय श्रोताकैँ रुचिकर नहिं होइत छन्हि। ककरो प्रशंसा यदि निरपेक्ष व्यक्तिक द्वारा कैल जाइक और सेहो ओहि व्यक्तिक अनुपस्थितिमें तखन प्रशंसाक मूल्य होइत छैक अन्यथा स्वयं आत्मप्रशंसा कैने जतबोक गुण ओहि व्यक्तिमें वास्तवमें रहैत छन्हि आनक दृष्टिमें अल्पे बोध होइत छैक, एतबैक नहिं यदि ताहि आत्मश्लाघाक श्रोता हुनक समानस्पर्धी लोक होथि तँ हुनक निमित्त ई आत्मश्लाघा बड़ अरुचि-कर होइत छन्हि तैं हेतु सभ्य लोक कैं एहि आत्मश्लाघासँ बचवाक थिकन्हि। यदि एहेन संगति आबिए पड़ैक जे वक्ता कैं अपन विषयमें किछु बाजैक पड़न्हि तँ तकरा ताहि रूपैं कहवाक चाही जाहिसँ श्रोताकैँ से विषय वक्ताक आत्मश्लाघा रूपै भान नहिं होइन्हि।

मनुष्यक ई स्वाभाविक धर्म होइत छैक जे लोककैं अपन विशेषता-कैं कहवामें तथा अपन प्रशंसाकैं सुनवामें बड़ आवेश होइत छैक तैँ हेतु एहि प्रसङ्गसँ बचब बड़ कठिन विषय थिक। ई एक प्रकारसँ असि-धारा व्रत थिक। जे व्यक्ति एहि आत्मश्लाघा प्रकरणसँ बचल रहैत छथि ओ निःसंशय एक महान् पुरुष थिकाह। बड़-बड़ चरित्रवान्

व्यक्तिक विषयमें लिखल गेल अछि जे हुनका लोकनिमें आत्मश्लाघा नहिं छलन्हि। श्रीरामजीक विषयमें लिखल अछि जे ओ अविकत्थन छलाह। महाभारतमें ताहि लोकक बड़ प्रशंसा छन्हि जे ने ककरो निन्दा करैत छथि ने आत्मप्रशंसा करैत छथि। "अब्रुवन् कस्यचिन्निन्दामात्मपूजामवर्णयन्" और एक ठाम नीतिमें लिखल अछि:—

ह्रीमन्तः स्वगुण-प्रकाशन-विधावन्यस्तुतौ पण्डिताः
ते भूमण्डलमण्डनैकतिलकाः सन्तः कियन्तो जनाः।

जे व्यक्ति अपन गुण-प्रकाशमें संकोच बोध करैत छथि किन्तु आनक प्रशंसा करवामें पण्डित छथि सैह पैघ लोक थिकाह तैं हेतु गपशपमें आत्मप्रशंसारूप दोषसँ अवश्य अपनाकैं सुरक्षित रखबाक थिक। केवल अपने गाथा कहब ठीक नहिं।

प्रायः ई देखवामें अबैत अछि जे केओ दीन व्यक्ति अपन मित्र संबंधी अथवा परिचित उन्नतिशील व्यक्ति सँ मिलिकै गपशपमें हुनका अपन दुःखक कथा कहैत छथीन्ह परञ्च तकर अभीष्टफल नहिं होइत छन्हि एहिमें कारण ई होइत छैक जे जखन लोकक सुदिन रहैत छैक, जखन लोक उन्नतिशील रहैत छथि ताहि स्थितिमें हुनक आगाँ उन्नतिक आनन्दक सुखक विषये हुनक मनक अनुकूल होइत छन्हि ताही प्रकारक चर्चा हुनका रुचिकर होइत छन्हि ततै जँ केओ दुःखक कथा सुनवै लगैत छन्हि तँ ओ लोकनि शिष्टताक दृष्टिसँ तकरा सुनि तँ लैत छथि परञ्च हुनका ओ विषय प्रिय नहिं होइत छन्हि। पक्षान्तरमें यदि हुनक समीप आनन्दक गपशप कै अपन किछु प्रयोजनो सिद्ध कैल जाय तँ से कार्य सुविधा सँ होइत छैक। केवल दुःखी लोके दीन लोकक गाथाकैं प्रेमसँ सुनैत छथि यद्यपि तकर प्रतीकार किछु नहिं कै सकैत

छथि तैं हेतु जाहि प्रकारक लोकक संग गपशप कैलजाय हुनक स्थिति, हुनक मनक उल्लास, हुनक तात्कालिक गति-विधिक अनुसारे आगन्तुककैं अपन गपक प्रसङ्ग कर्त्तव्य थिकन्हि। एकर निष्कर्ष ई थीक जे केवल अपन गाथा सुनौने कोनो लाभ नहिं होइत छैक। आलापक सभ्यता ई थिक जे ताहि प्रकारक आलाप हो जाहिसँ वक्ता-श्रोता उभय पक्ष क लोक आनन्दक अनुभव करथि। हँ, ताहि प्रकारक आलापसँ यदि अभीष्ट सिद्धि भै जाइन्हि तँ कोनो क्षति नहिं अतएव गपशपमें एहू विषय दिशि दृष्टि राखब उचित।

पाण्डित्य-प्रदर्शन

गपशपमें हठात् पाण्डित्य-प्रदर्शनक आवश्यकता नहिं। बहुत लोक एहेन होइत छथि जे अप्रासङ्गिको विषयकैं आनि अपन पाण्डित्य देखबैत छथि से ठीक नहिं थिक। प्रसङ्ग ऐने पाण्डित्य-प्रदर्शन तँ समुचिते थिक। श्रोताकैं स्वयं एतवाक बुद्धि और योग्यता रहैत छन्हि जे ओ वक्ताक आलापहिसँ हुनक बुद्धि विद्याक अनुमान कै सकथि। यदि मानि लेल जाय जे श्रोता वक्ताक आलापमात्रसँ हुनक गुण-ग्रहण नहिं कै सकैत छथि तथापि श्रोताकैं ई बुझाएब जे वक्ता बड़ विद्वान् छथि कोनो विशेष लाभक संपादन नहिं कै सकैत अछि। जे स्वयं जनिक गुणकैं बुझैत छथि वैह वस्तुतः तनिक प्रशंसक होइत छथि। पक्षान्तरमें गुणज्ञ श्रोताकैं जँ ई बोध होइन्हि जे वक्ता अपन विद्वत्ता देखैवा लै अप्रस्तुत प्रसंगक उपक्रम कैने छथि तखन श्रोताक मनमें एहि हेतु ईर्ष्या होइत छन्हि जे वक्ता हुनका अज्ञ बूझिकैं अपन योग्यताक प्रदर्शन करैत छथि और ओ प्रदर्शन कैनिहार लाकक आधार श्रोता छथि

तैं हुनक विषयमें तिरस्कारहुक भाव अबैत छन्हि अतएव अप्रासङ्गिक योग्यता-प्रदर्शन गपशपक सभ्यताक बाह्य विषय थिक।

गपशप की थिक, एक प्रकारसँ मनुष्यक गुण-दोषक सारांश थिक। अनिच्छासँ अपन गपशपक द्वारा लोक अपन विवेक, बुद्धि, धर्म, शौर्य इत्यादि विषयक प्रदर्शन कैए दैत छथि। किऐकतँ जनिक हृदयमें जाहि प्रकारक धारणा रहैत छन्हि तदनुरूपे वाणी हुनक जिह्वासँ बाहर होइत छन्हि तैं हेतु प्रयास कैकै अपन विशिष्ट गुणक व्याख्या करवाक आवश्यकता गपशपमें नहिं रहैछ।

आक्षेप

गपशपमें कौखन एहेन परिस्थिति उपस्थित होइत छैक जे यद्यपि आगन्तुक वक्ता जानिबूझिकैं एहेन कथा नहिं बजैत छथि जाहिसँ ओ कथा श्रोताक हेतु आक्षेपक विषय होइन्हि तथापि अर्थतः यदि ओ विषय श्रोताक हेतु आक्षेप होइन्हि तँ ताहि प्रकारक उपक्रमसँ गपशपकैं बचैवाक थिक। एहि संबंधमें एक उदाहरण ई भै सकैत अछि जे यदि केओ व्यक्ति एहेन व्यक्तिसँ आलाप कै रहल छथि जनिकामें किछु अन्धत्व दोष होइन्हि और ताहिठाम वक्ता कोनो प्रसङ्गें उदयनाचार्यक वर्णन करैत यदि हुनक आत्मतत्त्वविवेकक निम्नश्लोक उदाहृत करथिः—

नास्य श्लाघामकलितगुणः पोषयन् प्रीतये नः
कोऽन्धैश्चित्रस्तुतिशतविधौ शिल्पिनः स्यात्प्रकर्षः।
निन्दामेव प्रथयतु जनः किंतु दोषान्निरूप्य
प्रेक्ष्यांस्तस्य स्खलितवचनं प्रीणयेदेव भूयः॥

तँ यद्यपि वक्ताक अभिप्राय श्रोताक विषयमें आक्षेप नहिंओ छन्हि तथापि श्रोता अपन विषयमें आक्षेपक आरोप कैसकैत छथि। एहि श्लोकक अभिप्राय तँ एतबेक थिक जे जे व्यक्ति एहि ग्रन्थक गुणकें नहि बुझने छथि, ओ ग्रन्थक कतबोक प्रशंसा करताह तथापि ग्रन्थकारकें ताहिसँ आनन्द नहिं होएतैन्हि किऐक तँ कोनो चित्रक विषयमें यदि केओ आन्हर व्यक्ति अनेको प्रशंसा करथि तथापि चित्रकारक ताहिसँ की प्रशंसा होएतैन्हि जैं हेतु ओ स्वयं चित्रकैं देखने नहिं छथि। एहिठाम अन्धत्व दोषक चर्चा अवितहि श्रोताकैं अपने दोषक स्मरण भै जयतैन्हि फलतः श्रोता ताहि कथनकैं अपन विषय में आक्षेप बुझताह और तखन हुनका गपशप में और कोनो कुतूहलता नहिं रहतैन्हि तैंहेतु एतादृश प्रसङ्ग सबसँ गपशपकैं बचैवाक थिक।

दुराग्रह

ई स्वाभाविक थिक जे लोक गपशपमें अपन स्थिरमत कैं कहैत छथि। अपन स्थिर विचारकैं कहवामें कोनो क्षति नहिं छैक किन्तु हुनक विचारे यथार्थ छन्हि एहि विषयक स्थापनक हेतु आग्रह करव दुराग्रह थिक। ई स्थिति ताही क्षण उत्पन्न होइत छैक जखन वक्ता और श्रोता विभिन्न विचारक होइत छथि, एक विचारक भेलासँ विवादक अवसरे नहिं अवैत छन्हि। लोक अपन विचारक हेतु स्वतन्त्र छथि। एहि स्वातन्त्र्यक अपहरण कोनो अवस्थामें वाञ्छनीय नहिं थिक। लोककैं सब अवस्थामें ई विचारवाक थिकन्हि जे हुनक जे कोनो स्थिर मत छन्हि तदनुसार यदि आग्रहपूर्वक ओ ककरो मतक परिवर्त्तन करै चाहैत छथि तँ तकर विरुद्ध फल भै सकैत छन्हि। स्पष्टरूप सँ अपन विचारकैं

प्रकाशित कैलासँ तकर जतेक प्रभाव दोसराक मनपर पड़ैत छैक आग्रह-वश ताहि विचारकैं प्रकाशित कैने ततेक फल नहिं होइत छैक।

प्रत्येक मनुष्य अपन अपन परिस्थिति में पालित पोषित होइत छथि ताहि समाजक संस्कार हुनक विचारमें अनायास पड़िए जाइत छन्हि। ताहि संस्कारक त्याग ताही क्षण भै सकैछ जखन हुनक स्थिर बुद्धि ई स्वीकार करवाले सन्नद्ध होइन्हि जे हुनक प्रथम संस्कार अयुक्त आधार पर छन्हि और वास्तव में अमुक विचारे मान्य थिक, तैंहेतु कोनो विचारक परिवर्त्तनमें मनुष्यक स्वतन्त्र बुद्धिए समर्थ होइत छन्हि। ककरो आग्रह समर्थ नहिं होइत अछि। तैंहेतु गपशपक सभ्यताक नियम तँ यैह थिक जे अपन विचार तँ अवश्य प्रकाशित करी किन्तु तकर स्थापनक हेतु आग्रही नहिं होई। वक्ताक हेतु तँ एतवैक उचित थिक, किन्तु श्रोताक हेतु सेहो कर्त्तव्य थिकन्हि जे यदि ओ वक्ताकैं कोनो विचारक स्थापन में आग्रही देखथि तँ तत्काल हुनक विचारकैं मानि लेथि, हृदयसँ अपनहि विचारपर स्थिर रहथि से कैलासँ गपशपक सभ्यता नहिं टुटैत अछि। ककरो विचारकैं सुनि लेवामें कोनो क्षति नहिं छैक किन्तु कर्त्तव्यकोटिमें ताही विचारकैं राखी जकरा हृदय स्वीकार करै।

इतिहाससँ ई विषय विदित होइत अछि जे एक बादशाह अपन लिखल एक पुस्तककैं अपन एक मित्रकैं देखौलन्हि। मित्र कोनो स्थान में किछु त्रुटि कहलथीन्ह, यद्यपि ओ त्रुटि वास्तवमें नहिं छलैक तथापि बादशाह सभ्यताक दृष्टिसँ अपन मित्रक प्रस्तावानुसार पुस्तकमें हुनक आगाँमें संशोधनकै देलथीन्ह जाहि सँ ओ मित्र अति प्रसन्न भैगेलाह। किन्तु ओ मित्र जखन ताहि ठाम सँ चल गेलाह तखन बादशाह

हुनक कैल संशोधन कैं काटि पूर्ववत् लेख रहै देलथीन्ह । यैह दृष्टान्त गपशपहुक उपक्रम में रक्षणीय थिक अर्थात् यदि केओ अपन विचारक विरुद्ध मतकैं प्रकाशित करथि तँ किछु समयक हेतु हुनक मतकैं मानि लेवामें कोनो क्षति नहिं छैक । किन्तु दृढ़ता तँ स्वीय विचारहि पर रखबाक थिक यदि अपन विचारक युक्ति-युक्ततामें दृढ़ विश्वास हो ।

उत्साह

एहेन अवसर बहुत समय होइत छैक कि गपशपमें वक्ता जाहि विषयक प्रतिपादन करैत छथि तकर अन्त्यमें वा मध्यहुमें श्रोता तेहेन उत्तर दैत छथीन्ह जे वक्ता क अनभीष्ट रहैत छन्हि । ताहि उत्तरकैं सुनिकैं वक्ता अपन अभीष्टार्थक पूर्त्तिमें संशयालु भै एतेक मर्माहत भै जाइत छथि जे और आगाँ गपशप बढ़ैवाक साहस हुनका नहिं रहैत छन्हि, एतेक हतोत्साह होएव उचित नहि थिक । वक्ताकैं कोनो स्थिति-में निरुत्साह नहिं होयवाक चाही । अनभिमत उत्तरकैं सुनिओकैं अपन पक्षमें हुनका जे किछु कहवाक होइन्हि कहवैक थिकन्हि और धैर्यपूर्वक अपन कथनकैं कहने श्रोता अपन पहिलुक उत्तर में किछु संशोधन बहुधा करितहि छथि । श्रोता जे पहिने अनभिमत उत्तर दैत छथीन्ह तकर कारण ई रहैत छैक जे ओ कोनो विषय में पूर्वहिसँ निश्चितमतिक रहैत छथि अथवा विषयक प्रतिपादनमें वक्ताक कोनो तेहन दोष होइत छन्हि जाहिसँ श्रोता शीघ्र उत्तर दै दैत छथीन्ह परन्तु वक्ताकैं चाहिऐन्हि जे ताहि उत्तर दिशि ध्यान विना देनहि, उदासीनताक त्याग करैत अपन युक्ति-संगत विषयकैं अत्यन्त धैर्य और विनयक

संग उपस्थित करथि, एहिरूपें कार्यक उत्तम फल बहुधा देखवामें आएल अछि।

मनुष्यक मानसिक वृत्तिमें एतेक तेज विद्युत् छैक जे तकर तुलना-में वैज्ञानिकक द्वारा आविष्कृत विद्युत् जे कि हमरा लोकनिक प्रत्यक्ष अछि अल्प बोध होइछ। वैज्ञानिक विद्युत्कैं प्रकट करवाक हेतु बटन दबेवाक प्रयोजन होइत छैक किन्तु मानसिक विद्युत् एतेक तेज अछिजे विषयक स्पर्श होइतहि चमकि उठैत अछि, श्रोताक अनभिमत उत्तरकैं सुनितहि वक्ताक हृदयमें तेहेन आघात होइत छन्हि जे तकरा द्वारा प्रस्फुटित मानसिक विद्युत् वक्ताकैं अपन विषयकैं आगाँ बढ़ेवा में असमर्थ कै दैत छन्हि तैंहेतु हतोत्साह भै ओ अपन विषयक प्रतिपादन समुचित रूपसँ नहिं कैं सकैत छथि तैं हेतु जाहि रूपैं वैज्ञानिकक अधिकार बिजलीपर छन्हि अर्थात् ओकर अभिव्यक्ति और संकोच अपन इच्छानुसार करैत छथि ताही रूपैं मानसिक विद्युत्क अभिव्यक्ति और संकोचपर वक्ताक अधिकार होएव उचित से भेनहि मनुष्य अपन इन्द्रियकैं अपन वशमे राखि सकैत छथि। एहि प्रकारक मनोऽध्ययन करवाक अभ्यास जनिकाँ होएतैन्हि सैह व्यक्ति संप्राप्त चित्त-विक्षोभकैं हँटायकैं अपन अभीष्ट ध्येयक प्रतिपादनमें समर्थ भै सकैत छथि तैं हेतु गन्तव्य पथमें विना दुर्मनायमान भेनहि अपन चरम लक्ष्य तक जैवाक थिक। से भेने फल-सिद्धि विना भेनहु कर्त्तव्य-दोष नहि अबैत अछि। अपन कर्तव्यकैं विना पूरा कैने निष्फलारंभ-यत्न भै दुःखी होएव वास्तवमें दुःखी होएव थिक किऐक तँ जतेक यत्न अपेक्षित छैक तकर पूर्त्ति कैल नहि और विफल भै गेलहुँ से समुचित नहि थिक अतएव पूर्ण यत्न और धैर्यक संग अपन गपशपकैं सब अवस्थामें बढ़ेवाक थिक।

परनिन्दा, परापवादक त्याग

शास्त्रमें ककरो निन्दा करब महापाप कहल गेल अछि तैं हेतु गपशपमें ककरो निन्दा करब ककरो अपवाद कहब गर्हित थिक। श्रोता ककरो निन्दाकैं सुनिकै वक्ताकैं निन्दक बुझैत छथि और वक्ताक प्रति हुनक आदर-भाव घटि जाइत छन्हि। केओ व्यक्ति जे ककरो निन्दा करैत छथि ताहिमें निन्दकक भिन्न-भिन्न भाव रहैत छन्हि। केओ एहि हेतु निन्दा करैत छथि जे निन्द्य व्यक्ति श्रोताक दृष्टि में छोट भै जाथि और ताहिसँ निन्द्य व्यक्तिक हानि होइन्हि, केओ एहि हेतु निन्दा करैत छथि जे निन्दक निन्द्य व्यक्तिसँ पैघ बुझल जाथि। विशेषतः एक वृत्तिक लोक एक दोसराक निन्दा करैत छथि, वस्तुतः एकवृत्तिक लोकमें यदि ई निश्चय करबाक हो जे सबसँ योग्य के छथि तँ मुख्य पाँच व्यक्तिकैं लै एक व्यक्तिकैं जायकै पुछबाक थिक जे अपने तँ सबसँ योग्य छीहे शेष एहि चारिमें सबसँ योग्य के छथि तखन ओ व्यक्ति यथार्थमें ताहि चारिमें जे योग्य व्यक्ति होथि तनिक नाम कहताह, एवं द्वितीय व्यक्तिक ओतै जाय हुनका कहबाक थिक जे अपने तँ सर्वश्रेष्ठ एहि पाँचोमें छीहे शेष चारिमें सबसँ योग्य के छथि? तखन ओ अपन साधु विचार दै सकताह, एवं पाँचो व्यक्तिक ओतै जाय जनिक विषय में बहुतम हो सैह सबसँ योग्य बुझबाक योग्य होइत छथि।

किछु लोकक एहेन स्वभावे होइत छन्हि जे ओ परनिन्दक होइत छथि। एहेन लोकक विषय में भर्तृहरि कहने छथि—

'ये निन्दन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे'

अर्थात् ओ निन्दक अत्यन्त निम्नश्रेणीक मनुष्य होइत छथि।

केओ कवि निन्दकक विषयमें एहि रूपें कहने छथि:—

'मन्निन्दया यदि जनः परितोषमेति नत्वल्पयत्नसुलोऽयमनुग्रहोमे।
श्रेयोऽर्थिनो हि पुरुषाःपरितोषहेतोः यत्नात् सुसञ्चितधनानि परित्यजन्ति॥'

अर्थात् जँ कोनो व्यक्तिकैं हमर निन्दासँ सन्तोष प्राप्त होइत छन्हि तँ ई हमरा उपर विना प्रयासक बड़ पैघ अनुग्रह थिक, बहुत नीक लोक तँ दोसराक तुष्टिक हेतु यत्नसँ एकट्ठा कैल धनहुक परित्याग करैत छथि। यद्यपि एतादृशो विचारक बहुत महात्मा लोक छथि जे स्वनिन्दहुकैं अनुग्रह विषय बुझैत छथि तथापि परनिन्दा सर्वथा त्याज्य थिक।

किछु वक्ता एहू हेतु श्रोता कैं आनक निन्दा सुनबैत छथि जे ताहिसँ श्रोताकैं आनन्द होएतैन्हि ई स्थिति तखन होइत अछि जखन कि निन्द्य व्यक्ति श्रोताक विरोधी रहैत छथि अथवा निन्द्य व्यक्ति वास्तवमें निन्दाक पात्र रहैत छथि। परञ्च ताहू परिस्थितिमें कुशल श्रोता वक्ता कैं निन्दके बुझैत छथि और हुनक विषयमें श्रोताक आदर घटिए जाइत छन्हि तैंहेतु गपशप कैं एहि निन्दाजन्य दोषक संपर्क सँ बचैवाक थिक।

अश्लील विषय

गपशप प्रसङ्गमें अश्लील विषयक चर्चा अथवा अश्लील शब्दक प्रयोग नितान्त वर्जनीय थिक। एतादृश उपक्रम भेने श्रोताकैं वक्ताक विषयमें घृणा उत्पन्न होइत छन्हि और ओ वक्ताकैं दुश्चरित्र बुझैत छथि तैंहेतु तादृश प्रयोगसँ गपशपकैं बचैवाक थिक। इंगलैंडक गणितज्ञ सर आइजक निउटन साहेबक विषयमें ई कहल जाइत अछि

जे एक बेरि हुनक केओ मित्र कोनो अश्लील विषयक चर्चा हुनक सोझामें कैलन्हि तैंहेतु निउटन साहेब ताहि मित्रक त्यागे कै देल। निउटन साहेब बड़ धार्मिक पुरुष छलाह, समस्त जीवन ब्रह्मचारिए रहलाह, विवाह की वस्तु थिक एहि विषय पर जीवन भरि विचारो नहिं कैलन्हि। यद्यपि सब लोकक हेतु अश्लीलांशक प्रयोग एतेक घृणास्पद नहिंओ हो तथापि गपशप में एतादृश विषयक प्रसङ्ग लोक असभ्योचित बुझैत छथि।

यदि अभिन्न हृदय दुइ मित्रक परस्पर वार्त्तालापमें एहेन विषयक प्रसङ्ग आबिओ सकैत अछि तँ ततै गपशपक सभ्यताक गणना नहि छैक। ओ आलाप वैयक्तिक होइत अछि तथापि ई विषय स्मरणीय थिक जे चरित्रवान् सदाचारी व्यक्ति कोनो अवस्थामें ककरहु संग अश्लील विषयक चर्चा नहिं करैत छथि। भद्रलोकक मुखसँ अश्लील वाक्य बाहरे नहिं होइत अछि। अश्लील भाषाक उच्चारणो वक्ताक लघुता सूचित करैत अछि। साधारणतया छोट जातिक लोकमें नशाखोरमें, और पुलिसलोकमें अश्लील शब्दक उच्चारण विशेषरूपै देखल जाइत अछि जकरा लोक सभ्यताक दृष्टिसँ अवश्य हेय बुझैत छथि। स्कूल, पाठशाला इत्यादिमें अश्लील शब्दोच्चारण कैनिहार छात्रकैं पूर्ण दण्ड देल जाइत अछि। एहि सब कुपरिणामकैं दृष्टिमें रखैत गपशप में अश्लीलांश सर्वथा वर्जनीय थिक।

शिष्टाचार

गपशपक प्रसङ्गमें शिष्टाचारक रक्षा परम आवश्यक थिक। अर्थात् गपशपक प्रसंगमें जोरसँ हँसब, जोरसँ बाजब, छीकब, अँगैठी करब,

मुँह बाविदेव, संयत अवस्था में नहिं रहव ई सब त्याज्य विषय थिक। एहि सव कुत्सित अभ्यासक आश्रयण लेनिहार व्यक्तिकैं दोसर व्यक्ति असभ्य बुझैत छन्हि और एहि प्रकारक आचरण जनिक सोझामें कैल जाय ओ अपनाकैं अपमानित बुझैत छथि। अँगरेजक सोझा में यदि केओ व्यक्ति मुँह बाविकैं अँगैठी करथि तँ तनिकाँ ओ तत्क्षण सोझासँ हटाय देथीन्ह तैं हेतु एहि सव कुत्सित अभ्यासकैं रोकि कैं गपशप कर्त्तव्य थिक। यदि प्रकृतिवशात् एहिसव भावक उद्रेक आबिए जाय तँ मुँहकैं बन्द कैं अथवा मुँहक उपर वस्त्र दैकै प्राकृतिक उद्रेककैं बाहर करैक थिक।

तत्व विषय ई थिक जे बेजाय बात ककरहु पसिन्द नहिं होइत छैक। केओ ककरहु ऊपर छींकिकैं अपन थूकक बिन्दु खसावथि अथवा ककरहु सोझामें पशुजकाँ मुँहकैं बावथि तँ से ककरहु पसिन्द क योग्य विषय नहि होइत छैक तैं हेतु एहि सव दुरभ्याससँ बचिकैं गपशप कर्त्तव्य थिक।

पुनरुक्ति

गपशपमें ई विषय ध्यान देवाक योग्य थिक जे एके विषय पुनः-पुनः नहि कहलजाय। पुनरुक्ति भेने श्रोताकैं ओ विषय अप्रिय भै जाइत छन्हि। एकर अतिरिक्त श्रोता बुझैत छथि जे वक्ताकैं और किछु कहवाक विषय नहि रहिगेल छन्हि तैं पुनरुक्ति करैत छथि जे पिष्टपेषण मात्र थिक। तृतीय विषय श्रोताकैं ई होइत छन्हि जे वक्ताकैं एतवोक क्षमता नहिं छन्हि जे ओ कहल विषयक स्मरण राखि सकथि। ई दोष केवल गपशपमें देखल जाइत अछि ततबैक नहिं अपितु पैघ-पैघ

व्याख्यान तथा लेखहुमें देखल जाइत अछि। गपशपक स्वरूपतँ छोट होइत अछि ताहिमें तँ एतादृश दोष नहिए ऐबाक थिक।

पुनरुक्तिक ज्ञान वक्ताकैं दुइ प्रकारसँ भै सकैत छन्हि प्रथम तँ श्रोता ई कहि उठैत छथि जे ई विषय तँ सुनि चुकलहुँ, अथवा ई विषय तँ अवगते अछि। द्वितीय श्रोताक अनभिरुचि सँ, यद्यपि श्रोताक अनभिरुचिमें कारणान्तरो भै सकैत अछि परञ्च साधारण-तया अनभिरुचिक कारण पुनरुक्तिए थिक तैं हेतु एहि पुनरुक्ति दोषसँ बचबाक प्रयास करबाक थिक।

अप्रयोजनीय विषयक त्याग

गपशपमें प्रयोजनीये बातचीत करब समुचित थिक तैं हेतु गपशपक समयमें वक्ताकैं एहि दिशि पूर्ण दृष्टि देबाक थिक जे श्रोता वार्त्तालापक परंपरा कैं चाहैत छथि वा नहिं। यदि श्रोताक अनिच्छा व्यक्त हो तँ गपशपक अन्त कै नमस्कार कैकै चलि देबाक थिक अथवा अपन वार्त्तालापकैं एतेक सरस बनैबाक थिक जाहि सँ श्रोताकैं ओ आलाप सुनबाक प्रवृत्ति होइन्हि। अनिच्छाक परिस्थितिमें गपशपकैं चलाएब सभ्यताक बाहर थिक।

जे लोकनि बड़ कार्यशील होइत छथि वा ई कहू जे जनिक समय बड़ मूल्यवान् रहैत छन्हि हुनका लोकनि समय बचैबाक युक्तिअहुकैं जनैत छथि। बहुधा तँ ओ लोकनि नमस्कार कुशल प्रश्नक अनन्तर चुप भै जयताह। शिष्टताक दृष्टि सँ ओ नमस्कार कहि विदाई नहिं देताह किन्तु मौन भै जयताह। आगन्तुक चाहै जे प्रश्न करथीन्ह तकर समीचीन उत्तर देताह किन्तु स्वयं कोनो प्रश्न नहिं करताह। गपशपमें

परंपरा ताही स्थितिमें बढ़ैत अछि जखन गपशप में प्रश्न उत्तर होइत छैक । एकहि पक्षमें प्रश्न तथा उत्तर नहिं सम्भावित थिक । वक्ता केहनो बजनिहार होथि हुनक बजवा क सीमा रहैत छन्हि तैं हेतु अवधिक अनन्तर पुनः ताही क्षण बजवाक अवसर वक्ता कैं भेसकैत छन्हि यदि श्रोता कोनो प्रश्न करथीन्ह जँ से नहिं हो तँ गपशपक परंपरा अपनहि अन्त भै जाइत अछि, तैं हेतु वक्ताक पक्षमें ई उचित थिकन्हि जे प्रयोजनीय विषयहिकैं उपस्थित करथि जाहि सँ श्रोता आवश्यक विषयक उत्तर दै अपन मूल्यवान् समयक रक्षा कै सकथि ।

एहि प्रकारक गपशप ई शिक्षा उत्तम जकाँ दैत अछि जे लोककैं समयक मूल्य बुझवाक थिक । समय अमूल्य सभक हेतु थिक कारण जे समयक उपर ककरो आधिपत्य नहिं । प्रत्येक व्यक्तिक हेतु जतवाक समय श्रीभगवान् निर्दिष्ट कैने रहैत छथीन्ह ततवहिमें हुनका अपन सब कर्त्तव्य करैक छन्हि । जे समय चल जाइत अछि तकरा केओ फिराय नहिं आनि सकैत अछि । एहि संसारमें उत्तम कार्य कै कै समयक उपयोग करवाक अधिकार सबकैं एके रूपक अछि । बुद्धिमान व्यक्ति एहि सब विचारकैं मनमें राखि समयक उपयोग उत्तम जकाँ करैत छथि किन्तु अज्ञानी लोक अपन दुर्भाग्यसँ समयक विशेषताक विना ज्ञान रखने आनन्द-प्रमोदमें समय बितैबाक मनोरथसँ इतस्ततः भ्रमण करैत समयक यापन करैत छथि जे विषय नितान्त हेय थिक । जँ तादृश श्रोताक हेतु ओ समय एतेक मूल्यवान् अछि तँ वक्ताक हेतु वैह समय ताहूसँ मूल्यवान् किऐक नहिं होएत एहि दिशि दृष्टि राखव विधेय थिक ।

गपशप में त्याज्य आधार

गपशपमें वक्ताकैं एहू विषय दिशि ध्यान देव उचित थिकन्हि जे श्रोताकैं कोन आधारक आलाप अप्रिय छन्हि। जँ ताहि विषयक ज्ञान भै सकै तँ ताहि आधारपर गपशप करव समुचित नहिं थिक किऐक तँ जानि बूझिकैं ककरहु अप्रिय विषय सुनाएव सभ्यताक बाहर थिक। कोन विषय ककरा अप्रिय होइत छैक एहू विषयकैं जानवाक हेतु किछु स्थूल नियम कहल जासकैत अछि, यथा—

१. तुल्य कक्षाक लोकक प्रशंसा सुनब सबकैं स्वभावतः असह्य होइत छैक। एहि विषयमें एक प्राचीन कथाक उल्लेख कैलासँ ई विषय स्पष्ट बुझवाक योग्य होएत।

वर्त्तमान दरभङ्गा महाराजक पूर्वपुरुष मिथिलाराज्यक स्थापक महामहोपाध्याय महेशठाकुर बङ्गाल, विहार क सूबेदार महाराज मानसिंहकैं निम्नलिखित कविता सुनौलन्हि :—

उपवीणयन्ति वरमप्सरसो नृप मानसिंह! तव दानयशः।
सुरशाखिमौलिकुसुमस्पृहया नमनाय भूरि यतमानतमाः॥

एकर अर्थ ई थिक जे हे राजन् मानसिंह! कल्पवृक्षक अग्रपर जे फूल छैक तकर प्राप्तिक हेतु ओकरा नवेवाक हेतु अत्यन्त यत्न कैनिहारि अप्सरा सव अपनेक दानयशकैं वीणापर गवैत छथि। तात्पर्य ई थिक जे राजा मानसिंहक दान-यशकैं सुनिकैं कल्पवृक्ष लज्जित भै अपन माथ झुकाय लैत छथि। भाव ई भेल जे समकक्ष प्रतिद्वन्द्वीक यशकैं सुनिकैं लोक संकुचित भै जाइत छथि तैं हेतु एतादृश आधारक वार्त्तालापक प्रसङ्ग त्याज्य थिक।

२. यदि केओ एहेन कार्य कैने होथि जे सर्वजनानुमोदित नहिं भैसकैछ, ताहि कार्यक निन्दाक प्रसङ्गक विषय किछु लोक सुनै नहिं चाहैत छथि। दृष्टान्तक हेतु एक उदाहरण लेल जाय, सभ्य समाज एहि बातक अनुमोदन करैत अछि जे यदि ककरहु प्रौढ़ अवस्था में पत्नी वियोग भेलन्हि और हुनका पुत्रसन्तति छन्हि तखन पुनः द्वितीय विवाह करब समुचित नहिं थिक। मानि लेल जाय कि केओ सज्जन पूर्ववर्णित स्थिति रहलहु पर विवाह कैने छथि तखन हुनक लग यदि केओ वक्ता संयमी, एकनारीव्रत पुरुषक प्रशंसा करथि तँ ओ प्रशंसा हुनक हेतु अप्रिय होएतैन्हि तैं हेतु एतादृश आधार गपशप में त्याज्य थिक।

३. श्रोताक जीवनमें यदि कोनो शोकावह घटना भेल होइन्हि अथवा कतहु ओ अपमानित भेल होथि ताहि प्रसङ्गक गपशप हुनक हेतु अप्रिय होइत छन्हि अतएव तादृशो आधार छोड़ि देवाक योग्य थिक।

४. यदि ककरो जीवनमें विफलता भेल होइन्हि और तत्काल ओ सफल जीवन में होथि तँ ओहि विफलताक प्रसङ्गक गपशप हुनका अप्रिय होइत छन्हि तैं हेतु ताहू प्रसङ्गकैं नहिं उठैवाक थिक।

५. ककरहु वेतनक विषयमें गप करब समुचित नहिं। कतेक प्रकारक सुविधा देखिकैं लोक अल्पो वेतनमें नौकरी-चाकरी करैत छथि। अल्प वेतन कहवामें लोक संकोचक बोध करैत छथि तैंहेतु वेतन सम्बन्धहुक चर्चा समुचित नहिं। एवं ककरो वयसक संबन्ध में जिज्ञासा समुचित नहिं। थोड़ वयसमें अधिक कार्य लोककैं प्रशंसादायक होइत छैक किन्तु अधिक वयसधरि अल्प काज निन्दामूलक होइत छैक। द्वितीय

बहुत लोककैं वयसजन्य समुचित स्वरूप नहिं रहैत छन्हि तेहना सब स्थितिमें लोक अपन यथार्थ वयस कहवा में संकोच बोध करैत छथि। एवं जाहि कोनो प्रसङ्गक यथार्थ उत्तर देवामें लोककैं संकोच बोध करबाक संभावना होइन्हि ताहि आधारक गपशप कदापि नहिं कर्त्तव्य थिक।

६. केओ व्यक्ति अपन विरोधी शत्रुक उन्नतिक विषय सुनवाक इच्छुक नहिं रहैत छथि तैं हेतु यदि ई विषय अवगत हो जे अमुक व्यक्ति श्रोताक विरोधी अथवा शत्रु थिकथीन्ह तँ तनिक अभ्युदयक प्रसङ्गक गपशप नहिं कर्त्तव्य थिक।

७. यदि ई विदित हो जे श्रोताकैं अमुक व्यक्तिसँ शत्रुता वा चीढ़ छन्हि तखन अपनाकैं ताहि व्यक्तिक संबंधी वा मित्र कहव गपशपक प्रसङ्गमें उचित नहिं थिक। मनुष्यक ई साधारण धर्म थिकैक जे अपन संबंधी और मित्रकैं मित्र बुझैत अछि तथा विरोधीक संबंधी और मित्रकैं विरोधी बुझैत अछि तैंहेतु तादृश लोकपर तथाविधे भाव होइत छैक। बहुत पैघ विवेकशील मनुष्य यद्यपि एहि सब विषयपर ध्यान नहिं दैत छथि तथापि मनोविज्ञानक उपयोग व्यवहारदशामें कर्त्तव्ये थिक।

८. जे लोक जाहि व्यवसायक रहैत छथि तनिकाँ ताही व्यवसाय सम्बन्धी गपशप इष्ट होइत छन्हि। व्यापारी लोककैं साहित्यचर्चामें कोन स्नेह? हुनका हेतु तँ देश-देशमें कोन वस्तुक माँग केहन छैक तकर पूर्ति कोना भैसकैत छैक सैह गपशप प्रिय होइत छन्हि। एवं कोनो गणितज्ञक लग दर्शनशास्त्रक चर्चामें हुनका की अभिनिवेश होएतैन्हि। एवं कोनो वेदान्तीक लगमें सर आइजक निउटनक

आविष्कारक चर्चा कोन स्नेहकैं आनि सकत ! तैं हेतु जे जाहि रुचिक लोक होथि तनिक सङ्ग तथाविधे आलाप समुचित ।

उन्नतिशील वर्धमान मनुष्य हर्षहिक विषयकैं विचारल करैत छथि, हुनक सोझामें दीनताक विषय रुचिकर नहिं होइत छन्हि । हुनक सोझामें यदि केओ आगन्तुक दीनताक विषयकैं अनैत छथि तँ ओ तकरा शिष्टताक दृष्टिसँ सुनि तँ लैत छथि और यद्यपि अपन अप्रिय भाव कैं प्रकाशित नहिंओ होमै दैत छथि तथापि ओ विषय हुनक हेतु हृदयसँ अरुचिकर रहैत छन्हि । अतएव उन्नतिशील लोकक सोझामें उन्नतिहीक विषय पर गपशप करब समुचित । हमरा लोकनि एहि विषयक आभास नीतिशास्त्रमें पवैतछी :—

प्रसरति मतिः कार्यारंभे दृढ़ीभवति स्मृतिः
स्वयमुपनयन्नर्थान्मन्त्रो न गच्छति विप्लवम् ।
स्फुरति सफलस्तर्कश्चित्तं समुन्नतिमश्नुते
भवति च रतिः श्लाघ्ये कृत्ये नरस्य भविष्यतः ॥

अर्थात् होनहार लोक जखन कोनो कार्यक आरंभ करैत छथि तखन हुनक बुद्धि पसरैत छन्हि अर्थात् कार्यक पूर्त्तिक निमित्त नाना-प्रकारक उद्योगक उद्भावन मनमें अबैत छन्हि और हुनक स्मृति स्थिरताकैं प्राप्त करैत छन्हि । हुनक विचार अभीष्ट अर्थक साधन करैत अछि किन्तु ककरो बोधगम्य भै अपन विशेषताकैं नष्ट नहिं करैछ । हुनक तर्क सफल होइत छन्हि, चित्तमें आनन्द होइत छन्हि और श्लाघनीय कार्यहिमैं मन लगैत छन्हि ।

गपशपक प्रसङ्ग

गपशपक प्रसङ्ग विशेषकैं प्रयोजनानुसार होइत अछि, अनेक अवसरमें निष्प्रयोजन गपशप होइत अछि। प्रयोजनीय गपशप तखन होइत अछि जखन ककरहु ओहिठाम जायकैं कोनो जिज्ञासा कैल जाइत अछि और निष्प्रयोजन गपशप रेल इत्यादिक यात्रामें होइत अछि। परन्तु एक दृष्टिसँ इहो गपशप निरर्थके नहिं थिक कारण जे एहिसँ मनोविनोद होइत अछि। और यदि एहि गपशपक परिणाम ककरहु हेतु फलद सिद्ध होइन्हि ताहि स्थितिमें तँ ओ गपशप प्रयोजनीय सिद्ध होइछ। तैं हेतु ई ध्येय रखबाक थिक जे गपशप सर्वदा सफल हो।

साधुलोकक संग जे आलाप होइत अछि ओ सर्वदा उत्तम फल कैं दैत अछि। गोस्वामी तुलसीदासजी अपन रामायणमें लिखने छथि—

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुला इक अङ्ग।
तुलै न तुलसी सकलमिलि जो सुखलव सतसंग।

जँ तराजूक एक पलरा पर स्वर्ग और मोक्षक सुख राखल जाय और दोसर पलरापर सत्सङ्गक सुखक कण तँ कणवाला पलरा भारी भैजयतैक, सारांश ई थिक जे सज्जनक सङ्गति फलदायिनी होइत अछि। ओहिमें सर्वत्र इष्टसाधने छैक।

एक विद्वान् सतसङ्गतिक विषयमें लिखने छथि—

दूरीकरोति कुमतिं विमलीकरोति चेतश्चिरन्तनमघं चुलुकीकरोति।
भूतेषु किंच करुणां बहुलीकरोति संगः सतां किमु न मङ्गलमातनोति॥

सज्जनक संगतिसँ कुमति दूर होइत अछि, अन्तःकरण निर्मल होइत

अछि, पुरान पाप नष्ट होइत अछि, प्राणीक उपर दयाभाव बढ़ैत अछि, एहेन कोन मङ्गल अछि जे एकर द्वारा साधित नहिं होइछ ।

तैंहेतु बहुधा साधारणो गपशपसँ जे कि विना प्रयोजनक आरंभ कैल जाइत अछि बहुत उत्तम फल भेटैत अछि ।

अंगरेजक गपशप

एहेन कहल जाइत अछि जे युरोपिअन जातिमें अंगरेज जातिक चरित्र बड़ उत्कृष्ट अछि । सज्जन और सहृदय कवि गोल्डस्मिथ युरोपीय लोकक चरित्रक वर्णनक प्रसङ्गमें अंगरेज जातिक विषयमें कहने छथि "Here goes the lord of man" अर्थात् ई मनुष्यक अधीश्वर जाय रहल छथि, हुनक दृष्टि में अंगरेज सर्वश्रेष्ठ मनुष्य थिकाह । फ्रांस देशक परमवीर नेपोलिअन बोनापार्ट, तत्सामयिक दुइ अङ्गरेज फौक्स और कौर्नवालिस साहेबक विषयमें कहने छथि "They were ornament to mankind" अर्थात् ओ दूनू व्यक्ति मनुष्य जातिक अलङ्कार रहथि ।

एहि जातिक विषयमें कहल जाइत अछि जे ओ लोकनि कौखन अपरिचित व्यक्तिसँ वार्त्तालापक आरंभ नहिं करैत छथि । एक मेज-पर दूइ सज्जन भोजन करैत रहताह किन्तु अपरिचित अवस्थामें एक दोसराक संग आलापक आरंभ नहिं करताह । जखन एक तृतीय सज्जन जे हुनका दूनू गोटासँ परिचित होथि हुनका दुनू गोटामें परिचय कराय देथीन्ह तैखन ताहि दुनू व्यक्तिमें गपशप होएतैन्हि । ई हुनका लोकनिक जातिगत रीति छन्हि । हमरहु लोकनिक शास्त्रमें 'सतां सासपदं मैत्र्यम्' कहलगेल अछि, अर्थात् सात शब्दक आलाप भेनहिं

एकसँ दोसराकैं मैत्री भैजाइत छन्हि । अंगरेजक बातचीत हुनक मित्रताक भाव थिक; तैंहेतु ओ लोकनि बहुत सँभरिकें ककरहु संग आलाप करैत छथि । और जँ आलाप करैत छथि तँ तनिक मित्र बनि जाइत छथि ।

कहबाक अभिप्राय ई अछि जे गपशपकैं सब अवस्थामें सफल बनैबाक हेतु दृष्टि रखबाक थिक । मनुष्यकैं जे शक्ति भगवान्सँ भेटल छन्हि तकर व्यय सब अवस्थामें होइत छैक चाहै ओ गपशप हो, लिखब हो, पढ़ब हो वा कोनो विचार करब हो । एहेन परिस्थितिमें गपशपमें जे शक्तिक व्यय कैल जाइत अछि ओ यदि सफल हो तँ ताहि शक्तिक विनियोग भेल अन्यथा ओ शक्ति निरर्थक भेल तैंहेतु गपशप कैं सफल बनाएब विधेय थिक ।

गपशपक विशेषता

कवि गोल्डस्मिथ एक स्थानमें लिखने छथि "Is there any purer gem than the human heart" अर्थात् मनुष्यक हृदयसँ बढ़िकैं पवित्र की कोनो रत्न अछि ? वस्तुतः मनुष्यक हृदयसँ बढ़ि कैं कोनो रत्न नहिं अछि । मनुष्यक हृदये सर्वश्रेष्ठ रत्न थिक किऐक तँ रत्नमें तकर प्रकाश, सौन्दर्य, आह्लादकत्व, अन्य पदार्थक अपेक्षा विशेषत्व और साधारणतया अलभ्यत्व यैह सब ओकर साधारण गुण थिकैक । मनुष्यक हृदय एहिसँ बढ़िकैं गुणवान् और अमूल्य एहि हेतु थिक जे एकर प्रकाश बाह्य जगत्कै भेदनकै अन्तर्जगत तक पहुँचैत अछि । अर्थात् दोसरौक हृदयपर एकर प्रभाव पड़ैत छैक । रत्नकैं केवल देखला पर आह्लादकता अबैत छैक किन्तु हृदयक

आह्लादकता स्मरण भेलहुपर बनल रहैत छैक। रत्न जकर अधिकार में रहैत छैक केवल तकरहि सुखी बनवैत छैक, किन्तु उत्तम हृदयक संपर्कमें ऐनिहार जनसाधारण सुखी भैजाइत अछि। संसारमें प्रसिद्ध कोहिनूर रत्न राजा लोकनिक जिम्मा में छलन्हि, अहू समय में भूतपूर्व भारतेश्वरक मुकुटक शोभाकै बढ़ाय रहल छन्हि परन्तु एकर कान्तिसँ केवल धारण कैनिहारे कान्तिमान होइत छथि जखन कि उत्तम हृदयक प्रभावसँ अनेक मनुष्य प्रभान्वित होइत छथि। ई प्रभा ताहि अन्तस्तम कै दूर करैत अछि जतै रत्नक प्रभाकै पहुँचवाक संभावनो नहिं छन्हि। अग्निदेव तथा सूर्यनारायणहुक प्रकाश जाहिठाम नहिं पहुँचैत अछि। रत्न अनेक उच्चाभिलाषीक उच्चाभिलाषाक विषय भैचुकल अछि। एकर प्राप्तिक हेतु कतेक विवाद कतेक लड़ाई कतेक जन-संहार भैचुकल अछि और औखन होइत अछि और भविष्यहुमें होएवाक संभावना अछि, परन्तु सुन्दर हृदय ककरो ईर्ष्याक विषय नहिं होइत अछि। एकर अपहरणक हेतु केओ यत्नवान् नहिं होइत छथि। एहि प्रकारक जे विशिष्ट गुणयुक्त मनुष्यक हृदय अछि तकर अभिव्यक्तिक एक मार्ग गपशप थिक तैंहेतु ताहि प्रकारक गपशप संपादनीय थिक जाहिमें एतादृश प्रकाशवला, सुखदायक, विशिष्ट हृदयक अभिव्यक्ति भैसकैक। तादृश गपशप विशिष्ट गपशप बुझल जा सकैछ।

गोल्डस्मिथ कवि human heart मानव हृदय कहिकै ई देखौलन्हि अछि जे पवित्र हृदय मनुष्य मात्रक भैसकैत अछि तथापि प्रशंसित हृदयक अभिव्यक्ति अल्प अवसर पर विरले लोकमें पाओल जाइत अछि।

ई प्रासङ्गिक विषय बूझि पड़ैछ जे किछु उदाहरण एतादृश सत्-

हृदयक प्राचीन ग्रन्थसँ उद्धृत करी।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

वाल्मीकि

हे निषाद! अहाँ बहुत वर्षधरि प्रतिष्ठाकेँ प्राप्त नहिं करब जैं हेतु क्रौञ्चक्रौञ्ची-युगलमें काममोहित एककैं अहाँ मारल।

ई उद्गार कविक पवित्र तथा उदार-हृदयसँ बाहर भेलन्हि जखन कि संसारमें छन्दक प्रवृत्तिओ नहिं छलैक।

सुरुचि ध्रुवसँ कहैत छथीन्हः—

दीर्घं श्वसन्ती वृजिनस्य पारमपश्यती बालकमाह बाला।
माऽमङ्गलं तात परेष्वमंस्था भुंक्ते जनो यत्परदुःखदस्तत्।
उत्तिष्ठ तत्तात विमत्सरस्त्वमुक्तं समात्रापि च यदव्यलीकम्।
आराधयाऽधोक्षजपादपद्मं यदिच्छसेऽध्यासनमुत्तमो यथा॥

श्रीमद्भागवत

दीर्घ श्वासकैं फेंकैत दुःखक अन्तकैं नहिं देखैत सुरुचि बालक ध्रुवकैं कहलन्हि, हेतात! दोसराक अमङ्गल जनु चाही, दोसराकैं दुःख देनिहार व्यक्ति ताहि दुःखक भोग स्वयं करैत अछि। तैंहेतु अहाँकैं सतमाय जे किछु विरुद्ध बात कहलन्हि ताहि विषयमें ईर्ष्यारहित भैकै अहाँ उठू और उत्तम जकाँ जँ अहूँ पिताक आसन प्राप्त करै चाहैत छी तँ श्रीभगवान्क चरणकमलक आराधन करू।

केहेन सुन्दर हृदय अछि दोसराक कैल अपकार पर कनेको मत्सरता नहिं। दुःख-शान्तिक उपाय केवल श्रीभगवान्क चरणक आराधन।

रूपस्य हर्त्री व्यसनं बलस्य शोकस्य योनिर्निधनं रतीनाम् ।
नाशः स्मृतीनां रिपुरिन्द्रियाणामेषा जरा नाम ययैष भग्नः ॥
पीतं ह्यनेनापि पयः शिशुत्वे कालेन भूयः परिमृष्टमुर्व्याम् ।
क्रमेण भूत्वा च युवा वपुष्मान् क्रमेण तेनैव जरामुपेतः ॥
स्थूलोदरः श्वासचलच्छरीरः स्रस्तांशबाहुः कृशपाण्डुगात्रः ।
अम्बेति वाचं करुणं ब्रुवाणः परं समाश्लिष्य नरः क एषः ॥
बुद्धीन्द्रियप्राणगुणैर्वियुक्तः सुप्तो विसंज्ञस्तृणकाष्ठभूतः ।
संबध्य संरक्ष्य च यत्नवद्भिः प्रियाप्रियैस्त्यज्यत एष कोऽपि ॥

गौतम बुद्धक उक्ति

रूपकैं हरण कैनिहारि, बलक नाशकैनिहारि, शोकक कारण, रतिक सर्वनाश, स्मरणशक्तिक नाशक, इन्द्रिय-समूहक शत्रु, एहि वृद्धावस्थासँ ई व्यक्ति भग्न भेल छथि। इहो व्यक्ति बाल्यकालमें दूध पीने छथि, क्रमसँ पृथिवीक स्पर्शें दृढ़ भेल छथि और पुनः सुन्दर युवा भैकै तत्काल वृद्धावस्थाकैं प्राप्त भेल छथि । बड़काटा पेट छन्हि, शरीरसँ श्वास बाहर भै रहल छन्हि, वक्षस्थल और बाहु जकड़ि गेल छन्हि, शरीर दुर्बल और पीअर भैगेल छन्हि, मा, मा करुणापूर्वक बाजि रहल छथि, दोसराक शरीरकैं पकड़ने ई मनुष्य के थिकाह । बुद्धि इन्द्रिय, प्राण इत्यादि गुण जनिक शरीरसँ चल गेल छन्हि तृण-काष्ठ जकाँ जनिकाँ संज्ञा नहि छन्हि, बान्हिकै बड़े यत्नसँ रक्षा करैत प्रिय अप्रिय दूनूसँ ई के त्यागल जारहल छथि ?

वृद्ध मृत पुरुषक केहेन करुणापूर्वक वर्णन ई बुद्धमहाराजक अछि। एतादृश भाव पवित्र हृदयहिसँ बाहर भैसकैत अछि ।

"योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां संजीवयत्यखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना ।

अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन् प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम् ।।

समस्त शक्तिकैं धारण कैनिहार जे पुरुष हमर अन्तःकरणमें प्रवेशकै अपन तेजसँ सुतल हमर एहि वाणीकैं जगवैत छथि तथा अन्य हाथ, पैर, कान, त्वचा, आदि इन्द्रिय तथा प्राणकैं कार्यक्षम करैत छथि ताहि भगवान्कैं हम नमस्कार करैतछी।

पापः खलोऽयमिति नार्हसि मां विहातुं किं रक्षया कृतमतेरकुतो भयस्य।
यस्मादसाधुरधमोऽहमपुण्यकर्मा तस्मात्तवास्मि नितरामनुकम्पनीयः ।।

हे भगवन्! अहाँकैं तँ ककरो डर नहिं अछि और लोक-रक्षा अपन कर्त्तव्य मानल अछि तखन पापी, खल हमराकैं त्याग करब उचित नहिं थिक। जैं हेतु हम असाधु छी, अधम छी, अपुण्यकर्मा छी तैंहेतु अपनेकैं हमर उपर और विशेष कृपा करबाक थिक।

क्षीरसारमपहृत्य शङ्कया स्वीकृतं यदि पलायनन्त्वया।
मानसे मम नितान्ततामसे नन्दनन्दन! कुतो न लीयसे ।।
नीतं यदि नवनीतं नीतं नीतं किमेतेन।
आतपतापितभूमौ माधव मा धाव मा धाव ।।

हे कृष्ण! यदि अपने नेनु चोराय डरसँ पड़ायकै कोनो ठाम नुकाय चाहैत छीतँ अत्यन्त अन्धकार जे हमर मानस अछि ताहीमें किएक ने नुकाय रहैतछी? अहाँ यदि नेनु लेल तँ लेल एहिसँ की? हे माधव, सूर्य-तेज सँ धीपल भूमिपर जनु चली जनु चली।

लेखहुसँ लेखकक परिचय होइत छैक परञ्च लेखक विषय ससीम होएबाक कारणैं लेखकक सब व्यक्तित्व प्रकाशित नहिं होइत छन्हि, किन्तु गपशपमें विषय यथेष्ट होएबाक कारणैं तकर द्वारा लोकक हृदयक पता लागि सकैत अछि। गपशपक शिष्टाचारक अनुकूल गपशप

करैत वक्ता अपन हृदयकैं व्यक्त करितहि छथि जाहिसँ लोकक व्यक्तित्वक ज्ञान भैजाइत अछि। एकर अतिरिक्त वक्ता कोन रुचिक कतेक योग्यताक और केहेन विवेकी छथि एहि सब बातक पता बुद्धिमान लोककैं आलापसँ भेटि जाइत छन्हि।

यद्यपि संसारमें सब लोक अपन-अपन अर्थक साधनमें लागल रहैत छथि तकरे साधनमें ककरो उपकार वा अपकार साधित होइत छैक। जानि बूझिकै केओ ककरो उपकार वा अपकारमें लागल नहिं रहैत अछि तैं हेतु अनेक सज्जन सहृदय लोककैं ई संसार बसबाक योग्य विषय नहिं बूझि पड़ैत छन्हि कारण ओतँ अपन हृदयक अनुसार सर्वत्र सहानुभूतिक इच्छुक रहैत छथि तथापि एहि संसारमें किछु एहनो महात्मा लोक छथि जनिक साहचर्य एहि जगत्कैं सुखमय बनाय दैत अछि। हुनक गपशप अमूल्य होइत अछि। ओहिसँ लोककैं बहुत सहायता भेटैत छैक जखन कि लोककैं एहि जगत्में रहब भारभूत होइत छन्हि ताहि स्थिति में ओ गपशप जीवनदानक कार्य करैत अछि श्रोताकैं अपन कर्त्तव्य-पथमें जयबाक हेतु उत्साहित करैत अछि। एतादृश उदार परोपकारी तथा सज्जन व्यक्तिक परिचयो तँ गपशपक द्वारहि होइछ। ई संसार रहबाक योग्य अछि, एकक सहानुभूतिसँ दोसरकैं लाभ भैसकैत छन्हि, मनुष्यहुक स्वरूप में देवता वास करैत छथि, मनुष्य-जीवनक आदर्श की थिक एहि सब विषयहुक परिचय तँ आलापहिसँ भैसकैत अछि तैंहेतु गपशप एक एहेन मार्ग थिक जाहिसँ साधु लोकक परिचय भैकै हुनक द्वारा जीवन सुखमय भैसकैत अछि। अतएव कोनो गपशपमें बड़ विशेषता रहैछ। जखन ईश्वर मनुष्यकैं बजबाक शक्ति देने छथि तखन तकर सुन्दर जकाँ उपयोग कर्त्तव्य थिक। प्रत्येक

इन्द्रिय जे गुण-ग्रहण करैत अछि ताहिमें गुण-दोष दूनू रहैत छैक। हमरा लोकनि भागवतक कथो सुनि सकैतछी और दुष्टलोकक दुर्वाक्यो; एवं आँखिसँ देवता, गुरु, ब्राह्मणक दर्शन कै सकैतछी और नट-भाँड़हुक क्रिया देखि सकैतछी; एवं नासिकासँ सुगन्धि, दुर्गन्धि दुनूक घ्राण भैसकैत अछि किन्तु कर्त्तव्य ई थिक जे दुष्ट वस्तुकैं छोडि गुणाहिक ग्रहण करी। एही रूपैं वाणीक द्वारा हमरा लोकनि दुर्वाक्यहुक प्रयोग कैसकैत छी और सुन्दर आलापक द्वारा दोसराक हृदयहु कें आप्यायित कै सकैत छी। जाहि गपशपक द्वारा दोसराक हृदयमें प्रेम, आदर और श्रद्धा उत्पन्न कै सकी सैह सुन्दर गपशप थिक और तादृशे गपशप वाञ्छनीय थिक। और एतादृश आलाप सदिच्छा तथा सदभ्याससँ उपार्जित कैल जासकैछ। नीतिमें कहलगोल अछि 'वाक् चतुर्थीच सूनृता' वाणी सुन्दर वजबाक थिक, परमर्मच्छेद कदापि नहिं। मनु महाराजक उपदेश अछि 'ययास्योद्विजते वाचा नालोक्यां तामुदीरयेत्' जाहि कथाकैं सुनलासँ श्रोता उद्वेगकैं प्राप्त होथि लोकमें नहिं वजबाक योग्य ताहि कथाकैं कदापि नहिं वक्तव्य थिक। तुलसीदासजी सन्त-असन्तक समागमक संबन्धमें जे ई चौपाई कहने अछि "मिलत एक दारुण दुख देहीं, बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं" तकरो अभिप्राय यैह थिक जे एक व्यक्ति एहेन वाक्य वजैत छथि जकरा सुनिकै दारुण कष्ट होइत अछि और एक सज्जन एहेन सुन्दर हृदय-संतोषकारक वाक्यकैं कहैत छथि जकरा सर्वदा सुनवाक इच्छा बनल रहैत अछि। अतएव एतादृश वक्ताक जखन वियोग होइत अछि तखन अत्यन्त कष्टक बोध होइत अछि। सुन्दर कथा एतेक प्रिय होइत अछि जे अर्जुन श्रीभगवान्‌कैं कहलथीन्ह "भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्" और कहू एहि

अमृततुल्य वाक्यकैं सुनैत हमरा तृप्ति नहिं होइछ। तैंहेतु ओ गपशप विशिष्ट थिक जकरा सुनवामें क्रमशः प्रीति बढ़ले जाय। तादृश गपशप संपादनीय थिक जे कि एक विशिष्ट सभ्यता-द्योतक आलाप कहाओल जासकैछ।

गपशपक प्रसङ्ग

१. ईश्वर मनुष्य कैं वाणी देने छथीन्ह तैं लोककैं स्वभावतः ई प्रवृत्ति होइत छैक जे किछु बाजी। बजवाक प्रवृत्ति बौक लोकोमें देखल जाइत अछि; यद्यपि तकर कोनो फल नहिं होइत छैक। जँ केओ एकसर किछु बाजथि तँ से अरण्यरोदन सदृश होएतैन्हि तैंहेतु एक व्यक्ति कैं दोसराक संग आलापक प्रयोजन होइत छन्हि। यद्यपि अभिप्राय कैं व्यक्त करवाक हेतु आकार, चेष्टा, इशारा, हँसी-रोदन और लेख इत्यादि प्रकार अछि तथापि वाक्य-विनिमय सवसँ उत्तम प्रकार थिक।

२. श्रम कैला पर आरामक इच्छा लोक कें स्वाभाविक होइत छैक। थाकल मन किछु बजवाक हेतु उत्सुक रहैत अछि तैंहेतु गपशपक द्वारा लोक अपन श्रम कै दूर करैत छथि।

३. मनुष्य स्वभावतः कुतूहली होइत छथि। कोनो कुतूहलजनक विषय जानवाक हेतु हुनकामें उत्सुकता रहैत छन्हि, एहि उत्सुकताक निवारण गपशपहिक द्वारा कैल जाइत अछि।

४. प्रत्येक मनुष्यकैं अनेक आवश्यकता रहैत छन्हि ताहि सभक पूर्त्तिक हेतु दोसराक सहायताक अपेक्षा रहैत छन्हि तैंहेतु एक व्यक्ति दोसराक ओतै अपन आवश्यकता जनाय तकर पूर्त्ति करैत छथि। एकर

माध्यम गपशपे थिक।

५. अनेक समय शिष्टाचारक दृष्टिसँ एक व्यक्ति जे दोसराक ओतै अपन विनय प्रकाशित करैत छथि और तकर उत्तरमें जे आश्वासन प्राप्त करैत छथि ओहो गपशपे थिक।

६. अनेक साधु महात्मा कोनो पुस्तककैं पढायकैं वा व्याख्यान दैकै लोकमें शिक्षा नहिं दैत छथि किन्तु भेंट भेला पर जिज्ञासुक अभिप्राय कैं बूझिकै अपन उत्तरक द्वारा जे हुनका लोकनिक संशयकैं हँटबैत छथि ओहो गपशपहिक रूप थिक।

७. जखन ककरो ओहि ठाम केओ अतिथि अबैत छथि तखन हुनका आराम और शान्ति देवाक निमित्त गृहस्थ वाक्यक द्वारा जे हुनक सत्कार करैत छथि ओहो आलाप गपशप थिक।

८. केओ व्यक्ति कतहु उपस्थित भैकैं अपन जे परिचय दोसराकैं दैत छथि तथा ओ व्यक्ति आगन्तुकसँ जे जिज्ञासा करैत छथीन्ह ओहो आलाप गपशपे थिक।

अवसरक प्रतीक्षा

एहेन बहुत अवसर अबैत छैक जखन कोनो सज्जनसँ गपशप करवाक हेतु अनेक सज्जन उपस्थित रहैत छथि। मान्य पुरुष स्वयं एहि विवेकसँ युक्त रहैत छथि जे ओ सब आगन्तुकसँ भेंट करथि और सभक अभिप्राय कैं बूझथि, परन्तु ई कार्य एकधा तँ होएवाक योग्य रहैत नहिं छैक कारण जे सभक अभीष्ट भिन्न-भिन्न रहैत छन्हि तैंहेतु ओ सवसँ पृथक् भेंट कैकै पृथक् पृथक् उत्तर दैत छथि। एतादृश स्थितिमें आगन्तुककैं एतादृश चाञ्चल्य देखाएव समुचित नहिं जे सवसँ पहिने

वैह गपशप कै लेथि। अथवा जखन ओ मान्य पुरुष ककरहु संग आलाप के रहल छथि तकर मध्यहिमें अपन गपशप प्रारंभ करब समुचित नहिं और तादृश व्यवहार कैलासँ गपशपक समुचित फलो प्राप्त नहि होइत छैक। तैं हेतु ओ मान्य पुरुष यावत्काल धरि स्वयं नहि बजावथि वा यावत्काल धरि बजवाक अवसर आगन्तुककैं नहिं देथि ताधरि बड़े संयम पूर्वक प्रतीक्षा कर्त्तव्य थिक।

सुनल जाइत अछि जे कलकत्ता हाइकोर्टक जज और ओही विश्वविद्यालयक उपकुलपति (Vice chancellor) सर आशुतोष मुकर्जीक ओहिठाम भेट कैनिहार लोकक भीड़ लागि जाइत छलन्हि परन्तु ओ मान्य पुरुष प्रत्येक व्यक्तिसँ मिलिकै बड़ प्रीतिपूर्वक गपशप केकै हुनका लोकनिकैं उत्तर दैत छलथीन्ह। एहेन कहिओ नहि होइत छलैक जे केओ व्यक्ति प्रतीक्षामें रहिए गेलाह और ओ हुनका किछु नहिं पुछलथीन्ह।

गान्धीजी जखन एतेक प्रसिद्ध नहिं भेल रहथि, जखन हुनक कार्य-क्षेत्र दक्षिण अफ्रिकामें छलन्हि तखन ओही ठामक विषयकैं लैकै ओ एकवेरि भारत अयलाह और बम्बईमें सर फीरोजशाहसँ भेंट करवाक हेतु गेलाह किऐकतँ ताहि समयमें कांग्रेसक मुख्यतम व्यक्ति वैह छलाह। गान्धीजी हुनक ओहिठाम जायकैं एक किनारमें वैसि रहलाह। जखन सव कार्य भैगेलैक तखन एक कोनमें वैसल गान्धीजीसँ ओ पुछलथीन्ह जे हुनक की कार्य छन्हि। तखन गान्धीजी अपन विषय हुनका कहलथीन्ह तैंहेतु मान्य व्यक्ति एहि बातकैं ध्यान में रखैत छथि जे हुनका ओहिठाम भेंटक निमित्त आएल कोनो व्यक्ति दुखी भैकै नहिं घुरथि और हुनक श्रम वृथा नहिं होइन्हि तैंहेतु प्रतीक्षा कर्तव्य थिक, चाञ्चल्य

नहिं देखैवाक थिक। प्रतीक्षाक स्थिति में अपनाकैं संयतभावसँ राखब बड़ पैघ गुण थिक। लोक बहुधा एहिसँ ऊबि जाइत छथि और धैर्य छोड़ि दैत छथि परन्तु कर्मयोगी व्यक्ति एहीमें आनन्द लैत छथि अतएव अंगरेजीमें ई सदुक्ति अछि Learn to labour and to wait लगातार कार्यमें लिप्त रहब और प्रतीक्षा करैत रहब ई गुण सिखवाक योग्य थिक। एही विषयकैं भारवि किरातमें कहने छथिः—

यशोऽधिगन्तुं सुखलिप्सया वा मनुष्यसंख्यामतिवर्त्तितुं वा।
निरुत्सुकानामभियोगभाजां समुत्सुकेवाङ्कमुपैति सिद्धिः॥

अर्थात् यश पैवाक इच्छासँ वा सुखपैवाक इच्छासँ अथवा मनुष्य में सर्वातिशायी होएवाक इच्छासँ जे व्यक्ति उत्सुकता-रहित भैकै कार्यमें लागल रहैत छथि तनिक कोरमें सिद्धि स्वयं उत्सुका भैकै चल अवैत छथीन्ह तैंहेतु प्रतीक्षामें अपनाकैं राखिकै कार्य में लागल रहब बड़ पैघ गुण थिक, अनेक समय एहि प्रतीक्षागुणक अभावमें कार्य बिगड़ि जाइत छैक तैंहेतु अपन अवसरक निमित्त प्रतीक्षामें रहब गपशपक सभ्यता थिक।

अर्जुनक तपस्याक प्रकरणमें एक श्लोक बड़ उपादेय अछि :—

न विसिस्मिये न विषसाद मुहुरलसतां न चाददे।
सत्त्वमुरुधृति रजस्तमसी न हतःस्म तस्य हतशक्तिपेलवे॥

अर्जुन जखन तपस्या करैत छलाह तखन हुनका ई विस्मय कहिओ नहिं भेलन्हि जे हम एहेन कठिन तपस्या कै रहलछी कारण जे तादृश विस्मयसँ तपस्या क्षीण होइत अछि "तपःक्षरति विस्मयात्"। हुनका ने ई विषाद भेलन्हि जे हम एहेन कठिन तपस्या कैओ रहलछी तथापि सिद्धिक अङ्कुरो नहि देखैतछी, ने हुनका कहिओ अपन कर्त्तव्य

में आलस्य ऐलन्हि, नष्टशक्तिक कारणेँ क्षीण रजोगुण तमोगुण हृदयकैं दृढ़ रखनिहार हुनक सत्त्वगुणकैं नष्ट नहिं कैसकल, अर्थात् सात्त्विकगुणक बलैं ओ-अन्न तपस्यामें एकरूपसँ लागल रहलाह। हुनका तपस्याक संपादने सिद्धिजन्य आनन्दकैं दैत रहलन्हि। कार्यमात्रक सिद्धिमें तपस्याक आवश्यकता छैक, जखन कोनोकार्यक सिद्धिक हेतु ककरहु ओहिठाम जाइ तँ तदर्थ जतेक संयम और धैर्यक प्रयोजन छैक तकर उपयोग कर्त्तव्ये थिक, कोनो कारणान्तरैं चाञ्चल्य हेय थिक। चाञ्चल्य रजोगुण तमोगुणक धर्म थिक, सत्त्वगुणक नहिं।

आकार

सरल रूपकैं धारण कैने बड़े शान्त भावसँ गपशपक उपक्रम कर्त्तव्य थिक। ताहि समयमें हाथ, पैर और आँखि पर आयत्तता राखब समुचित थिक "न पाणिपादचपलो न नेत्रचपलोऽनृजुः" ई मनुक आज्ञा अछि। हाथ, पैर, आँखिक चपलताक अर्थ थिक हाथसँ कोनो वस्तुकैं छुवि देब वा हाथसँ कोनो इशारा करब, पैरकैं डोलाएब, आँखिसँ कोनो विषयान्तरकैं देखब। ई सब स्वरूप वर्जित थिक। केवल श्रोताक दिशि देखैत बड़े संयम और मनोयोगसँ गपशप करबाक थिक।

यद्यपि गपशपक प्रकरणमें प्रयोजन गपशपसँ छैक लोकक स्वरूपसँ नहिं तथापि ई ध्यान देवाक विषय थिक जे कोनो इन्द्रियक चाञ्चल्य मनकैं चञ्चल बनवैत अछि फलतः गपशपमें चञ्चलता आएब स्वाभाविक थिक। दोसर विषय ई थिक जे श्रोता वक्ताक तादृश स्वरूपकैं देखिकैं हुनका चञ्चल बुझैत छथि। एक सज्जन कोनो नीक

लोकसँ भेंट करै गेलाह। आगन्तुकक सोझामें एक पैघ दर्पण दिवालमें लागल छलैक। ओहि आगन्तुकक गेलापर ओ नीक लोक अपन ई विचार प्रकाशित कैलन्हि जे ओ आगन्तुक यावत्कालधरि ओहिठाम वैसल छलाह अधिकांश समय हुनक दृष्टि दर्पणहिक दिशि अपन स्वरूपकैं देखवामें छलैन्हि और एहि नेत्रचाञ्चल्यक कारण ओ नीक लोक आगन्तुककैं चपल बुझलन्हि तैं हेतु अपन आकारकैं एहि सब दोषसँ बचैवाक थिक।

आलापमें स्वरक गंभीरता होएब उचित थिक ने ओ चरड हो ने हीन, एक प्रकारक हो। आलाप ठहरि-ठहरिकै करब समुचित नहिं किन्तु ओ लगातार हो अन्यथा श्रोताकैं वक्ताक कथनमें किछु बनाओटक भाव अबैत छन्हि। भाषा स्निग्ध और मधुर हो। बजवाक समयमें मुँहमें वैवर्ण्य नहि आबै, वाक्य अल्प किन्तु सारगर्भित हो। बजवाक उपक्रम एहेन हो जाहिसँ श्रोताक मनमें वक्ताक प्रति श्रद्धा उत्पन्न होइन्हि। मुँह, आँखि, ललाट और भौंहमें कोनो परिवर्त्तन लक्षित नहिं होइन्हि। एहि प्रकारक आलापक क आकार होएबाक थिक। एहि प्रकारक आकारसँ बजनिहार लोकक वाणी विरोधी लोकहुक चित्तकैं प्रसन्न करैत अछि।

सतर्कता

आइकाल्हिक संसारमें एतेक स्वार्थपरता अछि जे जखन केओ व्यक्ति कोनो मान्य व्यक्तिसँ भेंट करक हेतु जाइत छथितँ ओ मान्य पुरुष अपन मनमें यैह निश्चित कैने रहैत छथि जे आगन्तुक कोनो स्वार्थ-सिद्धि हिक हेतु आएल होएताह तैं हेतु ओहो आगन्तुककैं

उत्तर देवाक हेतु निश्चित विचारक रहैत छथि। एहेन स्थितिमें आगन्तुकक ई कर्त्तव्य थिकन्हि जे अपन गपशपक उपक्रम ताहि प्रकारसँ चलावथि जाहिसँ मान्य व्यक्तिकैं अपन संशय दूर होइन्हि और ओ अपन निश्चित विचारकै हटाय आगन्तुकक कथनकैं विचार-कोटिमें राखि सकथि और तदनुसार परामर्श दै सकथि। सारांश ई भेल जे वक्ता अपन स्वार्थकैं ततेक दबावथि और गपशपक तेहेन सिलसिला बान्हथि जाहिसँ श्रोता हुनक आलापकैं विचारणीय और उत्तरणीय बूझि सकथि अर्थात् श्रोताक धारणा उदासीनतासँ हँटिकै प्राकृतिक बनि जाइन्हि। तत्पश्चात् श्रोताकैं अनुकूल पाबि अपन विषयहुक प्रसङ्ग आनथि।

एहि प्रकारैं कार्य कैनिहार बुद्धिमान् लोकक विषयमें भवभूति मालतीमाधव में उत्तम जकाँ वर्णन कैने छथि—

बहिः सर्वाकारप्रगुणरमणीयं व्यवहरन्
पराभ्यूहस्थानान्यपि लघुतराणि स्थगयति।
जनं विद्वानेकः सकलमभिसन्धाय कपटैः
तटस्थः स्वानर्थान् घटयति च मौनं च भजते॥

विद्वान् लोक कातहिमें रहि मौन धारण कैने कपटैं सवकैं ठकैत अपन अर्थक साधन करैत रहैत छथि। लोककैं कनेको सन्देह करवाक अवसर नहिं दैत छथीन्ह। बाह्यतः अपन स्वरूप ओ व्यवहार एहेन सुन्दर और निर्लिप्त रखैत छथि जाहिसँ केओ हुनक हृदयस्थ अभिप्रायकैं बूझि नहिं सकैत छन्हि। एक विद्वान् बुद्धिमान् लोकक परिभाषा यैह करैत छलाह जे दोसराकैं अपन बुद्धिसँ अभिभूतकै सकथि; जनिक विचार दोसराक हेतु मानवाक योग्य विषय होइन्हि।

अंगरेजी में प्रसिद्ध छैक Fools make feasts wise men eat them बुड़बक लोक भोज करैत छथि और बुद्धिमान् लोक भोक्ता होइत छथि।

प्राचीनकालमें ग्रीस देशमें ताहि प्रकारक चोरी करब बुद्धिमत्ता बुझल जाइत छलैक जकरा आन लक्षित नहिं कै सकैत छल। एहि कार्यमें युलिसेस बड़ प्रसिद्ध छलाह तदर्थ हुनक प्रशंसा होइत छलन्हि। वर्त्तमानो समयमें बड़-बड़ पैघ राजनीतिज्ञ लोकनि जे राजदूत भैकै दोसर देशमें जाइत छथि तनिक बाह्यतः क्रियाक स्वरूप यैह रहैत छन्हि जे ओ तद्देशवासीक सेवाक हेतु प्रस्तुत रहैत छथि। यथार्थमें ओ साधन करैत रहैत छथि अपन देशक स्वार्थकै। तैं हेतु चालाकीसँ कार्यसाधन करब बुद्धिमत्ते बुझल जाइत अछि। अतएव गपशपमें एहि बुद्धिमत्ताक प्रयोग करब आवश्यक थिक। मानिलेल जाय जे वक्तासँ बुद्धिमान् श्रोता छथि और ओ वक्ताक एहि सब चातुर्यकै बूझि जाइत छथि तथापि कोनो क्षतिक विषय नहिं छैक कारण जे एहि क्रियामें कोनो ठकपना तँ छैक नहिं, केवल अपन बुद्धिमत्ता सँ कार्यसाधन करब छैक जकर उपयोग श्रोतो कोनो ने कोनो स्थितिमें करितहि होएताह तैंहेतु एहिमें कोनो अवस्थामें संकोच करबाक विषय नहिं छैक।

सारांश ई भेल जे गपशप कैं खूब सावधानतापूर्वक अपन लक्ष्य कैं स्थिर रखने कर्त्तव्य थिक जाहिसँ अभीष्ट विषयक सिद्धि हो। 'यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः' एहि नीतिक वास्तव अर्थ ई थिक जे यत्न कैलहु पर यदि सिद्धि नहिं हो तँ पुनः देखबाक थिक जे एहि यत्नमें कोन दोष रहिगेल। जाहि हेतु कार्यसिद्धि नहिं भै सकल अर्थात् ताहि दोषकैं अवगतकै पुनः से कार्य कर्त्तव्य थिक जाहिसँ सिद्धि

निश्चयेन प्राप्त हो एही प्रकारे गपशपहुक विषयमें धारणा रखवाक थिक जाहिसँ गपशपक अभिप्रेत सिद्ध हो।

ई विषय ध्यान रखवाक योग्य थिक जे जाहि कोनो कार्यक आरंभ करी ताहिमें सफले भेकै घुरी, कोनो कार्यमें असफल रहब श्रेयस्कर नहिं थिक। तैंहेतु 'गपशप' जाहिसँ सफल हो सैह मार्ग और क्रिया अवलम्बनीय थिक।

ध्यान देवाक योग्य विषय

गपशप ककरहु संग हो सर्वत्र शिष्टता रक्षणीय थिक किन्तु श्रोताक व्यक्तित्वक अनुकूल शिष्टाचारक स्वरूपक ध्यान राखब आवश्यक थिक। कोनो मित्रक संग आलापक जे स्वरूप होएत ओ अध्यापक वा गुरुजनक संगक नहिं होएत। अपन प्रभुक संग आलापक स्वरूप एहिसँ भिन्ने होएत तैंहेतु गपशपमें एहि सब विषयक विवेक राखब समुचित। गुरुजन तथा प्रभुवर्गक संग जे आलाप होइत अछि ताहिमें हुनका लोकनिक कथन सुनवाक अंश पैघ रहैत अछि और उत्तर देवाक अंश थोड़ रहैत अछि और जे किछु कहल जाइत अछि ओ थोड़ शब्दमें तथा नम्रतापूर्वक। प्रथमतः हुनकहि लोकनिकैं कहवाक अवसर देवाक थिक और जखन वक्ताकैं अपन बजवाक अवसर अवैन्हि तैखन शिष्टतापूर्वक अपन कथनकैं कहथि।

बहुत समय एहनो अवसर देखल जाइत छैक जे एक पक्ष अपन चर्चा कैं ताहिरूपें चलबैत रहैत छथि जे दोसराकैं किछु कहबाक अवसरे नहिं भेटैत छन्हि ताहू स्थिति में अपर पक्षकैं बड़ धैर्यपूर्वक सुनबाक चाही। असंयत तथा उत्तेजित भेकै अपन विषयकैं कहवाक हेतु कौखन

त्वरावान् नहिं होएवाक थिक । एतादृश त्वराक फल नीक नहिं होइत छैक । जे व्यक्ति थोड़ किन्तु ससार विषयकैं कहैत छथि वैह लोकक हृदयकैं आकृष्ट करैत छथि । पहिने धैर्यपूर्वक सुनब पश्चात् अवसर ऐला पर युक्तिसंगत उत्तर देवाक प्रभाव नीक होइत छैक ।

ग्रीसदेशक एक कथा छैक जे जाहि समयमें मासिडोनिआक राजा फिलिप छलाह ताहि समयमें डिमोस्थिनीज बड़ वक्ता रहथि और फिलिपक विरुद्ध एथेनिअन लोककैं उभाड़ैत छलाह; ताही समयमें एक फोशिअन नामक बड़ विद्वान् लोक रहथि ओ थोड़ बजैत छलाह किन्तु तत्त्व विषयहिकैं कहैत छलाह । ओ एक वेरि कोनो ठाम दूत बनायकैं पठाओल गेलाह । ओ जाहिठाम गेलाह तते जखन हुनक बजवाक अवसर ऐलन्हि और ओ बाजै लगलाह तँ हुनक कथनक समाप्ति नहिं ओ भेल छलन्हि तावत् मध्यहिमें अनेक व्यक्ति अनेक प्रश्न करै लगलथिन्ह । फोशिअन बिना ककरो उत्तर देने ताहि स्थानकैं छोड़िकैं चल अयलाह तथापि विजय फोशिअनक भेलैन्हि । अतएव जे किछु बाजी ओ सारभूत विषय भेने नीक थिक । बहुत बजवाक तथा अप्रासङ्गिक रूपैं बजवाक कोनो फल नहिं होइत छैक ।

प्रायः प्रत्येक वार्त्तालाप कोनो ने कोनो अभिप्रायसँ प्रेरित भैएकैं कैल जाइत अछि परन्तु अनेक अवसर पर वार्त्तालाप एही दृष्टिसँ कैल जाइछ जाहिसँ अपन अर्थ सिद्ध हो । परन्तु सब वार्त्तालाप फलप्रदे नहिं सिद्ध होइछ । एहिसँ ई अवगत होइछ जे वार्त्तालापहुमें किछु एहेन नियम छैक जकर यथाविधि पालन कैलासँ अर्थसिद्धि होइत छैक, अन्यथा नहिं । अवश्य बहुत समय लोक अपन अर्थसिद्धिक निमित्त चाटुकारिताक आश्रयण लैत छथि और ताहिसँ अपन अर्थ

क सिद्धि करैत छथि परञ्च स्वार्थसिद्धिक हेतु ई सर्वमान्य सिद्धान्त नहिं थिक।

एक बेरि एक सज्जन एक कर्मचारीक नियुक्तिक हेतु सूचना प्रकाशित करौलन्हि और प्रार्थी लोकनि कैं अपना ओहि ठाम बजाय ताहि व्यक्तिकैं स्वीकार कैलन्हि जनिक शिष्टाचारसँ ओ प्रसन्न भेलाह। वास्तव में अन्य योग्यता आने व्यक्तिमें हुनकासँ विशेष छलन्हि। आइ कालिहमें ई सार्वत्रिक नियम देखल जाइत अछि जे लिखित योग्यता प्रार्थीक अवगत भेलहु पर ओ साक्षात् बजाओल जाइत छथि और तखन हुनक संग आलाप कै इष्टव्यक्ति निर्वाचित होइत छथि। एकर अभिप्राय ई थिक जे साक्षात् परिचयमें लोकक वैशिष्ट्य नीक जकाँ विदित होइत छैक। तैं हेतु आलापमें किछु एतादृश नियमक पालन आवश्यक थिकैक जाहिसँ श्रोता आकृष्ट होथि और हुनक मनमें आगन्तुकक संस्कार वैसन्हि तखन इष्टसिद्धि होइत अछि। अतएव विशिष्ट शिष्टाचारक पालन गपशपमें आवश्यक थिक।

गपशप कौखन रसायनक कार्यकैं करैत अछि। लङ्कामें अशोक-वाटिकामें हनुमानजी रामविषयक कथाकैं एतेक सुन्दर रूपैं सुनौलन्हि जाहिसँ विश्वस्ता भै सीतादेवी श्री हनुमानसँ गपशप करै लगलीह और ताहि आलापक परिणाम ई भेलैक जे श्रीसीतादेवी यत्परो नास्ति आनन्दक अनुभव कैलन्हि। ओ स्पष्टरूपैं हनुमान्‌कैं कहलथीन्ह जे लोकमें ई उक्ति सत्य अछि जे सौ वर्षक उपरान्तो जीवन धारण कैनिहार लोककैं एकदिन आनन्द अवितहि छन्हि "एति जीवन्तमानन्दो नरं वर्षशतादपि" सीतादेवी सब आशाकैं छोडि देने छलीह, मरणक हेतु प्रस्तुत छलीह, एहनो परिस्थितिमें हनुमान्‌क संगक आलाप हुनक

प्राण धारण करवाक विषय बनल । एहिसँ स्पष्ट अछि जे आलाप अनेक समयमें रसायनक कार्य करैत अछि ।

बहुधा लोक जखन दुःखी रहैत छथि, जखन हुनक उपर कोनो दैवी घटना उपस्थित रहैत छन्हि, अथवा कोनो कार्यमें विफलता भेल रहैत छन्हि अथवा और कोनो कारणेँ उदासीन रहैत छथि ताहू स्थितिमें सुन्दर गपशप बड़ आश्वासनक कार्यकें करैत अछि । दुःखी जीव ताहि आलापकैं सुनिकै एतेक आश्वस्त होइत छथि जे उपस्थित दुःखकें संसारक स्वाभाविक विषय बूझिकें त्यागि दैत छथि और पुनः अपन कर्मक्षेत्रमें नवीन बल और उत्साहसँ अवतीर्ण भै जाइत छथि ।

केवल दुःख और विपत्तिहिक समयमें आलाप आश्वासन देनिहार होइत अछि एतवैक नहिं अपितु आनन्द और अभ्युन्नतिक समयहुमें सुन्दर गपशप ताहि आनन्दकै और बढ़वैत अछि अतएव सब अवस्थामें सभ्यतोचित सुन्दर गपशप अतुलनीय फलक देनिहार होइत अछि । तैंहेतु गपशप बड़ आवश्यक विषय थिक ।

चाटुकारिता

चाटुकारिता अर्थात् उचित अनुचित सब अवस्थामें प्रशंसा करब स्वार्थसिद्धिक हेतु सर्वदा सहायक नहिं थिक । एहिमें संशय नहि जे प्रशंसा सुनब सबकैं प्रिय होइत छैक परन्तु यदि प्रशंसा अप्रासङ्गिक, निराधार वा असत्य होइक तँ बुद्धिमान् लोक तादृश प्रशंसाकैं सुनिकै अप्रसन्न भै जाइत छथि और वक्ताकैं धूर्त बुझैत छथि । ताहि व्यक्तिक द्वारा कैल यथार्थो प्रशंसामें ओ आस्था नहिं रखैत छथि । चाटुकारितासँ केवल अज्ञानिए लोक ठकल जाइत छथि, तथापि स्वार्थसिद्धिक हेतु

लोक चाटुकारिताक आश्रयण लितहि छथि, एहि संबंधमें नीतिमें एक श्लोक अछि—

अभिनवसेवकविनयैः प्राघुणिकोक्तै र्विलासिनीरुदितैः ।
धूर्त्तजनवचननिकरैरिह कश्चिदवञ्चितो नास्ति ॥

अर्थात् प्रथम नियुक्त सेवकक विनयसँ, अभ्यागतक चाटुकारितासँ, प्रियाक कानवसँ और धूर्त्त लोकक वाग्जालसँ एहेन के छथि जे ठकल नहिं जाइत छथि अर्थात् सब केओ एहि वचनसँ वशीभूत होइत छथि। सारांश ई भेल जे चाटुकारितासँ अनेक परिस्थितिमें कार्यसिद्धि होइत छैक। परन्तु ई एक एहेन नियम नहिं थिक जाहिसँ कार्यसिद्धि निश्चयेन हो। वस्तुतः अपन स्वरूपमें विनय और शिष्टाचारक संग यथार्थ विषयकें उपस्थित कैनहि कार्यसिद्धि होइत छैक।

चतुर चाटुकार अनेक प्रकारसँ अपन कार्यसिद्धि करैत छथि जाहिमें हुनक चाटुकारिता लक्षितो नहिं होइन्हि। अङ्गरेजी में एक उक्ति अछि Interest speaks all sorts of toungs and plays all sorts of parts, even the part of the disinterested. अर्थात् स्वार्थी लोक अनेक प्रकारक बात करैत छथि और अपन नाना प्रकारक स्वरूपकें देखबैत छथि ओ अपन एहनो स्वांग रचैत छथि जाहिसँ ई बुझल जाय जे हुनका एहिसँ कोनो प्रयोजन नहिं छन्हि।

परन्तु यथार्थमें ओ ई सब अपन स्वार्थ-सिद्धिहिक हेतु करैत छथि। एहेन स्वार्थी कैं बुद्धिमान् लोके चिन्हैत छथि, सकल साधारण तँ एहेन लोक क मायाजाल में पड़ितहि छथि।

एहि संबंध में अङ्गरेजी में और एक उक्ति अछिः—

Gratitude is with most people only a strong desire for greater benifits to come.

अर्थात् बहुत लोक जे दोसरा क प्रति अपन कृतज्ञता प्रकाशित करैत छथि तकरो अभिप्राय यैह रहैत छन्हि जे हुनका सँ और विशेष उपकृत होइ (अर्थात् और विशेष हुनका सँ प्राप्त करी) एहि प्रकारैं अपन अभिप्राय सिद्धि कैनिहार लोक पराकाष्ठा क चाटुकार थिकाह एहि में संशय नहिं, परन्तु ई विषय स्मरण रखबा क योग्य थिक जे एहेन लोक कृतज्ञता क माहात्म्य कैं नष्ट कैनिहार थिकाह। कृतज्ञता गुण क आसन संस्कृत वाङ्मय में बड़ ऊँच अछि। कृतज्ञता प्रकाश क एक दृष्टान्त एतै उपस्थित करब अप्रासङ्गिक नहिं होएत।

ई सर्वत्र विदित अछि जे हनुमान् जी अनेक अवसर पर श्रीरामचन्द्रक उपकार कैने छथि, एहेन उपकारी निःस्पृह हनुमान् जखन अयोध्या सँ जाय रहल छथि ताहि काल में श्रीरामजी हुनका कहैत छथीन्हः—

एकैकस्योपकारस्य प्राणान् दास्यामि ते कपे।
शेषाणामुपकाराणां भवाम ऋणिनो वयम्॥
मदङ्गे जीर्णतां यातु यत्त्वयोपकृतं कपे।
नरः प्रत्युपकाराणामापत्स्वायाति पात्रताम्॥

अर्थात् हे हनुमन् अहाँक एक-एक उपकार क हेतु अपन प्राण दै सकैतछी तथापि प्राणक विसर्जन कैलहु पर अहाँक उपकार शिष्ट रहि जाएत जकर हेतु हमरा लोकनि अहाँक ऋणी होएब।

हे हनुमन् अहाँ जे हमर उपकार कैल अछि तकर ध्यान हमर शरीरहि में पुरान भैकै रहि जाय किऐक तँ यदि हम प्रत्युपकार करबा

क भावना मन में आनी तँ तकर संगहि अहाँक आपत्तिहुक भावना आबि जाएत कारण जे केओ जीव प्रत्युपकारक पात्र विपत्तिअहि में होइत अछि तैं हेतु प्रत्युपकार करवाक भावना हमर मनहि में रहि जाय, से करवाक अवसर ईश्वर नहिं देथि। अहाँक हेतु प्रत्युपकारक विषय कैं मन में आनवाक अर्थ थिक अहाँकैं विपत्ति में देखब। अतएव ई विचार हमर मनहिं में रहै सैह ठीक।

एहि उदाहरणसँ कृतज्ञताक जे माहात्म्य प्रकाशित होइत अछि से कृतज्ञता यदि ककरो स्वार्थसाधनक हेतु प्रयुक्त होतँ निश्चय एतादृश पैघ महिमा कै नीचा खसाएव थिक। युरोपिअन लोकहिक विचार एतादृश छन्हि। भारतीयो विद्वान् स्वार्थ-सिद्धिक हेतु उपाय कहने छथि किन्तु ओ लोकनि एतेक नीचा नहिं उतरल छथि जे कृतज्ञतहुकैं स्वार्थ-सिद्धि में खींचि आनथि।

भारतवर्ष में कृतज्ञताक बड़ माहात्म्य अछि, श्रीरामचन्द्रक विषयमें कहलगेल अछि "ख्यातः प्राज्ञः कृतज्ञश्च" रामचन्द्र कृतज्ञ छथि। ओर जाही रूपैं कृतज्ञक प्रशंसा अछि ताही तरहैं कृतघ्न व्यक्तिक निन्दो शास्त्रमें अछि—"कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः" कृतघ्नक उद्धारक उपाय नहिं अछि। श्रीसीताजी रामायण में कृतघ्नक विषय में बजैत छथि जे जैं रूपैं कृतघ्न व्यक्तिक ओतै कैल सब उपकार व्यर्थ होइत अछि ताही प्रकारैं हमर जे तपस्या ओ धर्म अछि सब व्यर्थ भै रहल अछि जैंहेतु तकर कोनो प्रतिफल नहिं देखैतछी :—

"अनन्यदेवत्वमियं क्षमा च भूमौ च शय्या नियमश्च धर्मे।
पतिव्रतात्वं विफलं ममेदं कृतं कृतघ्नेष्विव मानुषाणाम्॥"

तैंहेतु कृतज्ञताकैं साधारण अर्थ-सिद्धि में प्रयोग करब एक प्रकारक

कृतघ्नता थिक जे अत्यन्त गर्हित थिक। अत एव कृतज्ञताक आसन भारतीय लोकक हेतु बड़ उच्च थिक, तकर सम्मान रखबे उचित।' सामान्य अर्थ-सिद्धिक हेतु तकर प्रयोग अनुचित थिक।

आवेश में गपशप नहिं करो

मनुष्य अपन भावकैं कतबोक नुकौने रहथु किन्तु मनक प्रबल भाव नुकाओल नहिं रहि सकैछ। कल्पना करू कि केओ व्यक्ति क्रोधक आवेशमें छथि तखन ओ अपन आवेशकैं कतबौक नुकायकैं आलाप करताह तथापि श्रोता वाणीसँ नहितँ हुनक आँखि और हुनक मुखक आभासँ हुनक मनक क्षोभकैं बुझिए जयताह और आगन्तुककैं ओ क्रोधी बुझताह। तैंहेतु आवेशसँ अभिभूत अवस्था में गपशप करब समुचित नहिं थिक। जखन लोक आवेश में रहैत छथि तखन हुनक बुद्धि मध्यस्थ नहिं रहैत छन्हि। तेहेन स्थिति में ओ न्याय्य विषयकैं कहिए नहिं सकैत छथि।

प्रकृतिस्थ होएबाक लक्षण ई थिक जे जखन कोनो एक विषय हुनक मनकैं अपन दिशि खींचैत नहिं होइन्हि। प्रकृतिस्थ अवस्थामें लोककैं कोनो विषयमें आग्रह नहिं रहैत छन्हि। यावत् काल धरि मनक प्रवृत्ति केवल एके दिशि खींचल जाय, अपनाकैं आवेश में मानबाक चाही।

दश गुरु अक्षरक उच्चारण में जतेक समय लगैत छैक सैह श्वासकाल वा असुकाल कहबैत अछि, परन्तु ई समय ओही पुरुषक श्वासकालक तुल्य होएत जनिक इन्द्रियगण प्रशस्त छन्हि। अर्थात् जे रुग्ण वा विकारयुक्त नहिं छथि। ताही रूपैं मन जखन निश्चल,

निर्विकार और और विना आन्दोलनक होथि ताही स्थिति में अपनाकैं प्रकृतिस्थ बुझवाक थिक।

प्रकृतिस्थ अवस्था में जे आलाप कैल जाइत अछि ताहि में केओ कोनो दोष लक्षित नहिं कै सकैत छथि और ताहि समयमें बुद्धिकैं मध्यस्थ रहवाक कारणेँ आलापक फलो उत्तमरूपैं विदित होइत अछि किन्तु आवेश में तँ ओ स्वयं आलापक फलक भोक्ता नहि होइत छथि। किन्तु श्रोता हुनक मनक परिस्थितसँ विदित भैजाइत छथि तैंहेतु एहि स्थितिमें आलाप हेय थिक।

गपशपसँ उपकार

ई विषय ककरहु हेतु स्वसाध्य नहिं छन्हि जे ओ सर्वदा प्रसन्न रहि सकथि। अपन बुद्धि और अभ्याससँ प्रसन्न रहनिहारो मनुष्य दैवी घटना तथा दुष्ट मनुष्यकृत अपराधसँ कौखन दुःखी भैए जाइत छथि। किन्तु ई सब मनुष्यक वशक विषय थिक जे ओ दोसराकैं सुखी राखि सकथि। ओ अपन मनसँ, अपन शरीरसँ, तथा अपन वाणीसँ दोसरा कैं प्रसन्न राखि सकैत छथि। वाणीक द्वारा प्रसन्न रखवाक अर्थ थिक आलापक द्वारा। सभामें व्याख्यानहुक द्वारा लोक प्रसन्न कैल जाइत छथि परन्तु व्याख्यानसँ कोनो व्यक्तिकैं वक्ताक विषयमें तादृश भाव नहिं होइत छन्हि जे कि साक्षात् आलापक द्वारा। साक्षात् आलापक प्रभाव लोकक हृदय पर पड़ैत छैक। अतएव आलापसँ बड़ उपकार होइत छैक।

मनुष्यक प्रधान इन्द्रिय आँखि, कान, नाक, त्वचा और जिह्वा केवल अपन मनहिकै सुख दैत छैक, दोसराक हेतु सुखक कारण नहिं

होइत छैक । किन्तु वाणी एक एहेन इन्द्रिय अछि जेकि अपन मनकैं आनन्द देवाक अपेक्षा दोसरहिकैं अधिक सुख दैत अछि । अतएव मनुष्यक शरीरमें वाणीए एक एहेन इन्द्रिय अछि जे सबसँ बढ़िकैं उपकारक तथा सबसँ बढ़िकैं शक्तिशालिनी अछि और एहि वाणीक क्रिया आलाप थिक । तैं हेतु आलाप बड़ उपकारक वस्तु थिक ।

ईश्वरक एहेन कृपा छन्हि जे ओ जे वस्तु प्रकृतिकैं देने छथीन्ह सैह एहि पाञ्चभौतिक शरीरहुकैं देने छथिन्ह । प्रकृतिमें आकाश, जल, अग्नि, वायु और पृथिवी ई पाँच तत्त्व छैक; एही रूपैं एहि शरीरहुमें पाँचो तत्त्व अछि । शरीरमें ओ प्रदेश आकाश थिक जतै भोजन कैल अन्न और पीउल पानि पचैत अछि; अग्नि वैह थिक जे एहि सबकैं पचबैत अछि, शोणितमें जल-तत्त्व अछि; हाड़ पृथिवी तत्त्व थिक और श्वास लेब वायु थिक ।

एही प्रकारैं पाँचो तत्त्वक जे गुण अछि ओहो शरीरक पाँचो इन्द्रिय सँ ग्राह्य होइत अछि । यथा नाकसँ घ्राणशक्ति पृथिवीक गुण, आँखिक तेजसँ अग्निक गुण, कानसँ श्रवणशक्ति आकाशक गुण, त्वचासँ स्पर्शशक्ति वायुक गुण एवं जिह्वासँ स्वादु शक्ति जलक गुण प्राप्त होइत अछि ।

एहि रूपैं प्राकृतिक सर्वशक्ति-संपन्न एहि शरीरमें ईश्वर मुखमें जे वाक् शक्ति प्रदान कैने छथि तकर चरितार्थता तेखन थिक जखन एहि शक्तिसँ विशिष्ट फल साधित हो । ई मनुष्यक कर्त्तव्य थिक जे ईश्वर-प्रदत्त प्रत्येक परमाणुरूप शक्तिक उपयोग उत्तम रूपैं कैल जाय ।

स्वभावतः लोक गपशपक इच्छुक रहैत छथि और ताहिसँ आनन्दक अनुभव करैत छथि, परन्तु किछु लोक एहनो छथि जे अपन कार्यमें

ततेक तन्मय रहैत छथि जे हुनका गपशप करबाक अवसरे नहिं भेटैत छन्हि ने तादृश रुचिओ रहैत छन्हि। किन्तु यदि ओहो लोकनि कर्त्तव्य-कर्मसँ थाकिकें सुन्दर गपशप करथि तँ बड़ आनन्द हुनकहु लोकनिकें भेटतन्हि। ककरो मस्तिष्क सर्वदा एक कार्यमें संलग्न नहिं रहि सकैत छैक, तैंहेतु तकरा आराम देबाक आवश्यकता छैक जकर पूर्त्ति गपशप सँ भै सकैत छैक। यद्यपि ई कहल जाइत अछि जे अध्यवसायी पुरुषमें ई विशेषता रहैत छन्हि जे ओ पुनः पुनः ताही विषयकें अपन विचारक आगाँमें रखैत छथि। इंगलैंड देशक परमगणितज्ञ निउटन साहेब अपन विशेषताक विषयमें एक बेरि बजलाह जे हुनकामें अन्य-लोकसँ वैशिष्ट्य यैह छन्हि जे ओ विचारणीय विषयकें पुनः पुनः अपन विचारक आगामें रखैत छथि यावत्कालधरि तकर पूर्णरूपैं समाधान नहिं भैजाइत छन्हि। जैंरूपैं प्रातःकालमें प्रकाश क्रमशः अन्धकार कै नष्ट करैत अबैत अछि ताही रूपैं साध्य प्रश्नक उत्तर क्रमशः होइत होइत ओ बिलकुल स्पष्ट भै जाइत छन्हि। हुनक सदृश लोककें कदाचित् मस्तिष्ककें आराम देबाक आवश्यकता नहिं-ओ पड़ैत होइन्हि, किन्तु सकल साधारण लोककें एक कार्यक बाद किछु आराम लेने पुनः विचारशक्ति नवीन भै जाइत छन्हि और तखन ओ विशेष शक्तिक सङ्ग काजमें लागि जाइत छथि तैंहेतु छोटसँ पैघ सबकें आराम देबाक आवश्यकता प्रतीत होइत छन्हि जकर पूर्त्ति गपशपसँ नीक जकाँ होइत छैक। अतएव गपशप बड़ उपकारक वस्तु थिक।

'गपशप' पदक अनुकूल होएब समुचित

एहेन देखल जाइत अछि जे स्कूल, कालेज, पाठशालामें अनेक छात्र एक सँगैं पढ़ैत छथि, ताहि ठाम सब छात्र एकरूपक बुझल जाइत छथि यद्यपि ककरो लौकिक परिस्थिति कतवोक पैघ किऐकने होइन्हि। विद्यालयमें केवल ताही छात्रकैं लोक आदरक दृष्टिसँ देखैत छन्हि जे पढ़वामें उत्कृष्ट रहैत छथि। अध्ययनकाल में समान क्षेत्र रहलहु पर जखन ओ कार्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होइत छथि तखन अपन पदक अनुसार ओ विभिन्न भै जाइत छथि। तैंहेतु ताहू अवस्था में केओ विद्यालयक सहपाठी पैघ पद पर प्राप्त कोनो व्यक्तिक संग यदि छात्र जीवनवत् व्यवहार करैत छन्हितँ ताहिसँ हुनका लोकनिकैं अप्रीति उत्पन्न होइत छन्हि। एहि विषयक दृष्टान्त स्वरूप नवीन घटनातँ अनेक अछि किन्तु एक प्राचीन घटनाहिक उल्लेख एहिठाम कैल जाइत अछि।

द्रोणाचार्य अस्त्रविद्या शिक्षाक समयमें पाञ्चाल देशक राजकुमार द्रुपदक संगहि शिक्षित भेल रहथि और दुनू गोटामें छात्र जीवनमें मित्रतो छलन्हि। अनेक समयक अनन्तर गृहस्थ जीवनमें जखन द्रोणाचार्य दरिद्रता-वश दुःख भोगै लगलाह तखन हुनका राजा द्रुपदक स्मरण भै अयलन्हि और ओ द्रुपदक ओहिठाम जाय अपन निर्धनताक अन्त करै चाहलन्हि। द्रोणाचार्य अत्यन्त आशाक संग राजा द्रुपदक ओतै पहुँचलाह और छात्र-जीवनक उद्‌गारक संग हुनक संग मिललाह। परन्तु राजा द्रपदकैं ई बात बड़ अप्रिय भेलन्हि, ओ द्रोण पर बिगड़ि गेलाह आर कहलथीन्ह जे हमर अहाँक मैत्री केहेन अहाँ

दरिद्र अकिञ्चन छी, हम राजा छी। हमरा अहाँक कतहु मैत्री हो। जेंरूपैं मूर्खकैं विद्वान्‌क संग, सूरकैं क्लीबक संग मैत्री नहिं भैसकैत छैक। जाहि दूइ व्यक्ति में समान धन, समान कुल रहैत छन्हि हुनकहिमें मैत्री समुचित थिक, छोट-पैघमें मैत्री नहिं हो।

न दरिद्रो वसुमतो नाविद्वान् विदुषः सखा।
न शूरस्य सखा क्लीबः सखिपूर्वं किमिष्यते॥
ययोरेव समं वित्तं ययोरेव समं कुलम्।
तयोर्विवाहः सख्यं च न तु पुष्टविपुष्टयोः॥

हमरासँ किछु प्राप्त करवाक आशा अहाँ जनु करी। एक सन्ध्यामात्र एतै रहि अपन रास्ता लिअ। द्रोणाचार्य राजा द्रुपदक एहि असज्जनोचित व्यवहारसँ बहुत दुःखी भै ओतै सँ घूरि अयलाह और भीष्माचार्यक निवेदन कैला पर दुर्योधनादि राजकुमारकैं अस्त्रविद्याक शिक्षा देवाक हेतु नियुक्त भेलाह।

ई घटना ई स्पष्ट करैत अछि जे मनुष्यक मैत्री समानशील-व्यसनहिमें होएब उचित थिक। तैंहेतु सवकैं तात्कालिक परिस्थितिक अनुकूले व्यवहार कर्त्तव्य थिक। पुरान घटना कैं मन में राखि कैं तदनुसार व्यवहार कैने लोक तिरस्कृत होइत छथि। लोककैं ई विचारवाक थिकन्हि जे कोनो समय में ओ ककरो मित्र छलाह, जँ हुनक मित्र अपन तपस्या और अध्यवसायक बलसँ कोनो उच्च पद पर गेल छथि और ओ स्वयं अपन अकर्मण्यता और दुर्गुणक वश निम्नश्रेणीमें रहि गेल छथि तखन हुनका ताहि उन्नतिशील मनुष्यसँ मैत्री रखवाक कोन अधिकार छन्हि। हुनक मैत्री तेखन उपयुक्त होइतन्हि जँ ओहो स्वयं अपन तपस्या और अध्यवसायक कारणेँ उच्चपद पर आसीन रहितथि,

तैंहेतु स्वयं निम्नश्रेणीक लोक भैकै उच्चपदस्थ लोकक संग समान व्यवहारक आकांक्षा राखब मूढ़ता थिक। अतएव अपन पदानुकूल लोकक संगहि समान व्यवहार समुचित थिक। ई बात भिन्न थिक जे बहुत उच्च पदस्थ लोक अपन प्राचीन मित्रक समादर करवामें पराङ् मुख नहिं होइत छथि। अहू विषयक प्राचीन दृष्टान्त कृष्णसुदामाक मैत्री अछि। परन्तु अहूमें ध्यान रखवाक विषय ई थिक जे दरिद्रावस्थाक सुदामा श्रीकृष्णचन्द्रसँ भेंटक हेतु समता भावसँ नहिं गेलाह, बहुत संकोच और हीनताक संग श्रीकृष्णजीसँ मिललाह, परन्तु ई श्रीकृष्ण-चन्द्रक महिमा ओ महत्ता छलन्हि जे ओ सुदामाक आदर उचितो सँ बढ़िकै कैलन्हि। एहनो दृष्टान्त आइ काल्हुक संसारमें यत्र-तत्र पाओल जाइत अछि किन्तु अधिकांश दृष्टान्त ताही प्रकारक देखल जाइत अछि जकर समालोचना भेल अछि। अतएव आलापकैं परिस्थितिक अनुसार परिमार्जित करब समुचित थिक।

एहि संग विचारवाक विषय एक ईहो छैक जे लोक तात्कालिक मैत्री वा उपकारक जतेक विचार करैत छथि ततेक पुरान मैत्री वा उपकारक नहिं करैत छथि। पुरान मैत्री वा उपकारक संस्कार मात्र लोकक मनमें रहैत छैक। विचारवान् लोक तकर विचार कय अपन कृतज्ञता देखबैत छथि किन्तु सकल साधारण लोक वर्त्तमान परिस्थिति-हिक दास होइत छथि कारण जे ताहीसँ हुनक कार्य-निर्वाह होइत छन्हि। तैं हेतु प्राचीन मैत्रीकैं ध्यानमें राखि प्रत्युपकारक आशा थोड़ रखवाक थिक। पैघ लोककैं तैं हुनक समीपवर्त्ती आदेश माननिहार लोकहिक उपर कृपा रहैत छन्हि तैं हेतु नीतिशास्त्रमें कहलो गेल अछि :—

आसन्नमेव नृपतिर्भजते मनुष्यं विद्याविहीनमकुलीनमसंगतं वा ।
प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च यः पार्श्वयोर्वसति तं परिवेष्टयन्ति ॥

तैं हेतु गपशपक द्वारा यदि ककरहु प्रभावित करवाक अभिलाषा हो तँ तात्कालिक मैत्रीपूर्णकार्य्यें एहि विषयमें साधक भैसकैछ । पूर्वक कैल उपकार तादृश कार्यसाधक नहिं होइछ ।

ईहो विचार कैक नीतिज्ञक छन्हि जे जनिक हेतु थोड़ेको उपकार कैने रही तनिका ओतैं प्रत्युपकारक भावनासँ कदापि नहिं जाइ। अपरिचित व्यक्तिसँ सहायता लेब नीक किन्तु उपकृत व्यक्तिसँ प्रत्युपकारक आशा रखबे अनर्गल थिक । एहि विषय में यैह संतोष कर्त्तव्य थिक जे हम जनिक हेतु जे उत्तम कार्य कैल से धर्मबुद्धया कैल । यैह धारणा शान्तिदायक थिक ।

आलाप ककरो श्रद्धा क विरुद्ध नहिं हो

जाहि कोनो व्यक्तिकैं जकर उपर श्रद्धा तथा आदर भाव रहैत छन्हि तनिक विरोधमें किछु कहब अप्रीतिकर होइत अछि। श्रोता एतादृश गपशप करै नहिं चाहैत छथि, विशेषकैं एहि विषयक आभास धार्मिक विषय पर होइत छैक । मनुष्यक धार्मिक विश्वास बड़ दृढ़ होइत छैक तकर विरुद्ध में किछु कहलापर तत्काल वादविवादक स्वरूप उपस्थित भैजाइत छैक, और यदि श्रोताक सज्जनता-वश तादृश स्वरूप ग्रहण नहिओ होइक तथापि हुनक मनमें ई विषय बड़ अप्रीतिकर भैजाइत छन्हि और ओ व्यक्ति गपशप कैं आगाँ बढ़ावै नहिं चाहैत छथि । मानि लेल जाय जे केओ व्यक्ति शैव छथि, यदि केओ वैष्णव कतबोक युक्तिसँ शैव मतक खण्डन करथि तथापि शैव श्रोता तकरा

बहुत विरुद्ध मानताह। एही प्रकारैं जनिक जाहि विषयमें बद्धमूल विश्वास छन्हि तकर विरुद्ध में किछु कहब गपशपक सभ्यताक विरुद्ध थिक। केवल धार्मिक विषय नहिं एतदतिरिक्त यदि श्रोताक गुरुजनक विरुद्ध किछु कहल जाय, हुनक देश, जाति तथा समाजक विरुद्ध किछु कहल जाय वा हुनक मित्रक क विरुद्ध किछु कहल जाय तँ से सब विषय हुनक हेतु श्राव्य नहिं होइत छन्हि तैं हेतु तादृश प्रसङ्गसँ वक्ताकैं सावधान रहवाक थिक।

बहुत श्रोता तँ एतेक शिष्ट होइत छथि जे हुनक समक्ष ककरो निन्दा, अपवाद, कलङ्क, दुर्गुण सुनवाक योग्य विषय नहिं होइत अछि। हुनका लोकनिक ई सिद्धान्त रहैत छन्हि जे केवल निन्दक व्यक्ति दोषी नहिं थिकाह किन्तु निन्दाक श्रोतो पापभागी थिकाह—"न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक्"—तैंहेतु ककरो श्रद्धाक विरूप आलापक प्रसङ्ग करब समुचित नहिं थिक।

गपशप और व्याख्यान

गपशप ओ थिक जाहिठाम दूइ व्यक्ति वा ताहूसँ अधिक लोक अपन अभिप्रायकैं परस्पर व्यक्त करथि अथवा कोनो कुतूहलजनक बातकैं कहैत होथि।

व्याख्यान ओ विषय थिक जखन व्याख्याता कोनो निर्दिष्ट विषय पर बजैत होथि। गपशप दूइ मनुष्यहुमें भैसकैत अछि, किन्तु व्याख्यान जनसमुदायमें होइत अछि। गपशपमें विषय परिवर्त्तित होइत रहैत अछि, किन्तु व्याख्यानमें विषय स्थिर रहैत अछि। गपशपमें उत्तर-प्रत्युत्तर तत्क्षणात् होइत अछि, किन्तु व्याख्यानमें से नहिं होइत

अछि; व्याख्याता सुन्दर जकाँ अपन विषयक प्रतिपादन करैत रहैत छथि। गपशपमें कोनो अध्यक्षक आवश्यकता नहि होइत छैक, किन्तु व्याख्यानमें अध्यक्षक परम आवश्यकता रहैत छैक जाहिसँ सभामें संयमन रहैक। एहिरूपैं गपशप और व्याख्यानमें बड़ अन्तर छैक। हँ ई संभावित भै सकैत अछि जे गपशपहुमें वक्ता अपन विषयकैं ताही रूपैं प्रतिपादित करथि जै रूपैं व्याख्यानमें कैल जाइत अछि तथापि ताहि गपशप कै केओ व्याख्यान नहिं कहताह।

व्याख्याताकैं जतेक नियमक पालनक आवश्यकता रहैत छन्हि ताहिसँ बढ़िकै सूक्ष्म नियमक पालन गपशप कैनिहारकैं रहैत छन्हि। व्याख्यानक प्रभाव कोनो निश्चित व्यक्तिपर पड़न्हु ई अभिप्राय नहिं रहैत छैक किन्तु गपशपक अभीष्ट सैह रहैत छैक जे कोनो व्यक्ति विशेष ताहिसँ प्रभावित होथि। गपशपमें वक्ताकैं एहि विषय दिशि दृष्टि राखब आवश्यक थिकन्हि जे 'गपशप' व्याख्यानक स्वरूप ने धारण करन्हि। श्रोतहुकैं बजबाक अवसर देब तथा हुनक कथनकैं सुनब आवश्यक थिक। गपशप वस्तुतः वैह थिक जाहिमें वक्ता-श्रोता कैं समान अवसर भेटन्हि। जँ एकै व्यक्ति अपन चरखाकैं चलबैत रहताह दोसराकैं किछु कहबाक अवसरे नहिं भेटन्हि तँ तादृश आलाप गपशप नहिं थिक। गपशप वैह थिक जाहिमें दुनू व्यक्तिक समान रूपसँ उत्तर-प्रत्युत्तर होइन्हि।

गपशपक उपसंहार

ई सकल साधारणक अनुभव अछि जे अनेक लोक समयक अभावक कारणें तथा विषयमें अनभिरुचिक कारणैं आलाप कें बेसी

बढ़बै नहि चाहैत छथि। यद्यपि ओलोकनि शिष्टताक दृष्टिसँ अपन अनिच्छाकें वाक्यसँ नहिंओ प्रकाशित करैत छथि तथापि हुनका लोकनिक अनिच्छा प्रकारान्तरैं विदित भैए जाइत छैक तेहेन स्थितिमें वक्ताकैं उचित थिकन्हि जे अपन कथनक उपसंहार कैलेथि, ओ एकहि बेरि गपशपकैं बन्द नहिं कैदेथि किन्तु कथनांशकैं संक्षेपमें कहि तकर अन्त कै देथि। अथवा यदि और किछु वक्तव्यांश रहिगेल होइन्हि तँ हुनक हेतु ई उपयुक्त होएतैन्हि जे ओ श्रोताकैं कहथीन्ह जे हमरा किछु अल्प अंश कहवा लै शिष्ट रहिगेल अछि तकरा कहिकै हम अपन वक्तव्यक अन्त करैतछी।

श्रोताक अनभिरुचि बुझवाक चिह्न ई थिक जे यदि ओ अपन घड़ी देखै लागथि, अपना दिशिसँ कोनो प्रश्न नहिं करथि, मुँह तथा अङ्गसँ आलस्य व्यक्त करथि, प्रश्नक उत्तर विशद रूपसँ नहिं देथि, आलाप प्रसन्नतापूर्वक नहिं करथि और मध्यमें चुप भै जाथि ई सव हुनका लोकनिक अरुचिक चिह्न थिक। एहि सव आकारकैं देखितहि अपन आलापक उपसंहार करब सभ्यतोचित थिक। सारांश ई थिक जे गपशप दुनू व्यक्तिक हेतु सुखकारक तथा सुविधाजनक होएवाक थिक तैं यदि कोनो पक्षमें ई विषय असुविधाजनक प्रतीत हो तँ शीघ्र तकर उपसंहार कर्त्तव्य थिक।

कखनहु एहनो परिस्थिति होइत छैक जे श्रोताक मन कार्यान्तरमें संलग्न रहैत छन्हि अथवा आने कोनो असुविधाक कारणें ओ आलापक नैरन्तर्य नहिं चाहैत छथि तेहेन स्थितिमें आलापकें संक्षेप करब आवश्यक, अथवा आलापक मध्यहिमें कोनो विशिष्ट व्यक्तिक आगमन भैजाइन्हि किंवा आने कोनो घटना तादृश उपस्थित होइक जाहिसँ

श्रोताक मन कार्यान्तर-संलग्न बोध हो तँ तेहेन स्थितिमें गपशपक उपसंहार करब समुचित थिक। ई सर्वदा ध्यानमें रखबाक योग्य विषय थिक जे आलाप श्रोताक रुचिक अनुकूल हो तैंहेतु वा कोनो अर्थ-साधनक हेतु ई नितान्त आवश्यक थिक जे मनोविज्ञानक द्वारा लोकक रुचि बूझिकैं अभीष्टार्थक उपक्रम कैल जाय।

मनोविज्ञानक ई साधारण विषय थिक जे उपकृत मनुष्य उपकारी व्यक्तिक अभीष्टसिद्धिमें स्वभावतः प्रयत्नशील रहैत छथि तैं हेतु श्रोता यदि कोनो प्रकारैं वक्ताक द्वारा उपकृत होथि और ओ उपकारक विषय नवीन हो तँ निश्चय श्रोता वक्ताक प्रस्तावसँ सहमत भै जाइत छथि। ताहि कृतघ्नक विषय भिन्न थिक जे उपकारीक उपकारकैं बिलकुल बिसरि जाइत छथि अथवा तकर उपेक्षा करैत छथि। नवीन उपकार कहबाक अभिप्राय ई थिक जे एहि तात्कालिक संसारमें प्रायः पुरान विषयक आदर अल्प होइत छैक। पुरान उपकारी लोककैं बहुधा लोक बिसरिए जाइत छथि, किन्तु तात्कालिक उपकार बिसरबाक योग्य नहिं होइत अछि; ई अपन प्रभावसँ उपकृत व्यक्तिकैं प्रभावित करितहि अछि तैं हेतु एहेन अवसर पर अभीष्ट प्रस्ताव विफल नहिं होइत अछि। हँ, श्रोताक मनःप्रवृत्ति बुझबा में पूर्ण बुद्धिमत्ताक प्रयोजन छैक। एहि विषय पर पञ्चतन्त्रक सुहृद्भेद प्रकरणमें करटक दमनक द्वारा ककरो मनक विषयकैं बुझबाक सुन्दर उपाय अछि। ओ सब कथा निर्मूल कहि त्यागबाक योग्य नहिं थिक किन्तु तकर तत्वांश संग्राह्य थिक और जीवन-क्षेत्रमें व्यवहर्त्तव्य थिक।

किन्तु संसारमें अनेक व्यक्ति एहेन छथि जे उपकारी लोकक कृतज्ञता-पाशमें बद्ध रहैत छथि, हुनका जेखन अवसर भेटैत छन्हि

ओ उपकारी व्यक्तिक उपकारक स्मरण कै सूद सहित अपन ऋणकैं चुकबैत छथि अर्थात् छोटोटा कैल उपकारक बदलामें बड़ पैघ उपकार ताहि व्यक्तिक करैत छथि । तैं हेतु उपकृत व्यक्तिक ओतै जे प्रस्ताव कैल जाइत अछि तकरामें बहुधा सफलतैक संभावना रहैत अछि । श्रोताक अनुकूल आलाप की होएत से विषय जनबाक हेतुतँ श्रोताक रुचि ओ श्रोताक स्वभाव सर्वांशे बुझब आवश्यक छैक, किन्तु यदि ई सब विषय विदित नहिंओ हो तथापि साधारणतया आलापक विषय ताहि समयमें प्रचलित कोनो राजनैतिक धार्मिक वा सामाजिक विषयक चर्चा अथवा कोनो कुतूहल-जनक वार्त्ता अथवा कोनो शास्त्रीय चर्चा इत्यादि विषय भै सकैत अछि । और आलापक प्रसंग भै गेला पर बुद्धिमान् वक्ता एहि विषयक आभास पाबि जाइत छथि जे श्रोताकैं केहेन विषय प्रिय छन्हि तखन तादृश विषयक उपक्रम करब समुचित ।

बहुत बुद्धिमान् व्यक्ति एहेन गूढ़ रहैत छथि जे हुनक हृदयक ओ हुनक रुचिक पता लगाएब कठिन विषय होइत छैक तथापि ज्ञानसँ कोन विषय अगम्य अछि अतएव बुद्धिमान् व्यक्ति एहि सब विषयक ज्ञाता यत्नपूर्वक भैए जाइत छथि और तखन तदनुसार अपन इष्टार्थक प्रयोग आलापमें करैत छथि । उपसंहारक ज्ञान आवश्यक एहि हेतु थिक जे अरुचि बोध भेल और आलापक अन्त कैल । से कैलासँ अरुचिक मात्रा बढ़ैत नहिं छैक फलतः आलाप कैनिहारक प्रीति संरक्षित रहि जाइत छन्हि और जँ उपसंहार नहिं कैल जाय तँ अप्रीतिक मात्रा बढ़ि जाइत अछि और आलापक अन्त एहेन अवस्था में होइत अछि जे पुनः आलापकैं पल्लवित करवाक अवसर नहिं भेटैछ । अतएव उपसंहारक ज्ञान राखब बड़ आवश्यक विषय थिक ।

सभक ज्ञान एके प्रकारक नहिं रहैत छन्हि । सबमें अपन-अपन विशेषता रहैत छन्हि तैंहेतु ताहि विशेषताक दिशि दृष्टि रखने गपशपक उपक्रम सुन्दर भैसकैछ । अर्थात् श्रोता विद्वान् छथि वा साधारण, शान्त छथि वा क्रोधी, स्थिर छथि वा चञ्चल, दयालु छथि वा कठोर, मृदुभाषी छथि वा क्रूर, न्यायी छथि वा अन्यायी एहि सब विषयक ज्ञान यदि पूर्वहि भै सकै तखन तदनुसार अपन आलापक उपक्रम उत्तम भै सकैछ । एकर अतिरिक्त इहो ध्यानमें राखब आवश्यक जे श्रोता केहेन स्थितिमें छथि प्रसन्न छथि वा अप्रसन्न, स्वतन्त्र छथि वा पराधीन । यदि गपशप केवल मनोरञ्जनक हेतु हो तँ एहि सब विषयक ज्ञान ततेक आवश्यक नहिं छैक किन्तु यदि कोनो अभीष्ट सिद्धिक हेतु गपशप होतँ एहि सब विषयक जिज्ञासा समुचित थिक ।

गपशप सँ ई विदित भैजाइत छैक जे ओहि मनुष्यमें कतेक विद्वत्ता और निपुणता छन्हि । ई एक विषय ध्यानमें रखवाक थिक जे किछु लोक अपनाकैं एतेक नुकौने रहैत छथि जे अपन गुणहु कैं व्यक्त करवामें संकुचित होइत छथि और किछु लोक एहेन होइत छथि जे अपनाकैं अपन योग्यता सँ अधिक देखवैत छथि, एहि प्रकारक गुण-प्रकाशन में अप्रवृत्ति और प्रवृत्ति व्यक्तिगत रहलहु पर विद्वान् लोक यथार्थ में ककरा में कतेक गुण छन्हि तकरा बुझिए जाइत छथि 'नहि कस्तूरिकाऽऽमोदः शपथेन विभाव्यते' कस्तूरीक सुगन्धिक निश्चय शपथ सँ नहिं कैल जाय सकैत अछि। अतएव जनिकाँ में जे गुण छन्हि से अवसर संप्राप्त भेला पर व्यक्त भैए जाइत छन्हि तें हेतु कवि भवभूति मालतीमाधव में लिखैत छथि—

यद्वेदाध्ययनन्तथोपनिषदां सांख्यस्य योगस्य च
ज्ञानन्तत्कथनेन किं नहि ततः कश्चिद्गुणो नाटके।
यत्प्रौढ़त्वमुदारता च वचसां यच्चार्थतो गौरवं
तच्चेदस्ति ततस्तदेव गमकं पाण्डित्यवैदग्ध्ययोः ॥

अर्थात् नाटक में ई कहवाक आवश्यकता नहिं अछि जे अमुक पात्र में वेद, उपनिषद्, सांख्य तथा योगक कतेक ज्ञान छन्हि, हुनक वाणीक प्रौढ़ता, उदारता तथा अर्थगौरवे हुनक पाण्डित्य तथा नैपुण्य कैं प्रकाशित करैत छन्हि, तैं हेतु आलापे एहि सब अन्तर्निहित गुणक बोधक थिक।

जैं रूपैं गपशपमें ककरो वयस और वेतन पुछवाक विषय नहिं थिक ताही प्रकारैं श्रोताक ज्ञान गरिमा की छन्हि, कतेक दूर धरि हुनक अध्ययन भेल छन्हि इहो विषय प्रष्टव्य थहिं थिक, किन्तु आलापक सारांश सँ ई विषय बुझवाक थिक। लोक क आकार, लोकक स्वरूप सैह लोकक अन्तर्निहित गुण कैं प्रकाश करैत अछि और आलाप तँ गुण-प्रकाशनक एक मार्ग थिक और यैह मार्ग यथार्थ मार्ग थिक। आलाप में एहि सब विषयक प्रश्न एक तँ आलापक सभ्यताक बाहर थिक द्वितीय पुछलहु उत्तर सभ्य लोक अपन गुण-वर्णन करवा सँ पराङ्मुख रहैत छथि। पक्षान्तर में आत्मश्लाघी लोक अपन योग्यताक वर्णन और विशद रूप सँ करैत छथि, जतवाक गुण वस्तुतः हुनका में रहितहु नहिं छन्हि। तैंहेतु पूछिकैं ककरो योग्यताक निर्णय करब साधु मार्ग नहिं और जँ पुछिएकै वक्ता श्रोताक योग्यता सँ परिचित होथि तखन वक्ताक वैशिष्टय की भेलन्हि, वक्ता वा श्रोता दुनुक वैशिष्टय तँ तैखन बुझवाक थिक जखन आलापहि सँ एक दोसराक

योग्यताक बोद्धा भैसकथि। जखन प्लाटफौर्म पर जाय कैं केओ व्याख्यान करैत छथि तखन हुनक विश्वविद्यालयीय योग्यता बूझि कै केओ व्याख्यान क सारासारता नहिं बुझैछ किन्तु व्याख्यानक तत्त्वहि सँ हुनक योग्यताक अनुभव करैत अछि। ताही प्रकारैं आलापक द्वारहि योग्यता जानब समुचित थिक। आलाप में योग्यता प्रष्टव्य नहिं थिक।

एहि सब विवेककैं रखनिहार वक्ता सुन्दर जकाँ उपसंहारक ज्ञान रखैत छथि और तदनुसार अपन गपशपक उपसंहार करैत छथि।

गपशपक पूर्णता

गपशपकैं ताही अवस्थामें पूर्ण और सफल बुझवाक थिक जखन कि गपशप भै गेलो पर पुनः आलापक इच्छा बनल रहै। एक कवि यथार्थ कहने छथि—

सत्यं प्रेम तयोरेव ययोर्योगवियोगयोः।
वत्सराः वासरीयन्ति वत्सरीयन्ति वासराः॥

ओही दुनू व्यक्तिक प्रेमकैं सत्य मानवाक थिक जाहि दुनूक भेंट भेला पर एक वर्ष एक दिनक तुल्य बूझि पड़ैक और जाहि दुनूक विच्छेद भेला पर एक दिन एक वर्षक तुल्य बोध होइक। हर्षक समय बहुत शीघ्र बीतैत छैक और कष्टक समय पहाड़ सदृश बूझि पड़ैत छैक। उत्तम गपशपक यैह स्वरूप थिक जे आलाप कैनिहार अघाथि नहिं, पुनः पुनः आलाप करवालै इच्छुक बनल रहथि। उत्तम गपशप कैनिहारमें परस्पर मित्रता भै जाइत छन्हि तैं हेतु हुनका लोकनिक पुनर्मिलन एक आनन्दक स्रोतकैं बहवैत अछि। एहेन समागमक वर्णन भारवि किरात में कैने छथि—

शून्यमीकीर्णतां याति तुल्यं व्यसनमुत्सवैः ।
विप्रलंभोऽपि लाभाय सति प्रियसमागमे ।।

जखन दुइ प्रेमीक भेंट होइत अछि तँ खाली वस्तु भरल बूझि पड़ैत छैक। विपत्तियो उत्सवक तुल्य और अनेक दिनक वियोगो लाभे बोध होइत छैक। जे गपशप एतादृश भावकैं उत्पन्न कै सकै तकरो पूर्ण गपशप कहबाक थिक।

गपशपक पूर्णताक अर्थ ई नहिं थिक जे जाहि प्रयोजनक निमित्त आलाप कैल ओ प्रयोजन सिद्ध भैगेल। एहि ठाम प्रयोजन वस्तुतः आत्मसुख थिक, जँ गपशपसँ तादृश आत्मसुख प्राप्त भेल तँ ताहि गपशपक पूर्णता सैह थिक। एहिसँ ई सिद्ध होइछ जे गपशपक यथार्थ ध्येय आत्मसुखे थिक, कोनो प्रयोजनक सिद्धि नहिं।

आलापमें दृढ़ता

एहेन देखवामें अवैत अछि जे जखन केओ अपन अध्यक्षसँ अथवा उच्चपदक लोकसँ मिलैत छथि तँ गपशपक समयमें आगन्तुक एतेक संकुचित भै जाइत छथि जे ओ अपन अभिप्रायोकैं यथार्थ रूपैं प्रकाशित नहिं कै सकैत छथि। पैघ लोकक तेजसँ ओ एतेक अभिभूत भैजाइत छथि जे हुनक मनमें ई भय उपस्थित होइत छन्हि जे हुनक कथा कतहु अरुचिकर ने होइन्हि अतएव कोनो प्रकारैं अपन प्रसङ्गक अन्तकै ओ रास्ता लैत छथि। ई मार्ग ठीक नहिं थिक। आगन्तुककैं दृढ़चित्त भैकै अपन सब कथन कहवैक थिकन्हि। पैघ लोक अत्यन्त शान्त और गंभीर होइत छथि, एतादृश भय कदापि नहिं करवाक थिक जे ओ बिगड़िकैं किछु कहि देताह अथवा अनिष्ट साधन

करताह। सन्नद्धता एहि निमित्त चाही जे हुनक उत्तरक युक्तियुक्त प्रत्युत्तर होइन्हि। हुनका लोकनिक संग तर्क कैलासँ ओ लोकनि अप्रसन्न नहिं होइत छथि किन्तु प्रसन्न होइत छथि, हुनका लोकनिकैं अरुचि तखन होइत छन्हि जँ समीचीन उत्तर नहिं दै केवल समयक दुरुपयोग कैल जाय।

एक वेरि श्रीगान्धीजी एक हाइकोर्टक जजकैं एक सभामें कहल-थीन्ह जे छुट्टीक समयमें अहूँ लोकनि टकुरी चलवितहुँ तँ नीक छल, ताहि पर जजसाहेब हँसि कै उत्तर देलथीन्ह जे अनेक समय बहुत ओकीलक वृथा बहस सुनवाक अपेक्षा ताहि समयमें टकुरी चलाएब विशेष फलप्रद होइत।

सारांश ई थिक जे अयुक्त कथा सुनवामें समयक अपव्यय होइत अछि किन्तु युक्तियुक्त विषयकैं सुनवामें आनन्द होइत अछि। अतएव संकोचकैं हँटाय अपन युक्तिसंगत बातकैं सब परिस्थितिमें कहवाक थिक।

एहि विषयमें हमरा लोकनि लङ्कामें रावणक संग भेल हनुमान-जीक आलापकैं दृष्टान्त स्वरूपैं लै सकैत छी—

रावण हनुमान्कैं पुछलकैन्हि जे ओ कोन निमित्त लङ्का आएल छथि। हनुमान्जी उत्तर देलथीन्ह जे ओ सुग्रीवक दूत भैकै ततै आएल छथि और हुनक हेतु सुग्रीवक एहिरूपक संवाद छन्हिः—यशस्वी राजा दशरथक पुत्र राम पिताक आज्ञासँ भ्राता लक्ष्मण और पत्नी सीताक संग दण्डक वनमें अयलाह। हुनक स्त्री राजा जनकक कन्या सीता जनस्थानमें हेड़ाय गेलथीन्ह। तनिकाँ तकैत ओ दुनू भ्राता ऋष्यमूक पर्वत पर अयलाह और सुग्रीवसँ मिललाह। ओ रामसँ

कहलथीन्ह जे ओ सीताकेँ ताकि देथीन्ह और राम हुनका हरिराज्य देवाक वचन देल। तखन राम युद्ध में बालिकेँ मारिकैं सुग्रीवकेँ राजगद्दी पर बैसौलन्हि। बलवान् बालिकैं अहाँ पहिनहिसँ जनैत छिअन्हि तनिकाँ ओ एके शरसँ मारलन्हि। सुग्रीव लाखो वानरकैं सब दिशामें सीताकैं तकवाक हेतु पठौने छथि। वायुक पुत्र हम हनुमान् सौ योजन समुद्रकैं लाँघिकै एतै अहाँक दर्शनक हेतु आएलछी और अहाँक घरमें सीताजीकेँ देखल अछि। अहाँ बड़े तपस्वी तथा धर्मक अर्थक ज्ञाताछी। अहाँक हेतु ई शोभाक विषय नहिं थिक जे अहाँ दोसराक स्त्रीकें अपना घरमें राखी। अहाँक सदृश बुद्धिमान् व्यक्ति, विपत्तिकें देनिहार धर्मविरुद्ध कार्य में प्रवृत्त नहिं होइत छथि। क्रुद्ध राम और लक्ष्मणक द्वारा फेंकल शरक आगाँमें के ठाढ़ भैसकत, और हे राजन् तीनू लोकमें एहेन केओ नहिं अछि जे रामचन्द्रक अप्रिय कैंकै सुख पावि सकै, तैं हेतु त्रिकालमें हित धर्मयुक्त उपकारी हमर वचनकैं अहाँ मानी और ओहि नरश्रेष्ठ रामकैं जानकी दै दिअन्हि। पाँच मुख वाली नागिन जकाँ ई जानकी अहाँक घरमें छथि जाहि विषयकैं अहाँ नहिं बुझैतछी। जैं प्रकारैं केओ बलवान् व्यक्ति विषसँ मिलल अन्नकैं नहिं पचाय सकैत अछि ताही प्रकारैं केओ सीताकैं राखि नहिं सकैत अछि। उग्र तपस्याक द्वारा अहाँ जे ई धर्मस्वरूप प्राप्त कैल अछि, तकरा नष्ट करब उचित नहिं थिक। एहिमें संशय नहिं जे अहाँ अपन धर्मक फलकैं पाओल परन्तु एहि अधर्महुक फलकैं शीघ्र पाएब। खरदूषणक नाश, बालिक वध और राम-सुग्रीवक मैत्रीकै विचारि अहाँ अपन हितक विचार करू। हम एकसर एहि समस्त लंकाक नाशकै सकैत छी, परन्तु रामक से निश्चय नहिं छन्हि, ओ सीताक हरण

कैनिहारक नाश स्वयं करवाक हेतु प्रतिज्ञा कै चुकल छथि। रामक अपकार कैकै साक्षात् इन्द्रो सुखी नहिं रहि सकैत छथि, अहाँक बाते की ! जनिकाँ अहाँ सीता बुझैत छिअन्हि जे कि अहाँक घरमें छथि हुनका समस्त लंकाक नाश कैनिहारि कालरात्रि बुझू। तैं हेतु सीताक स्वरूपमें स्थित कालपाशकैं अपन कान्ह पर चढ़ायकैं अपन कल्याणक विचार करू।"

विचार करवाक थिक जे प्रबल राक्षसेश्वर रावणक सोझामें ब्रह्मपाशसँ बद्ध हनुमान केहेन दृढ़ताक संग रावणकैं उत्तर देलथीन्ह, हुनका रावणक कनेको भय नहिं छलन्हि किऐकतँ ओ जे किछु कहल-थीन्ह ओ धर्मयुक्त, सत्यपूत औ न्याय्य उपदेश छल। जँ रावण हनुमानक उत्तरक अनुकूल कार्य करितथि तँ निश्चय अनुचित कार्य भैगेलहु पर हुनक नीक होइतन्हि परन्तु कठिन पाप हुनका से बुद्धि नहिं होमै देलकन्हि जे तदनुकूल कार्य करितथि।

सारांश ई थिक जे गपशपमें युक्तियुक्त न्याय्य विषय दृढ़ताक संग कहवैक थिक एहिमें संकोचक प्रयोजन नहिं छैक।

गपशपमें प्रवीणता

गपशपमें प्रवीणता अभ्याससँ होइत अछि, विदेशमें रहलापर होइत अछि और अनेक प्रकारक लोकक संगतिसँ होइत अछि।

जे लोक लोकक समवाय ओ संघर्षमें जैतहि नहिं छथि वा जाइओ कैं नहिं बजैत छथि वा थोड़ बजैत छथि से व्यक्ति गपशपमें प्रवीण नहि भैसकैत छथि। अतएव अहू विषयमें प्रवीणता अभ्याससँ अर्थात् अनेक व्यक्तिक संग आलाप कैलासँ प्राप्त होइत अछि।

अपन घरपर लोककैं एतेक स्वातन्त्र्य रहैत छन्हि जे ओ बजवामें कोनो विशेष नियमक पालन नहिं करैत छथि किन्तु जखन घरक बाहर विदेश जाइत छथि तखन हुनका दोसर व्यक्तिक रुचि, परिस्थिति अवसर देखिएकैं बजवाक अवसर होइत छन्हि और ओ जे किछु बजैत छथि तकरा खूब सम्हारिकैं कहैत छथि जाहिसँ ओ विषय श्रोताक अप्रिय नहिं होइन्हि। जँ वक्ता ताहि सव विषयक ध्यान नहिं राखथि तँ पद-पदमें अपमान गञ्जन और हानिक संभावना रहतैन्हि। तैंहेतु विदेशमें लोक स्वभावतः गपशपक रीतिसँ अवगत भैजाइत छथि। एही विषयकैं आधारमें राखिकैं ई बात स्पष्ट बुझल जाइत अछि जे जे व्यक्ति अनेक प्रकारक व्यवसायवाला लोकसँ संपर्क रखैत छथि हुनका एहि विषयमें विशेष ज्ञान प्राप्त होइत छन्हि। भिन्न भिन्न समाजक कायदा-कानून, नियम भिन्न भिन्न छन्हि ताहि सव विषयकैं जननिहारे ताहि ताहि लोकक संग उपयुक्त रीतिसँ आलाप कै सकैत छथि। एवं शास्त्रव्यवसायीक आलाप शास्त्र-सम्बन्धी होएत, व्यापारीक गपशप व्यापार सम्बन्धक होएत, कानूनदाँ लोकक गपशप कानून सम्बन्धी होएत और राजनैतिक पुरुषक आलापक आधार राजनीति होएत ततै केवल एक कोनो विषयमें जीवन बितौनिहार लोककैं एहि विभिन्न प्रकारक लोक सवहिक संग आलापमें मधुरता कतैसँ औतन्हि। एहि सव प्रकारक लोककैं गपशप सँ संतुष्ट कैनिहार लोकतँ सैह भै सकैत छथि जनिकाँ एहि सव प्रकारक लोकक संग परिचय होइन्हि। एक विषय ध्यान देवाक योग्य इहो अछि जे साधु सत्य प्रियवक्ता लोक प्रत्येक समाज ओ प्रत्येक परिस्थितिमें लोकक प्रीतिभाजन होइत छथि अवश्य, किन्तु तावता हुनक द्वारा गपशप जन्य जे लाभ तकर प्राप्ति नहिं होइत

अछि अतएव एहि दिशामें प्रवीणता प्राप्त करब एक विभिन्न विषय थिक। सारांश ई भेल जे बहुदर्शी, बहुत दूर घूमल, बहुत लोकसँ मिलल तथा व्यापक लोके एहि विषयमें प्रवीण भै सकैत छथि।

सुन्दर गपशप एक कला थिक

संसारमें मनुष्यक श्रम और बुद्धिसँ निर्मित जतेक सुन्दर और लोकक मनकैं आह्लादकारक तथा उपकारक वस्तु छैक ताहि सबकैं लोक दुइ नामसँ संकेतित करैत छथि—कला और विज्ञानसँ। जहिना 'उक्तिविशेषः काव्यम्' साधारणो कथाकैं नीक जकाँ कहला सँ ओ काव्य भै जाइत अछि ताहीरूपैं साधारणो कार्य नीकजकाँ कैलासँ ओ कला भै जाइत अछि। साधारणरूपैं बनल घर घरे कहबैत अछि किन्तु आगराक ताजमहल एक कला कहबैत अछि। साधारणरूपैं चलब चलब मात्र थिक, किन्तु नर्त्तक वा नर्त्तकी जखन एक विशेषताक संग नचैत अछि तखन ओ कला भैजाइत अछि। एही कलाकैं जखन विशिष्ट ज्ञानक संग सम्बन्ध होइत छैक तखन विज्ञान भैजाइत अछि। इञ्जिन, तार, टेलीफोन, फोनोग्राफ इत्यादि विज्ञान थिक।

साधारण आलाप आलापे थिक, किन्तु जखन ताहि आलापमें विशेषता अबैत छैक तखन ओ कला भैजाइत अछि। दुखी मन, उद्विग्न मन, कार्यसँ विरत मन जखन कोनो आह्लादजनक गपशपकैं सुनिकैं प्रसन्न भैजाइत अछि, शान्तिकैं प्राप्त करैत अछि और कार्य-संलग्न भैजाइत अछि ओ गपशप एक प्रकारक कला थिक। परस्पर लड़वाले सन्नद्ध दुइ राष्ट्रकैं जे राजदूत अपन सुन्दर वाक्य योजना द्वारा शान्त कराय मैत्रीमें परिणत करैत छथि ताहि राजदूतक ओ

आलाप कला थिक ।

साधारणरूपैं अभियोगक कथा कैं जानि क्रुद्ध न्यायाधीशकै एक बुद्धिमान् ओकील ताही अभियोगकैं ताहि रूपैं बुझवैत छथि जाहिसँ न्यायाधीश शान्त भै अभियुक्तकै निर्दोषी कहि मुक्त करैत छथि। ओकीलक तादृश बहस एक कला थिक ।

महाभारत युद्धक समयमें अर्जुनक गाण्डीवक निन्दा कैनिहार युधिष्ठिरक प्रति अर्जुन एतेक क्रुद्ध भैगेलाह जे हुनक वध करवालै उद्यत भैगेलाह ताहि स्थितिमें जाहि सुन्दर आलापक द्वारा कृष्ण अर्जुनकैं शान्त कैल हुनका प्रकृतिस्थ कैल ओ आलाप एक कला थिक ।

बन्दीगृहमें आबद्ध छत्रपति शिवाजी अपनाकैं रोगी बनाय जाहि आलापैं औरंगजेबक कर्मचारी सबहिकैं विश्वस्त कैल और अपन मुक्तिक मार्गकैं प्रशस्त कैल ओहो आलाप कला थिक ।

जँ आलापमें कलात्व नहिं रहितैक तखन एकर गणना विशेषतामें नहिं अबितैक। जैं रूपैं लोक मनमें विचारि अपन शारीरिक चेष्टैं कलाक निर्माण करैत अछि ताहीरूपैं मनमें विशिष्ट कल्पना कैं वाक्य द्वारा प्रकाश करब कला थिक ।

कलाकै स्वरूप छैक तकर अस्तित्व रहैत छैक। ताही रूपै गपशपो यदि लिपिबद्ध भैजाय तँ तकर स्वरूप भैजाइत छैक। लोक आँखिक द्वारा कलाक कार्य कैं देखि तकर अनुभव मनहिमें करैत अछि, ताही रूपैं लिपिबद्ध सुन्दर गपशपकैं पढ़िकै तकर अनुभव मनमें कैल जाइत अछि। हमरा लोकनिक शास्त्रमें जे कलाक ६४ प्रभेदक वर्णन कैल गेल छैक ताहिमें गपशपहुक निवेश होइत छैक ।

प्रकृति ईश्वरक कला थिक। अतएव प्रकृत्या लोकक बुद्धिमें जे वैशिष्ट्य रहैत अछि ओहो ईश्वरक कला थिक। तादृश ईश्वरप्रदत्त कलाक समन्वयेँ लोकक शारीरिक श्रमसँ निर्मित विशिष्ट वस्तु कलाक संज्ञाकैं प्राप्त कै वस्तुतः ओहो ईश्वरहिक कला थिक। बाह्य दृष्टिएँ ईश्वर-निर्मित कला और मनुष्य-निर्मित कलामें भेद परिलक्षित रहनहु वस्तुतः सब कला ईश्वरहिक थिक।

बहुत लोक एहनो विचारक होइत छथि जनिकाँ कला में प्रसन्नता नहिं होइत छन्हि ओ प्राकृतिके सब वस्तुकैं देखै चाहैत छथि एकर मुख्य निदर्शन कवि वर्डसवर्थ wordsworth छथि। हुनक The world is too much with us नामक कविता स्पष्ट करैत अछि जे हुनका कलाक कार्य पसिन्द नहिं छन्हि। फुलबाड़ी में मेहदीक लता सब कैं काटि-छाँटि जे सुन्दर हाथी, घोड़ा, हरिण इत्यादिक स्वरूप बनाओल जाइछ; गृहनिर्माण कै जे सुन्दर चित्रादि लिखल जाइत अछि; बड़-बड़ पैघ सुन्दर जे पुल इत्यादि बनाओल जाइत अछि तकरा उक्त कवि नापसिन्द करैत छथि। ओ सब प्राकृतिक विषयहि में आनन्दानुभव करैत छथि, एही प्रकारक संसारमें और प्राणी छथि जनिकाँ स्वाभाविके सब विषय प्रिय होइत छन्हि। ताहि लोकनिक हेतु केवल स्थितिक यथार्थ वर्णने उपयुक्त थिकन्हि, तकरामें काव्यत्व देव समुचित नहिं बुझैत छथि। हुनका ताहिमें चीढ़े उत्पन्न होइत छन्हि तथापि साधारणतया लोक ताही विचारक होइत छथि जनिकाँ कलाक विषये पसिन्द होइत छन्हि। दृष्टान्तक हेतु शहरक बाहर जाय देहातक प्राकृतिक शोभा देखनिहार लोक अल्प होइत छथि किन्तु ताजमहल देखबाक हेतु बहुत लोक जाइत छथि। अतएव कलाहिक दिशि

लोकक दृष्टि विशेष रूपैं छन्हि; स्वाभाविक विषय दिशि अल्प। प्राकृतिक विषय में तँ आनन्दक अनुभव कैनिहार साधु महात्मा लोके होइत छथि जनिक संख्या जगत् में बड़ अल्प अछि। अतएव कलाक विषयहि पर लोकक ध्यान विशेष रूपैं छन्हि। वर्तमान् जगत् तँ कलाहिक दिशि दौड़ि रहल अछि। जाहि ठाम लोक पटिया पर बैसिकै कार्य करैत छलाह ततै कुर्सी टेबुल तकर नीचामें ओछाओल दरी विना काज चलवाक योग्य नहिं।

भारतक लोक कलाक प्रेमी छलाह तकर प्रचुर प्रमाण अछि, परन्तु हुनका लोकनिक कलाक प्रेम विशिष्ट कला संपादनहिमें छलन्हि। वस्तु-मात्र में कला-संपादनक यत्न नहिं करैत छलाह। वस्तु मात्रमें कला कैं आनवाक प्रवृत्ति युरोपिअन लोकक देन थिक। आबतँ अहू देशक लोक विषय मात्रकैं कलामें परिणत देखै चाहैत छथि और कहाँ धरि जे अपन स्वरूपहुकैं कलामें परिणत करैत छथि। तादृश परिस्थिति में अपन वाणी कैं कलामें परिणत नहिं करबे अप्रासङ्गिक थिक, अतएव सुन्दर गपशप आइकाल्हुक समयमें सुन्दर जकाँ कला थिक। और ई कला अन्य कलाक अपेक्षा एक विशिष्ट कला थिक कारणजे अन्य पर्यवेक्षकक अपेक्षें गपशप रूप कलाक पर्यवेक्षक विशिष्ट लोक होइत छथि। ताजमहलक पर्यवेक्षक आपामर सब भैसकैत अछि जकरा ईश्वर आँखि देने छथीन्ह; यद्यपि सब कैं तकर वैशिष्ट्य बुझवाक सामर्थ्य नहिंओ रहैत छन्हि। किन्तु आलापरूप कलाक पर्यवेक्षक सकल साधारण नहिं भै विशिष्ट बुद्धिक लोके होइत छथि। तैंहेतु गपशपकैं कलारूप में परिणत करवा में बड़ बुद्धिमत्ताक आवश्यकता छैक। परन्तु विशिष्ट गपशप एक सुन्दर कला थिक अवश्य।

किछु उदाहरण

सुन्दर गपशपक किछु उदाहरण आर्य संस्कृतिसँ उद्धृत करैतछी—

राजा दुष्यन्त कण्वक आश्रममें जाइत छथि और ततै अनुसूया तथा प्रियंवदा सखीक संग संग शकुन्तलासँ पुछैत छथीन्ह :—

राजा—कि अहाँ लोकनिक तपस्या बढ़ि रहल अछि तँ ?

अनुसूया—एहि समय विशिष्ट अतिथिक लाभसँ ।

प्रियंवदा—आर्यक स्वागत हो, ऐ शकुन्तला ? जाउ झोपड़िसँ फल सहित अर्घ्यपात्र लै आउ और ई (घटस्थ) जल पैर धोएवाक निमित्त रहऽ ।

राजा—अहाँ लोकनिक सुन्दर कथहिसँ आतिथ्य भैगेल ।

अनुसूया—आर्य ! छायासँ शीतल एहि सप्तपर्णवेदिकामें तावत्काल वैसिकैं श्रम दूर कैल जाय ।

राजा—अहौं लोकनि एहि धर्मक्रियासँ परिश्रान्त भैगेलछी तैंहेतु थोड़ेक काल वैसि जाउ । अहाँ लोकनिक सौहार्द, समान वयस तथा समान रूपक कारण रमणीय अछि ।

अनुसूया—आर्यक मधुर आलापसँ उत्पन्न विश्वास हमरा ई पुछवा रहल अछि जे आर्य कोन राजर्षिवंशकैं अलंकृत कैनेछी ? अपने अपन अनुपस्थितिसँ कोन देशकैं उत्सुक कैरहलछी और सुकुमार आर्य कोन प्रयोजनसँ एहि तपोवनमें अयवाक कष्ट उठाओल अछि ?

राजा—हम वेदवित् पौरव राजाक नगरधर्माधिकारमें नियुक्तछी । पुण्याश्रम दर्शनक इच्छासँ एहि धर्मारण्यमें आएल छी ।

अनुसूया—आइ धर्मचारी लोकनि सनाथ भैगेलाह ।

राजा—हमहुँ अहाँ दुनूक सखीक विषयमें किछु पूछै चाहैतछी।

दुनू सखी—आर्य अनुग्रहहुमें अभ्यर्थना!

राजा—भगवान् कण्व तँ नैष्ठिक ब्रह्मचारी छथि, अहाँ दुनूक ई सखी हुनक कन्या थिकीह, ई कोना भेलैक?

अनुसूया—आर्य! सुनल जाय, कौशिक गोत्रनामक महाप्रभावशाली राजर्षि छथि।

राजा—हँ हँ, भगवान् कौशिक।

अनुसूया—वैह हमर सखीक कारण थिकाह। एहि त्यक्त कन्याक शरीरसंवर्धनादिसँ कण्वो हिनक पिता थिकथीन्ह।

राजा—त्यक्त शब्दसँ हमर कुतूहल बढ़ि गेल तँ हेतु प्रारंभहिसँ सब विषय जानवाक इच्छा होइछ।

अनुसूया—आर्य! सुनल जाय। पहिने ओ राजर्षि जखनं उग्र तपस्यामें प्रवृत्त छलाह तखन सशङ्क देवतालोकनि नियममें विघ्न कैनिहारि मेनका नामक अप्सराकैं हुनका ओतै पठौलथिन्ह।

राजा—हँ, देवतालोकनि दोसराक तपस्यासँ शङ्कित भैजाइत छथि, तखन तखन।

अनसूया—तखन वसन्तागमक सुन्दर रमणीय समयमें हुनक उन्मादक रूपकैं देखिकैं—

राजा—आगाँ बूझि गेलहुँ, सर्वथा अप्सरासँ उत्पन्ना थिकीह।

अनुसूया—हँ।

राजा—यथार्थ थिक, मानुषीसँ एहेन रूपक उत्पत्ति कोना भैसकैत अछि। लावण्यपूर्ण ज्योति पृथिवीतलसँ नहिं उत्पन्न भैसकैत अछि।

एहि आलापक तत्त्व एतवैक थिक जे दुनू सखी राजाक विषयमें

और राजा शकुन्तलाक विषयमें जानै चाहैत छलाह, किन्तु एहि विषयकै जानवामें कतेक सौष्ठव और सौन्दर्य अछि एहि गपशपमें केहेन सभ्यता निवेष्ट अछि ।

दोसर दृष्टान्त लेल जाय

राजा रघु वरतन्तु ऋषिक शिष्य कौत्सक सङ्ग कोन रूपैं गपशप कैरहल छथि ।

राजा रघु सर्वस्व दक्षिणा वाला विश्वजित यज्ञ समाप्तकै अकिञ्चन-रूपमें वैसल छथि। ताहि स्थितिमें प्राप्तविद्य स्नातक कौत्स गुरु-दक्षिणाक हेतु राजा रघुक लग अवैत छथि । अपना लगमें सोनाक पात्र नहि रहवाक हेतु राजा माटिक पात्रसँ अभ्यागतक अर्घ्य करैत छथि। तदुत्तर ताहि तपोधन ऋषि-शिष्यकें आसन पर वैसाय और हाथ जोड़िकैं राजा कहैत छथीन्ह, जैंरूपैं सूर्य नारायणसँ चैतन्य प्राप्त कैल जाइत अछि ताही रूपैं जनिकासँ अपने सब ज्ञान लाभ कैल अछि ओ मन्त्रद्रष्टा ऋषि अपनेक गुरु कुशल तँ छथि? अपनेक गुरुक तपस्या जे कि शरीर, वाणी ओ मनसँ कैल जाइत अछि और जे इन्द्रहुक धैर्यक नाश कैनिहार थिक ताहिमें कोनो विघ्न तँ नहिं छन्हि? पुत्र जकाँ पालित आश्रम वृक्षमें कोनो उपद्रवतँ नहिं छन्हि? आश्रमक मृगकैं तँ कोनो कष्ट नहिं छन्हि? जाहि तीर्थजलमें अपने लोकनि स्नान करैतछी, जाहि जलसँ तर्पण और देवपूजन करैतछी ताहिमें कोनो प्रकारक बाधा तँ नहिं अछि? शरीरकैं कार्यक्षम रखवाक हेतु नीवार इत्यादिक प्राप्तिमें पशुक बाधा तँ नहिं अछि?

बूझि पड़ैछ महर्षि प्रसन्न भैकै सर्वथा शिक्षित अपनेकैं गृहस्थाश्रममें प्रवेश करवाक हेतु आज्ञा देने छथि; किऐक तँ एहि

आश्रममें जयवाक अपनेक उपयुक्त समय अछि और एही आश्रमके सभक उपकार करवाक क्षमता छैक। पूज्य अपनेक केवल आगमन मात्रसँ हमर मन परम संतुष्ट नहिं भेल अछि किन्तु अपनेक आज्ञा-पालनक हेतु उत्सुक भै रहल अछि तैं कृपया अपन आज्ञासँ अथवा अपन गुरु महाराजक आज्ञासँ हमरा कृतार्थ कैल जाय।

मृण्मयपात्रसँ अकिञ्चनत्व प्रकट होइतहु रघुक उदारवाणीकैं सुनिकैं अपन अर्थसिद्धिमें अल्प आशाकैं रखितहु वरतन्तुक शिष्य कौत्स राजाकैं उत्तर देलथीन्ह :—

हे राजन्! हमरा लोकनिक सर्वथा कुशल जानल जाय, सूर्य-नारायणक तेज रहैत जैंरूपैं अन्धकारक कल्पना नहिं कैल जा सकैछ तैं रूपैं अपनेकाँ प्रभु रहैत प्रजाक अकल्याणक कोन संभावना? पूज्यमें भक्ति अपनेकैं कुलोचित थिक परन्तु अपने तँ एहि विषयमें अपन पूर्वजहु कैं जीत लेल अछि। हमरा एहि बातक खेद अछि जे हम असमयमें अपनेक ओतै याचक रूपमें उपस्थित भेलछी। हमरा एहेन बोध होइछ जे अपने सत्पात्र में सब संपत्ति दान कै देल अछि, आब केवल शरीर मात्रसँ अपने उपस्थित छी। तैंहेतु गुरुक निमित्त आब हम कोनो दोसर दातासँ याचना करब। वर्षाऋतु में सब जल बाहर भैगेला पर चातक शरत् ऋतुक मेघसँ जलक याचना नहिं करैत अछि।

एतवाक कहि जखन महर्षिक शिष्य कौत्स जाय लगलाह तखन राजा हुनका रोकिकैं पुछलथीन्ह जे अपनेकैं गुरुक हेतु कोन वस्तु कतेक प्रदेय अछि से कृपया कहल जाय। तखन समापितयज्ञ, निरभिमान वर्णाश्रमक नियामक ताहि राजासँ कौत्स कहल : विद्या समाप्तकैं हम

गुरु महाराजसँ गुरु दक्षिणाक हेतु प्रार्थना कैलिअन्हि। सर्वदा हमर सुश्रूषासँ संतुष्ट हमर गुरु हमर भक्तिअहिकैं गुरुदक्षिणामें स्वीकार कैलन्हि। जखन हम बड़ आग्रह कैलिअन्हि तखन हमर दीनताक विना विचार कैनहि चौदह कोटि धन देवाक हेतु कहलन्हि; कारण जे हम चौदह विद्या हुनकासँ सीखनेछी। किन्तु विद्यामूल्यक महत्त्वक विचारके और एम्हर माटिक पात्रसँ अपनेकैं केवल प्रभुशब्द शेष बूझि निवेदन करवामें असमर्थ भैरहलछी। कौत्सक एहि कथाकैं सुनि राजा कहलथीन्ह : गुरुक हेतु वेद पारदर्शी अपनेक सदृश याचक रघुसँ अपन मनोरथकैं विना पूर्ण कैनहि दोसर दाताक लग जाथि ई प्रथम अपवादक अवतार हमरा हेतु जनु हो। तैंहेतु अपने कृपाके हमर अग्निशालामें चतुर्थ अग्निक सदृश दुइ अथवा तिन दिन रहल जाय यावत्काल अपनेक अर्थक साधनक हेतु हम यत्न करैतछी।

ई दोसर गपशपक ढङ्ग थिक। देखल जाय एहि में कतेक विनय तथा कतेक कर्त्तव्य ज्ञान-छैक।

आब वाल्मीकि रामायणसँ गपशपक एक उदाहरण उपस्थित करैतछी :—

लङ्काक अशोक-वाटिका में जाहिठाम सीतादेवी छलीह ततै श्री हनुमान् जी उपस्थित भै मधुर वाणी द्वारा कहै लगलथीन्ह : कमल तथा पलाशक सदृश आँखिवाली, रेशमी वस्त्र कैं पहिरने प्रशंसित अपने गाछक डारिकैं पकड़ने ठाढ़ि किऐकछी? अपनेक सुन्दर दुनू आँखिसँ शोकाश्रु किऐक बाहर भैरहल अछि? की अपने देवता असुर, नाग, गन्धर्व, राक्षस, यक्ष, किन्नर, रुद्र, मरुत और वसु एहि सवमें केओ थिकहुँ? हमरातँ अपने देवी बोध होइतछी। की अपने रोहिणी थिकहुँ?

चन्द्रमा कैं स्वर्ग लोक में छोड़िकैं एतै आइलिछी की? अथवा कि अपने अरुन्धती थिकहुँ, क्रोध अथवा मोहसँ भर्त्ता वसिष्ठकैं क्रुद्धकै एतै आइलिछी की? परन्तु अपनेक कानवसँ अनेक श्वास-प्रश्वाससँ और पृथ्वी पर ठाढ़ि रहवासँ तथा राजाक नाम लेलासँ हमरा बूझि पड़ैछ जे अपने देवी नहिं थिकहुँ। अपनेक शरीर मे जे चिह्न और लक्षण अछि ताहि-सँ तँ अपने कोनो राजकन्या तथा राजमहिषी बूझि पड़ैतछी। यदि बल सँ रावण जनस्थानसँ अपने कैं एतै अननेहो तँ की अपने सीता देवी थिकहुँ कृपया कहल जाय। अपनेक दुःख, अपनेक मनुष्य-दुर्लभ स्वरूप और अपनेक तपस्यायुक्त वेषकैं देखिकै हमरा तँ निश्चय बोध होइछ जे अपने रामक स्त्री थिकहुँ।

हनुमान्‌जीक एहि सव कथाकैं सुनिकै श्री सीता देवी कहलथीन्ह : पृथिवीक राजामें श्रेष्ठ, शत्रुकैं दवौनिहार, विदितात्मा दशरथक पुत्रवधू; महात्मा विदेह जनकक कन्या और बुद्धिमान् रामक स्त्री हम सीता थिकहुँ। रामचन्द्रक घर में मनुष्य-भोग कैं भोगैत सव मनोरथ सँ पूर्ण होइत हम बारह वर्ष समय ततै बिताओल। जखन तेरहम वर्षक आरंभ भेलैक तखन उपाध्याय वसिष्ट सहित राजा दशरथ रामचन्द्रकैं अभिषेक देमै चाहलन्हि। जखन अभिषेकक सव संभार पूर्ण भै गेलन्हि तखन कैकेयी राजाकै कहलथीन्ह जे यदि अहाँ रामकैं अभिषेक देवन्हि तँ हम ने खाएव ने पीउव और एही प्रकारैं जीवनक अन्त करव। हे राजश्रेष्ठ, अपने प्रीतिपूर्वक हमरा जे वरदान देनेछी तकरा यदि असत्य नहिं करी तँ रामकैं वनवास दिअन्हु। सत्यवाक् राजा कैकेयीकैं देल वरदानक स्मरण कै और कैकेयीक अप्रिय क्रूर वचनकैं सुनिकै मूर्छित भैगेलाह। तखन सत्यधर्म में व्यवस्थित

वृद्ध राजा कानिकैं यशस्वी ज्येष्ठ पुत्रसँ राज मङ्लन्हि । रामकैं तँ अभिषेक सँ प्रिय पिताक वचनक पालन बूझि पड़लन्हि तैं ओ तकरा स्वीकार कैलन्हि । सत्यपराक्रम राम दितहि छथि, ककरहुसँ किछु लैत नहिं छथि । अपन प्राणरक्षाहुक निमित्त असत्य नहिं बजैत छथि । राम बहुमूल्य उत्तरीय वस्त्र कैं उतारि मनसँ राज्यकैं छोड़ि देलन्हि । और हमरा अपन माताक ओतै समर्पित कैलन्हि, किन्तु हम पहिनहि वन जयवाक हेतु हुनक आगाँमें ठाढ़ि भैगेलहुँ किऐक तँ हुनक विना हमरा स्वर्गवासो पसिन्द नहिं अछि । महाभाग लक्ष्मणो पहिनहि वल्कलसँ अलंकृत भै ज्येष्ठभ्राता रामक पाछाँ जैवाक हेतु सन्नद्ध भैगेलाह । एहि प्रकारैं स्वामीक आज्ञाकैं मानि दृढ़व्रत भै, पहिने कहिओ नहिं देखल गंभीरदर्शन वनमें हमरा लोकनि प्रवेश कैल । दण्डकारण्य में वसैत हमरा दुरात्मा रावण हरि अनलक । ओ दुइ मासक हेतु हमरा जीवन-दान कैने अछि, दुइ मासक बाद हम जीवन छोड़ब। दुख सँ पूर्ण सीता-जीक एहि वचन सबकैं सुनिकैं, हुनका सान्त्वना देवाक इच्छासँ हनुमान्‌जी हुनका कहलथीन्ह :—

हे देवि ! हम रामक दूत थिकहुँ । हुनके सन्देशकैं लैकै एतै आएलछी, ओ कुशल छथि और अपनेक कुशल पुछने छथि । महा-तेजस्वी लक्ष्मण जे अपनेक पतिक प्रिय तथा सर्वदा संग रहनिहार छथि अत्यन्त शोकातुरभै शिरसा अपनेक अभिवादन कैने छथि । श्री सीतादेवी नरश्रेष्ठ ओहि दुनू भ्राताक कुशलकैं सुनिकै प्रसन्नता-पूर्वक हनुमान्‌सँ कहलथीन्ह—ई लोक प्रसिद्ध कथा हमरा अत्यन्त हितकर बूझि पड़ैत अछि जे जीवनधारण कैनिहार लोककैं सैओवर्ष पर एक दिन आनन्द अबितहि छन्हि । एहि रूपैं दुनू गोटै विश्वस्त भै

वार्त्तालाप करै लगलाह ।

ई वार्त्तालाप केहेन मधुर अछि। अपरिचित अवस्थामें हनुमानजी केहेन सुन्दर जकाँ आलाप उठौलन्हि अछि जाहिसँ सीताजी विश्वस्त भैजाथि । हुनक कथनमें केहेन सुन्दर युक्ति सब अछि और एहि उक्ति प्रत्युक्तिमें कतेक लावण्य अछि । सीताजी केहेन सुन्दरजकाँ संक्षेपमें अपन परिचय देने छथीन्ह । सबसँ बढ़िकैं ध्यान देबाक योग्य विषय ई अछि जे हनुमान्जी रामजीक सन्देशमें कुशल-मंगले पुछने छथीन्ह किऐकतँ संसारी जीवकैं जनिक पार्श्वमें मृत्यु वैसल रहैत छन्हि तनिक हेतु सबसँ प्रथम प्रष्टव्य विषय कुशले थिक तैंहेतु कवि कालिदास मेघदूतमें यक्षक संवादमें सबसँ पहिने कुशले पुछबौने छथीन्ह "अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्तः, पूर्वाभाष्यं सुलभविपदां प्राणिनामेतदेव" ई सब सुन्दर गपशपक आदर्श उदाहरण थिक ।

कुमार-संभवमें वर्णित एक आलापक उदाहरण :—

सप्तर्षि लोकनि घटकरूपैं हिमालयक ओतै गेलाह । हिमालय हाथ जोडिकैं ठाढ़ भैगेलाह और बेंतक पटिया पर आदरपूर्वक हुनका लोकनिकैं वैसाय कहै लगलथीन्ह—

आइ अपने लोकनिक ई अचिन्तित दर्शन एहि प्रकारक बोध होइछ जना विना मेघक वर्षा और विना फूलक फल हो । अपने लोकनिक अनुग्रहसँ आइ अपनाकैं ताहि प्रकारैं बुझैतछी जना अज्ञानी ज्ञानवान् भैजाय, लोह सुवर्ण भै जाय और पृथ्वी परसँ केओ स्वर्ग चल जाय । आइसँ लोकक शुद्धिक हेतु हम तीर्थस्थान भैगेलहुँ कारणजे वैह तीर्थस्थान थिक जतै नीक लोक जाथि । हम अपनाकैं दुइए कारण-सँ पवित्र बुझैतछी एक श्रीगङ्गाजीक माथ पर प्रवाहसँ द्वितीय अपने

लोकनिक पादप्रक्षालन जलसँ। स्थावर जङ्गम दुइ प्रकारक जे हमर रूप अछि ताहि दुनू पर अपने लोकनि अनुग्रह कैल अछि एहेन हमरा बोध होइछ। चरण रखलासँ स्थावर रूप पर और कोनो कार्य-में नियुक्त करवाकहेतु जङ्गमरूप पर। एक दिशासँ दोसर दिशा तक व्याप्त हमर विशाल शरीरमें अपने लोकनिक अनुग्रह-जन्य हर्ष सीमित नहिं भैरहल अछि अर्थात् अपार हर्ष हमरा भैरहल अछि। तेजोवान् अपने लोकनिक दर्शनसँ केवल हमर कन्दराक अन्धकार मात्रे नहि दूर भैरहल अछि अपितु हमर अन्तर्गत जे अज्ञानरूप तम अछि सेहो नष्ट भैगेल अछि। यद्यपि निष्पृह अपने लोकनिक हेतु हम किछु कैसकी से नहिं देखैतछी तथापि हमर योग्य जे कर्त्तव्य हो तदर्थ कृपया आज्ञा देल जाय। हम बुझैतछी जे हमरा पवित्र बनैवाक हेतुए अपने लोकनिक एतै आगमन भेल अछि तथापि हमरा किछु आज्ञा देल जाय किएकतँ सेवक अपन प्रभुक अनुग्रह तैखन बुझैत छथि यदि प्रभु हुनका कोनो कार्यमें नियुक्त करैत छथीन्ह। हम, हमर स्त्री और हमर कुलक प्राणहुसँ प्रिय ई कन्या एहि सवसँ जाहिसँ अपने लोकनिक कार्य हो कृपया कहल जाय। आन वस्तुक तँ बातेकी, सव अपने लोकनिक अधीन अछि। तखन ऋषि लोकनि अपना सवहिमें श्रेष्ठ आङ्गिरसमुनिकैं उत्तर देवाक हेतु कहलथीन्ह और ओ हिमालय सँ कहै लगलाह—

अपने जे किछु कहल अछि सव अपनेक योग्य अछि। अपनेक शिखर जतवैक ऊँच अछि तेहने ऊँच अपनेक मन अछि। स्थावररूपमें अपने विष्णु छी और पृथिवी आदि सव प्राणीक आधार छी। अपनेहिक वलसँ शेषनाग अपन कोमल फणा पर पृथिवीकैं धारण

कैने छथि। अपनेक कीर्त्ति तथा अपनेक गङ्गा आदि नदी लोककैं पवित्रकै रहल अछि। जैंरूपैं विष्णुक चरणसँ बहरैवाक हेतु श्रीगङ्गाक प्रशंसा छन्हि तैंरूपैं अपन माथ पर रखवाक कारणें अपनहिं गङ्गाक उत्पत्ति-स्थान छी। त्रिविक्रम विष्णुक महिमा ऊपर और नीचाँ और तिर्यक छन्हि किन्तु अपनेक ओ महिमा स्वाभाविक थिक। देवता लोकनिक संग यज्ञांश लेवाक कारणैं मेरुहुक उच्च सुवर्णमय शृङ्गकैं अपने व्यर्थकै देलन्हि। अपने अपन सव काठिन्य स्थावर रूप में दैदेल, सज्जनक आराधन योग्य अपनेक ई जङ्गम शरीर भक्ति-नम्र अछि। आव अपने कृपाकै हमरा लोकनिक अयवाक कारण जे वस्तुतः अपनेहिक कार्य थिक सुनल जाय। सुन्दर प्रस्तावकैं आनवाक हेतु हमरहु लोकनि एहि पुण्यक अंशभागी छी।

जे गुण दोसरा में नहिं छैक एहेन अणिमादि गुणसँ युक्त अर्धचन्द्रकैं धारण कैनिहार, परमेश्वर कहिकै ख्यात, पृथिवी आदि अष्टमूर्त्तिसँ एहि ब्रह्माण्डकैं धारण कैनिहार, योगी लोक जनिकाँ सर्वभूतान्तर्यामी कहैत छथीन्ह, जनिक स्थान पर गेला पर पुनः घुरब नहिं होइत छैक और संसारक सव कर्मक साक्षी, वर देनिहार साक्षात् श्रीमहादेव हमरा लोकनिक द्वारा अपनेक कन्या पार्वतीक याचना करैत छथि अतः अर्थक हेतु वाणीक सदृश हुनका अपन कन्यासँ युक्त कैल जाय। पिता गुणवान् वरकैं कन्या दैकै निश्चिन्त भै जाइत छथि। चर अचर जतेक प्राणी अछि सव हिनका माता बनावथि; किऐक तँ श्रीमहादेवजी संसारक पिता थिकाह। देवता लोकनि पहिने श्रीशिवजीकैं प्रणामकै तदुत्तर एहि देवीक चरणकैं अपन मस्तकालङ्कारक किरणसँ शोभित करथु। जतै पार्वती कन्या, महादेव वर, अपने देनिहार और

हमरा लोकनि मङनिहार छी तँ ई सब अपनेक कुलक विशिष्टताक द्योतक थिक। एहि कन्याकेँ विवाहार्थ दै संसारक पूज्य महादेवहुक पूज्य अपने बनी।

हिमालय एहि प्रस्तावसँ सर्वथा संमत भैओकें मेनाक मुखकेँ देखै लगलाह। किऐक तँ कुटुम्बी लोक कन्याक विषयमें स्त्रीक विचारक प्राधान्य दैत छथि। मेनो पतिक अभीष्ट कार्यक समर्थन कैलन्हि कारण जे पतिव्रता स्त्री पतिक विचारक विरुद्ध नहिं जाइत छथि।

हिमालय ऋषि लोकनिक निवेदन कैलाक अनन्तर मंगलसँ अलंकृत कन्याकेँ लैकै कहलथीन्ह ऐ वत्से, एम्हर आउ, अहाँ शिवजीक हेतु भिक्षा कल्पित भेलछी, एहिठाम याचक मुनि लोकनि छथि. तैंहेतु हम गृहस्थक फलकेँ पाओल। एतेक कथा कन्याकेँ कहि हिमालय ऋषि लोकनिसँ कहल ई 'त्रिलोचन-वधू' अपने लोकनिकेँ नमस्कार करैत छथि। ऋषि लोकनि हिमालयक वाक्यकेँ अभिनन्दित करैत पार्वतीकेँ आशीर्वादसँ अभिवर्धित कैलन्हि।

एहि कथोपकथन में कतेक सौष्ठव अछि, ऋषि लोकनि जाहि कार्यक हेतु गेल छथि ताहि प्रस्तावकेँ केहेन सुन्दर जकाँ रखैत छथि जकर फल ई होइत छन्हि जे तत्क्षणात् हिमालय हुनका लोकनिक प्रस्तावसँ सहमत भैजाइत छथि।

हिमालय अकस्मात् संप्राप्त ऋषि लोकनिक दर्शनसँ अपनाकेँ कतेक पुण्यवान् मानैत छथि। हिमालयक विनय केहेन सरल छन्हि। सब कथा सत्यसँ केहेन ओतप्रोत अछि। यैह विनय आलापक सभ्यता थिक।

कुमारसंभव सँ दोसर दृष्टान्त :—

पार्वतीजी तपस्या कैरहल छथि, ताहि समय में ब्रह्मतेजसँ युक्त मृगचर्म और जटा कैं धारण कैने प्रौढ़वचन एक ब्रह्मचारी तपोवन में प्रवेश कैलन्हि। अभ्यागतक सत्कार कैनिहारि पार्वती बड़े आदर सँ हुनक अभ्यर्थना कैलन्हि। सबमें समान बुद्धि रखनिहार लोकक आदर यद्यपि सबक हेतु तुल्य रहैत छन्हि तथापि व्यक्ति विशेष में विशेष आदर होइतहि छन्हि।

ओ ब्रह्मचारी समुचित सत्कार कैं प्राप्तकै तथा किछु क्षण में अपन श्रम कैं दूरकै पार्वतीजी सँ कहै लगलथीन्ह।

अहाँक क्रियाक संपादनक हेतु अहाँकैं कुश और समिधा सुलभता सँ भेटैत अछि तँ? अहाँकैं स्नानक योग्य जल तँ भेटैत अछि? अहाँ अपन शक्ति सँ अपन तपस्या में लागल तँ रहैतछी? किऐक तँ धर्म साधनक हेतु मुख्य वस्तु शरीरे थिक। ई लता सब जे अहींक जल-सिञ्चन सँ परिवर्धित भेल अछि जकर नवीन लाल पल्लव अहाँक ओष्ठक सादृश्यकैं प्राप्त कै रहल अछि। स्नेह-पूर्वक हाथ में राखल कुशक खैनिहार हरिण में अहाँक मन प्रसन्न तँ रहैत अछि? जे हरिण अपन चञ्चल नेत्र सँ अहाँक नेत्रक सादृश्य करै चाहैत अछि। अये पार्वति? ई जे कहल जाइत अछि जे सौम्य आकृति पापवृत्तिक निमित्त नहिं होइत अछि से यथार्थ थिक किऐकतँ अहाँक शील तपस्वी लोकनिहुक हेतु उपदेशक विषय भेल अछि। सप्तर्षिक पुष्पोपहारहु कैं हँसनिहार अन्तरिक्ष सँ ऐनिहार गङ्गाक जलहु सँ ई हिमालय ततेक पवित्र नहिं भेल छथि जतेक अहाँक विशुद्ध आचरणसँ। आइ हमरा निश्चय भैगेल अछि जे त्रिवर्ग—अर्थ धर्म, काम में सब सँ श्रेष्ठ धर्म थिक

तैंहेतु अहाँ अर्थ और कामकैं छोड़िकै केवल धर्मक अवलम्बन कैल अछि। अहाँ जे एतेक हमर सत्कार कैल अछि ताहिसँ हमरा अपन आत्मीय बूझू; कारण जे ई कहल जाइत अछि जे सज्जन लोकनि जनिक संग सात वाक्य क आलाप करैत छथि तनिक मित्र भै जाइत छथि। यद्यपि ब्राह्मण होएवाक कारणैं हम अत्यन्त चञ्चलछी तथापि परम क्षमाशीला अहाँ सँ एक जिज्ञासा अछि यदि गोप्य नहिं हो तँ कृपया उत्तर देलजाय। अहाँ तँ हिरण्यगर्भक कुलमें जन्म लेनेछी। तीनू लोकक सौन्दर्य अहाँक शरीरमें अछि और ऐश्वर्यक तँ कथेकी, और ई नवीन अवस्था अछि एहिसँ बढ़िकै तपस्याक फल होइतहि की छैक? कोनो दुःसह अनिष्ट भेलासँ बुद्धिमती स्त्री एहेन तपश्चरण कैओ सकैत छथि परन्तु विचार पूर्वक देखला पर अहाँक विषय में एहेन कोनो कारण एतादृश तपस्याक हेतु बोध नहिं होइछ। अहाँक आकृति एहेन अछि जाहिसँ ई कल्पना नहिं कैल जासकैछ जे अहाँ कोनो तिरस्कार जन्य शोक सँ ई कार्य कैरहलछी, पिताक घर में अपमानक संभावने कोन? परधर्षण अहाँक विषय में नहि भै सकैछ कारणजे सर्पक फणा पर स्थित रत्नक हेतु हाथ कैं के बढ़ाय सकैत अछि? अहाँ युवावस्थहि में आभरण कैं उतारि वृद्ध कैं शोभा देनिहार वल्कलक धारण किऐक कैल अछि? जाहि राति में तारागण और चन्द्रमा स्पष्ट देदीप्यमान रहैत छथि ताहि में प्रातःकालक कल्पना किऐक करब? यदि स्वर्गक इच्छासँ अहाँ ई तपस्या करैत होइ तँ से व्यर्थ थिक कारण जे अहाँक पिताक स्थाने देवभूमि थिक, हँ पति-प्राप्तिक हेतु यदि अहाँ ई तपस्या करैत होइ तँ से हो व्यर्थ थिक कारणजे रत्न नहिं ककरहु तकने फिरैत अछि किन्तु वैह ताकल जाइत अछि।

अहाँक सोष्म निःश्वास वायुसँ वरार्थित्व सूचित भलेहु पर मनमें संशय रहिए गेल अछि किऐक तँ अहाँक प्रार्थनीय केओ देखल नहि जाइत छथि जैंहेतु अहाँक चाहला पर कोनो वस्तु दुर्लभ नहिं अछि। हमरा बूझि पड़ैछ जे अहाँक अभीष्ट केओ कठिन युवा छथि जे अहाँक कपोल पर खसैत सूखल धानक शीश जकाँ अहाँक उपेक्षा कै रहल छथि (अर्थात् अहाँक एतेक कष्ट सहन कै देखि रहल छथि)। चान्द्रायणादि व्रतसँ अत्यन्त कृशाङ्गी सूर्यतेजसँ श्यामताकैं प्राप्त दिनमें चन्द्रकलाक सदृश स्थित अहाँकैं देखिकै के एहेन सहृदय व्यक्ति होएत जकर मन दुःखित नहिं हेतैक ? हम ताहि व्यक्तिकैं सौभाग्यसँ वञ्चित बुझैतछी जे अपनाकै अहाँक चतुर अवलोकनक समक्ष उपस्थित नहिं करैत छथि। अये गौरि, अहाँ कतेक समय धरि एहि कठिन तपस्याकैं करब ? हमहु अपन ब्रह्मचर्यावस्थामें किछु तपस्याक अर्जन कैल अछि ताहि तपहुक आधा फलसँ अहाँ अपन अभीष्ट वरक प्राप्ति करू। हमहु ताहि वरकैं जानवाक इच्छा करैत छी।

ताहि ब्रह्मचारीक एहि रूपैं कहला पर पार्वतीजी अपन मनोरथकैं स्वयं नहिं कहि सकली किन्तु पार्श्व में स्थित सखीकैं आँखिक द्वारा उत्तर देवाक हेतु इशारा कैलथिन्ह। हुनक सखी ओहि ब्रह्मचारीसँ कहलथीन्ह हे साधो ? यदि अहाँकै एहि विषयकैं जानवाक हेतु कुतूहल अछि तँ सुनू ; जाहि हेतु हमर ई सखी एहि कठिन तपस्याकैं कैरहल छथि। ई हमर सखी अनेक संपत्तिवान् इन्द्रादिक देवता और दिशाधीशक अपमान कै, कन्दर्पकैं दग्ध करवाक कारण सौन्दर्य गुणसँ आकृष्ट नहिं होएवाक योग्य शिवजीकैं पति बनवै चाहैत छथि। जखन अपने विश्वव्यापक छी तखन हिनक अभिप्रायहुकैं बुझितहि

होएवैन्हि। जखन ई सखी ताहि जगदीशकैं प्राप्त करवाक हेतु कोनो दोसर उपायकैं नहिं देखलन्हि तखन पिताक आज्ञा लै हमरा लोकनिक संग तपस्याक हेतु एहि वन में ऐलीह। जाहि वृक्ष सबकैं सखी रोपने छ्लीह, तपस्याक साक्षी स्वरूप ताहि वृक्ष सबमें फल आबि गेल छैक किन्तु चन्द्रमौलि संबंधी जे हमर सखीक मनोरथ छन्हि तकर अङ्कुरो नहिं देखैत छिऐक। ई नहिं बूझि पड़ैछ जे प्रार्थना कैलहु पर दुर्लभ ओ शङ्कर तपस्याक कारणैं दुर्बलाङ्गी एहि हमर सखीक उपर वर्षाक बिना सूखल कृषि पर इन्द्र जकाँ कहिआ कृपा करताह।

पार्वतीक हृदयकैं जननिहारि सखी जखन एहि प्रकारैं ताहि ब्रह्मचारीकैं कहलथीन्ह तखन ओ ब्रह्मचारी पार्वतीसँ पुछलथीन्ह जे कि ई विषय सत्य थिक वा परिहास मात्र? ताहि पर जप करैत पार्वती जपमालाकैं समाप्तकै बड़ कष्टसँ थोड़ शब्दमें कहलथीन्ह—हे वेद-विदांवर? अपने जे किछु सुनल अछि से सत्य थिक, ई जन शिव प्राप्तिरूप उच्चपदकैं प्राप्त करै चाहैत अछि, ई तपस्या हुनके प्राप्तिक निमित्त अछि किऐक तँ मनोरथक कतहु अन्त नहिं छैक।

एहि प्रश्नोत्तरमें कतेक विशेषता अछि!

बृहदारण्यकोपनिषदमें याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी-संवाद

याज्ञवल्क्य ऋषिकैं दूइ स्त्री छलथीन्ह मैत्रेयी और कात्यायनी। ताहिमें मैत्रेयी विशेष बुद्धिवाली ब्रह्मवादिनी छलीह और कात्यायनी गृह-व्यवहारमें चतुर रहथि।

जखन याज्ञवल्क्य गृहस्थाश्रमसँ हँटिकै संन्यास ग्रहणक इच्छा कैलन्हि तखन ओ मैत्रेयीसँ कहलथीन्ह जे हम संन्यास ग्रहण करै चाहैतछी तैं अहाँ हमरा तदर्थ विचार दिय और अहाँ और कात्यायनी

में आधा-आधा संपत्ति बाँटि दैतछी।

मैत्रेयी कहलथिन्ह जे धनसँ पूर्ण यदि समस्त पृथिवी हमरा देल जायतँ की हम ताहिसँ अमृतत्वकै प्राप्त करब? याज्ञवल्क्य उत्तर देलथीन्ह, कदापि नहिं, जाहिरूपैं उपकरणवाला लोकक जीवन व्यतीत होइत छैक ताही प्रकारैं अहौंक जीवन व्यतीत होएत, धनसँ अमृतत्व पैबाक आशा नहिं छैक।

मैत्रेयी कहलथीन्ह जे जाहि धनसँ अमृतत्वक प्राप्ति नहिं कै सकैतछी ताहि धनसँ की प्रयोजन अपने कृपाकै हमरा अमृतत्वक ज्ञान दिय।

याज्ञवल्क्य कहलथीन्ह—अहाँ हमर स्त्री भैकै सर्वदा हमर संग प्रिय आचरण कैनेछी तैंहेतु अहाँसँ संतुष्ट भै हम अमृतत्वक व्याख्यान करैतछी, अहाँ ध्यान दैकै सुनू। ओ कहै लगलथिन्ह—

पतिक हेतु पति प्रिय नहिं होइत छैक, अपने हितक हेतु पति प्रिय होइत छैक।

स्त्रीक हेतु स्त्री प्रिया नहिं होइत छैक अपने प्रयोजनक निमित्त स्त्री प्रिया होइत छैक।

पुत्रक कामनाक हेतु पुत्र प्रिय नहि होइत छैक किन्तु अपने कामनाक हेतु पुत्र प्रिय होइत छैक।

धनक प्रयोजनक हेतु धन प्रिय नहिं होइत छैक किन्तु अपने प्रयोजनक हेतु धन प्रिय होइत छैक।

पशुक प्रयोजनक हेतु पशु प्रिय नहिं होइत छैक किन्तु अपने प्रयोजनक हेतु पशु प्रिय होइत छैक।

ब्रह्मक हेतु ब्रह्म प्रिय नहिं होइत छथि किन्तु अपने प्रयोजनक

निमित्त ब्रह्म प्रिय होइत छथि ।

क्षत्र (क्षात्रधर्म) क्षत्रक हेतु प्रिय नहिं होइत छथि किन्तु अपने निमित्त प्रिय होइत छथि ।

लोकक कामनाक हेतु लोक प्रिय नहिं होइत छथि किन्तु अपने हितक हेतु लोक प्रिय होइत छथि ।

देवताक हेतु देवता प्रिय नहिं होइत छथि किन्तु अपने निमित्त देवता प्रिय होइत छथि ।

वेदक हेतु वेद प्रिय नहिं होइत छथि किन्तु अपने हेतु वेद प्रिय होइत छथि ।

प्राणीक निमित्त प्राणी प्रिय नहिं होइत छथि किन्तु अपने निमित्त प्राणी प्रिय होइत छथि ।

सवक निमित्त सव प्रिय नहिं होइत छथि किन्तु अपने निमित्त सव प्रिय होइत छथि ।

आत्माकैं देखवाक थिक, सुनवाक थिक, विचारवाक थिक और ध्यान करवाक थिक । हे मैत्रेयि ! आत्माकैं देखने, सुनने, विचारने और जानलासँ ई सव विदित भै जाइत छैक ।

हे मैत्रेयि ! ई ब्रह्म, ई क्षत्र, ई लोक, ई देवता सव, ई वेद और ई प्राणी सव आत्मा थिक थे । जे ब्रह्मकैं आत्मासँ भिन्न बुझैत छथि तनिक उपर ब्रह्म अप्रसन्न भै जाइत छथीन्ह, जे क्षत्रकैं आत्मासँ भिन्न बुझैत छथि हुनकासँ क्षत्र अप्रसन्न भै जाइत छथीन्ह । एही रूपैं लोक, देव, वेद, भूत सव हुनकासँ अप्रसन्न भै जाइत थछीन्ह जे सवसँ भिन्न आत्माकैं बुझैत छथि ।

श्रीकृष्णचन्द्र महाराजक प्रति कुमारी रुक्मिणीक संवाद

हे भुवनसुन्दर ! अपनेक गुणकैं सुनिकै जे गुण सुननिहारक कानमें प्रवेश कैलापर तकर शरीरक तापकें नष्ट कै दैत छैक; तथा अपनेक सुन्दर स्वरूपकैं देखनिहार जे व्यक्ति छथि जनिकाँ अखिलार्थक लाभ होइत छन्हि एहेन गुणविशिष्ट सुन्दर पुरुषक प्रति, हे अच्युत, हमर चित्त लज्जाकैं त्याग कैकै प्रवेश करैत अछि (लज्जाक त्याग एहि हेतु जे ओ स्वयं अपनहि पतिक वरण करैत छथि) ।

हे मुकुन्द ! हे पुरुषसिंह ! के एहेन धैर्यवाली तथा पैघकुलवाली कन्या अछि जे कुल, शील, स्वरूप, विद्या, वयस, धन, धाम सबसँ तुल्य अपने सदृश तथा मनुष्यलोकक मनोऽभिराम अपनेकैं पति नहिं वरण करत ? अर्थात् सब प्रकारें सबगुणैं उत्तम कन्यासँ वरण करबाक योग्य वर अपनेछी ।

हे अम्बुजाक्ष ! (कमल सदृश नेत्रवाला हे कृष्ण) तैंहेतु हम अपनेकैं पति वरण कैल अछि और हे अङ्ग, आब अपनेहुक ई कर्त्तव्य थिक जे जायारूप हमरामें अपनाकैं समर्पित करी । जैंरूपैं सिंहक अंशकैं शृगालकै लेब समुचित नहिं थिकैक ताही तरहैं शिशुपाल वीर अपनेक अंशकैं नहिं ग्रहण करै ।

हे गदाग्रज ! यदि हम यज्ञ, दान, नियम, व्रत, देव-ब्राह्मण-गुरुक पूजासँ परमेश्वर भगवान्क आराधन कैल अछि तँ ताहि परमेश्वरक कृपासँ अपने एतै आबि हमर पाणिग्रहण कैल जाय जाहिसँ शिशुपालादि आन केओ हमर पाणिग्रहण नहिं करै ।

हे अजित ? कालिह भेनिहार जे विवाह छैक ताहिमें गुप्तरूपैं अपने विदर्भनगरीमें आबि शिशुपाल मगधेन्द्रक बलकैं नष्टकै वीर्यशुल्का

बलक द्वारा ग्रहणीया हमराकैं विवाहक विधिएँ ग्रहण कैल जाय।

यदि अपनेकैं ई संशय हो जे अन्तःपुरमें रहनिहारि स्त्रीवर्गकैं बिना नाश कैने कोना अहाँक सङ्ग विवाह होएत तँ तकर उपाय हम कहैत छी। विवाहसँ पूर्वहि दिनमें कुल-देवियात्रा होइत छैक जाहिमें कुल-वधू श्रीगिरिजाक दर्शनक हेतु बाहर जाइत छथि। (ताही परिस्थितिमें अपने हमर ग्रहण कैल जाय)।

आत्मान्धकारक नाशक हेतु महादेवजकाँ पैघो व्यक्ति जनिक कमलसदृश पैरक रजक स्नान चाहैत छथि, तेहेन अपनेक प्रसाद यदि, हे अम्बुजाक्ष, हम लाभ नहिं करव तखन व्रतसँ शरीरकैं कृश बनाय हम प्राणत्याग करव जाहिसँ सैओ जन्मक अनन्तर हम अपनेकैं प्राप्त करी।

ई सन्देश भगवान्‌कैं एक ब्राह्मणक द्वारा प्राप्त भेलन्हि। एहि संवादक विशेषता ई अछि जे युक्ति पर युक्ति केहेन सुन्दर जकाँ देल गेल अछि और केहेन आकर्षक भाषामें सन्देश कहल गेल अछि।

केहेन सुन्दर आलापक ई भूमिका अछि!